VIDYA ICS

We Nurture Dreams...

मध्यप्रदेश का इतिहास

हिन्दी माध्यम

2024-25

CONTACT:

942-574-4877

www.vidyaics.com

icsvidya@gmail.com

अनुक्रमणिका (Index)

म.प्र. में प्राचीन इतिहास

क्रमांक	टॉपिक	पृष्ठ
1	सामान्य परिचय	1-3
2	म.प्र. में पुरापाषाण + मध्यपाषाण काल	4-5
3	म.प्र. में नवपाषाण + ताम्रपाषाण + महाकाव्य काल	6-7
4	म.प्र. में उत्तरवैदिक काल + पौराणिक कालखण्ड	7-8
5	म.प्र. में जनपद काल	9-
6	म.प्र. में रामायण काल + महाभारत काल	9-10
7	म.प्र. में महाजनपद काल	10
8	मध्यप्रदेश में मौर्य काल	11-12
9	म.प्र. में मौर्योत्तरकाल (शुंग + सातवाहन)	13-14
10	म. प्र. में गुप्त काल	15-17
11	म. प्र. में कुषाण + शक	17-18
12	म.प्र. में गुप्तोत्तर काल (वर्धन वंश+चालुक्य वंश)	18-19
13	म.प्र. में गुर्जर प्रतिहार/राष्ट्रकूट	19-20
14	म.प्र. में बुंदेलखण्ड का चंदेल वंश	21-24
15	म.प्र. में मालवा का परमार वंश	24-27
16	म.प्र. में कल्चुरि राजवंश	28-33
17	म.प्र. में प्राचीन काल के अन्य राजवंश	34-36

म.प्र. में मध्यकालीन इतिहास

18	सल्तनत काल में मध्यप्रदेश	37-38
19	मालवा में गौरी वंश	39
20	मालवा में खिलजी वंश	40-42
21	मुगलकाल में मध्यप्रदेश	43-44
22	निमाड़ का फारूखी राजवंश	45-46
23	तोमर राजवंश	47-48
24	बघेलखण्ड रियासत	49-54
25	बुंदेलखण्ड की रियासतें	55-61
26	गोंडवाना रियासत	62-68
27	भोपाल रियासत	69-75
28	होल्कर रियासत	76-81
29	सिंधिया रियासत	82-86

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

म.प्र. में आधुनिक इतिहास

30	बुंदेला विद्रोह	**87-88**
31	म.प्र. में 1857 का विद्रोह	**89-91**
32	म.प्र. में स्वदेशी + होमरूल + खिलाफत आंदोलन	**92**
33	म.प्र. में असहयोग आंदोलन	**93**
34	म.प्र. में झण्डा सत्याग्रह	**94**
35	म.प्र. में सविनय अवज्ञा आंदोलन	**94-95**
36	चरण पादुका नरसंहार + भारत छोड़ो आंदोलन	**96**
37	पंजाब मेल हत्याकांड	**97**
38	म.प्र. में अन्य घटनाक्रम	**98-99**
39	मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता सेनानी	**99-104**
40	स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका	**105**
41	स्वतंत्रता आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका	**106**

VIDYA IAS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

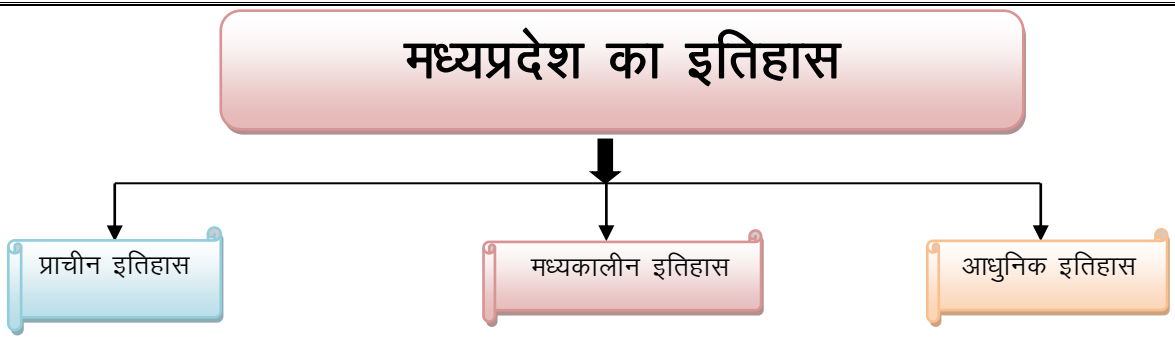

मध्यप्रदेश का इतिहास

- प्राचीन इतिहास
- मध्यकालीन इतिहास
- आधुनिक इतिहास

मध्यप्रदेश का प्राचीन इतिहास

- मध्य प्रदेश का इतिहास एवं पुरातन संस्कृति **पाषाणयुगीन** है इस समय मानव पशुओं की भांति जंगलों, गुफाओं एवं पेड़ों पर अपना जीवन व्यतीत करता था।
- इस काल के साक्ष्य हमें **पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक स्थलों** से प्राप्त होते हैं।
- प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक के इतिहास को हम **लिपि-लेखन कला के आधार पर** तीन भागों में बांट सकते हैं

प्रागैतिहासिक काल

- इस समय लिपि, लेखन कला का विकास नहीं हुआ था।
- अतः इस काल की जानकारी केवल पुरातात्विक स्त्रोतों से प्राप्त होती है।
- उदा = पुरापाषाण काल से महापाषाण काल तक का इतिहास

आद्यऐतिहासिक काल

- लिपि, लेखन कला प्रचलित थी लेकिन लिपि अपठनीय थी।
- अतः इस काल की जानकारी केवल पुरातात्विक स्त्रोतों से प्राप्त होती है।
- उदा
  - हड़प्पा काल
  - वैदिक काल

ऐतिहासिक काल

- इस समय लिपि, लेखन कला थी एवं उसे पढ़ा भी जा सका है।
- अतः इस काल की जानकारी पुरातात्विक + साहित्यिक स्त्रोतों से प्राप्त होती है।
- उदा = महाकाव्यकाल से लेकर आगे का इतिहास

मध्यप्रदेश में प्रागैतिहासिक काल संबंधी विवरण

- यह वह काल है जब लिपि लेखन कला का विकास नहीं हुआ था।
- अतः इस समय की जानकारी का **सर्वप्रमुख स्त्रोत पुरातात्विक साक्ष्य** ही हैं।
- इसे **पाषाणयुग (प्रस्तर युग)** भी कहा जाता है।
- प्रागैतिहासिक काल का जनक **डॉ प्राइमरोज** को माना जाता है।
- प्रागैतिहासिक युगीन बस्तियों के साथ संपूर्ण मध्यप्रदेश में विभिन्न स्थानों से प्राप्त होते हैं।
- इस काल के प्रमुख स्थल भीमबैठिका (रायसेन), आदमगढ़ (होशंगाबाद), खेड़ीनामा (होशंगाबाद) हैं।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

प्रागैतिहासिक काल का वर्गीकरण

पुरापाषाण काल | मध्यपाषाणकाल | नवपाषाण काल | ताम्र पाषाणकाल | महा पाषाणकाल

मध्यप्रदेश में पुरापाषाण काल

- **समय काल** = 10 लाख से 10000 BC (ईस्वी पूर्व)
- भारत में प्रथम साक्ष्य **1863** में तमिलनाडु के **पल्लवरम** में **रॉबर्ट ब्रुसफुट** ने प्राप्त किए थे।
- इस समय जीवन निर्वाह शिकार आधारित था। अतः इस काल को **आखेटक एवं खाद्य संग्राहक काल** भी कहा जाता है।
- इस काल का सर्वप्रमुख स्थल **नर्मदा घाटी + रायसेन** में अवस्थित **भीमबैठिका** है।
- पुरापाषाण काल को **औजारों की तकनीक के आधार पर** तीन भागों में विभक्त किया गया है –

निम्न पुरापाषाण काल | मध्य पुरापाषाण काल | उच्च पुरापाषाण काल

A. निम्न पुरापाषाण काल

- **समय काल** = 10 लाख से 1 लाख BC (ईस्वी पूर्व)
- इस समय **जनजातीय स्वरूप की संस्कृति** थी।
- इस समय का सर्वप्रमुख मानव **निएंडरथल** था।
- इस समय मानव गुफाओं एवं कंदराओं में निवास किया करता था।
- इस समय शिकार एवं मांस भक्षण भोजन प्राप्ति के साधन थे ।
- हेण्डएक्स (हस्तकुठार) एवं विदरणी इस समय के प्रमुख औजार थे।
- होशंगाबाद एवं नरसिंहपुर के मध्य की **नर्मदा घाटी** + नरसिंहपुर के **भुतरा** + **मंदसौर** + होशंगाबाद के **महादेव एवं पिपरिया** क्षेत्र + **चंबल घाटी** से इस काल के पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

B. मध्य पाषाण काल

- **समय काल** = 1 लाख से 40000 BC (ईस्वी पूर्व)
- इस समय भी **संस्कृति का स्वरूप जनजातीय** ही था।
- इस समय का सर्वप्रमुख मानव **होमो इरेक्टस** था।
- इस समय भी भोजन शिकार एवं मांस भक्षण पर आधारित था।
- मानव इस समय भी गुफाओं एवं कंदराओं में निवासरत था।
- **प्रमुख स्थल** = मण्डला + सोनघाटी + मंदसौर + नाहरगढ़ + सीहोर + भीमबैठिका

C. उच्च पुरापाषाण काल

- **समय काल** = 40 हजार से 10000 BC (ईस्वी पूर्व)
- इस समय की सर्वप्रमुख मानव प्रजाति **होमो सेपियंस** थी।
- संस्कृति इस काल में भी **जनजातीय स्वरूप** में थी।
- इस समय भी शिकार व मांस भक्षण प्रचलन में था।

मप्र में पुरापाषाण काल से संबंधित उत्खननकर्ता

- **सोन घाटी क्षेत्र**
  - निसार अहमद
  - जी. आर. शर्मा
- **चंबल घाटी क्षेत्र**
  - विष्णु वाकणकर
  - एचवी त्रिवेदी
  - ए.पी. खत्री
  - एस.के.श्रीवास्तव
- **नर्मदा घाटी क्षेत्र**
  - आर. वी. जोशी
  - एच डी सांकलिया
- **अन्य उत्खनन कर्ता**
  - अरुण सोनाकिया
  - बी.बी. लाल (ग्वालियर)
  - सुपेकर महोदय (मण्डला)

VIDYA IAS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **आग की खोज** इस काल में हो चुकी थी लेकिन उस पर नियंत्रण बाद के कालों में हुआ।
- **सोन घाटी** से इसके पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

MP में पुरापाषाण काल से संबंधित तथ्य

- **अरुण सोनकिया** ने 1982 में नर्मदा घाटी क्षेत्र के सीहोर में अवस्थित **हथनौरा** नामक स्थान पर उत्खनन कराया एवं **नर्मदेंसिस मानव + विलुप्त हाथी (स्टेगाडॉन)** की खोपडी के साक्ष्य प्राप्त किए।
- **बी.बी. लाल** ने ग्वालियर के निकट उत्खनन कार्य करवाकर अनेक पुरापाषाणकालीन औजारों की प्राप्ति की।
- **निसार अहमद** ने सोन घाटी में उत्खनन कराया एवं अनेक पुरापाषाणकालीन औजारों जैसे – स्क्रेपर्स, प्लेक्स, हस्तकुठार की प्राप्ति की।
- जबलपुर के निकट **भेड़ाघाट** से भी अनेक पुरापाषाणकालीन औजार मिले हैं।
- **नर्मदा घाटी से प्राप्त साक्ष्य**
  - स्तनधारी पशुओं के अवशेष के साक्ष्य।
  - होशंगाबाद में अवस्थित महादेव पहाड़ी के निकट **पिपरिया** में **H.D. सांकलिया व सुपेकर महोदय** ने उत्खनन करवाया एवं अनेक पुरापाषाणकालीन औजारों की प्राप्ति की।
- **नरसिंहपुर से प्राप्त साक्ष्य**
  - नरसिंहपुर के **भुतरा** से पाषाण काल के हस्तकुठार, खंडक, गड़ासे के साक्ष्य प्राप्त।
  - करेली में शक्कर नदी के किनारे प्राचीन शैलचित्रों की प्राप्ति।

भीमबैठिका

- रायसेन के **अब्दुल्लागंज** में अवस्थित पुरापाषाणकालीन स्थल।
- **उत्खननकर्ता**=वी.एस. वाकणकर (1957)
- **बी.बी. मिश्रा** ने भी यहां उत्खनन कार्य करवाया है।
- 1962 में यहां मानव शैलाश्रयों की खोज हई।
- **साक्ष्य**
  - गुफाओं में पुरापाषाणकालीन मानव के निवास के साक्ष्य।
  - हस्तकुठार,विदरणी,एल्यूशियन उपकरणों की प्राप्ति।

मध्यप्रदेश में मध्यपाषाण काल

- **समय काल** = 10000–7000 BC (ईस्वी पूर्व)
- इस समय उपकरण अत्यंत छोटे हुआ करते थे जिन्हें **माइक्रोलिथ** कहा गया है।
- 1867 में **जी.एल. कार्लाइल** ने **विंध्य क्षेत्र** में **लघु पाषाण** उपकरणों की प्राप्ति की। यह म.प्र. में मध्यपाषाण काल का **प्रथम साक्ष्य** माना जाता है।
- यह पुरापाषाण एवं नवपाषाण के मध्य का **संक्रमण काल** था।
- इस काल में जीवन निर्वाह **पशुपालन** पर आधारित हो गया।
- अनेक मौसमी संबंधी परिवर्तनों के कारण मानव एवं जीवों में भी अनेक परिवर्तन हुए।
- **साक्ष्य**
  - खेड़ीनामा (होशंगाबाद)
  - आदमगढ़ (होशंगाबाद)
  - भीमबैठिका (रायसेन)
  - होशंगाबाद के पचमढ़ी में मध्यपाषाण युग के 2 शैलाश्रय प्राप्त हुए हैं।
    - जम्मूद्वीप
    - डोरथी द्वीप

आदमगढ़

- होशंगाबाद में अवस्थित मध्यपाषाणकालीन स्थल।
- उत्खननकर्ता=**आर.व्ही. जाशी**
- यहां से **मानव के साथ कुत्ते** को दफनाये जाने के साक्ष्य मिले हैं।
- राजस्थान के **बागोर** की तरह भारत में **पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्यों** की प्राप्ति।

मध्यप्रदेश में नवपाषाण काल

- **समय काल** = 7000 से 4000 BC (ईस्वी पूर्व)

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- इस काल में जीवन **निर्वाह कृषि आधारित** हो गया।
- **उपकरण** = उपकरण छोटे और नुकीले होते थे।
- उपकरण निर्माण में प्रस्तर सींग, हड्डी एवं हाथी दांत का प्रयोग होता था।
- उपकरणों में **हैंडएक्स** का भी प्रयोग मिलता है।
- **इस काल में निम्न परिवर्तन दिखते हैं** –
  - आग पर नियंत्रण स्थापित हुआ।
  - कृषि कार्य एवं स्थाई जीवन की शुरुआत हुई।
  - पके मांस का भोजन के रूप में प्रयोग आरंभ हुआ जिसके साक्ष्य हमें भोपाल के निकट **बैरागढ़** से मिलते हैं।
- **प्रमुख औजार** = सेल्ट, कुल्हाड़ी, घन, बसूला, रचक, ओक इत्यादि।

नवपाषाणकालीन प्रमुख स्थल

- ऐरण (सागर)
- जैतवारा
- भेड़ाघाट
- तिलवारा घाट
- लमहेटा घाट
- हटा (दमोह)
- मामा भांजा शैलाश्रय (पचमढ़ी)
- सोहन नदी घाटी
- बनास नदी घाटी
- संग्रामपुर घाटी दमोह
- भोपाल में नेवरी गुफा + श्यामला हिल्स + बैरागढ़

नवपाषाण काल के बाद मध्य प्रदेश का इतिहास

- ताम्रपाषाणकाल (उत्तर भारत में)
- महापाषाणकाल (दक्षिण भारत में)

मध्यप्रदेश में ताम्रपाषाण काल

- इस काल के अधिकांश साक्ष्य उत्तर भारत से मिले हैं जिसमें मध्यप्रदेश भी शामिल है।
- इस काल में मानव द्वारा **तांबा, पत्थर व हड्डी** के उपकरणों के उपयोग के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- मध्यप्रदेश की प्रमुख ताम्रपाषाणिक बस्तियां निम्न हैं –

कायथा

- **परिचय** = उज्जैन के **तराना तहसील** में **छोटी काली सिंध नदी** के किनारे अवस्थित ताम्रपाषाणिक स्थल।
- **खोज** = वी.एस. वाकणकर (1964)
- **विशेष** = इसे मध्य प्रदेश की प्रथम ताम्र पाषाण बस्ती माना जाता है।
- **साक्ष्य** = तांबे की चूड़ी + बर्तन + कुल्हाड़ी + तांबे व पत्थर से निर्मित छैनी ।

अन्य ताम्रपाषाणिक स्थल

- डांगवाला (उज्जैन)
- आवरा (मंदसौर)
- खेड़ीनामा (होशंगाबाद)
- खलघाट (धार)
- इंदरगढ़ (मंदसौर)
- कसरावद (खरगोन)
- आजाद नगर (इंदौर)
- डोंगरिया (बालाघाट)

नवदाटोली

- यह खरगोन के **महेश्वर** में स्थित ताम्रपाषाणिक स्थल है।
- **उत्खननकर्ता** = एच.डी. सांकलिया (हंसमुख धीरजलाल सांकलिया)
- यहां से ताम्र उपकरण व झोपड़ीनुमा मिट्टी के घरों के साक्ष्य मिले हैं।

नागदा

- यह उज्जैन में **चंबल** के किनारे अवस्थित ताम्रपाषाणिक स्थल है।
- यहां **अमृत पांडेय** द्वारा उत्खनन कार्य कराया गया है।

ऐरण

- यह सागर में **बीना नदी** के किनारे अवस्थित ताम्रपाषाणिक स्थल है।
- इसका प्राचीन नाम **ऐरिकेण** था।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **उत्खनन कार्य** = कृष्ण दत्त बाजपेई
- **साक्ष्य** = दो कालों के मुख्यतः साक्ष्य

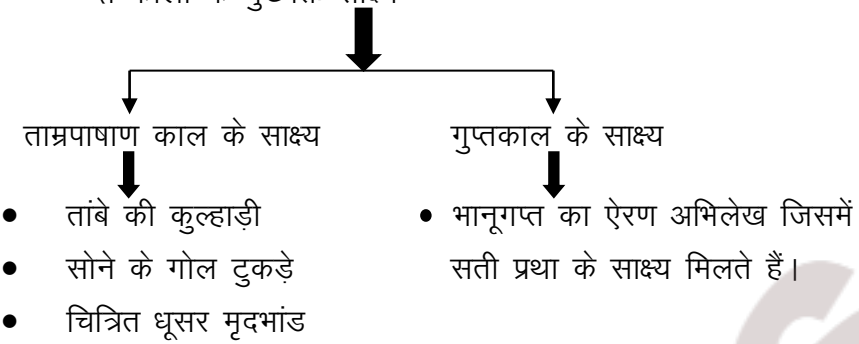

बेसनगर

- इसका प्राचीन नाम भेलसा/बेसनगर था।
- यह स्थल **विदिशा में बेतवा नदी** के किनारे अवस्थित है।
- **खोजकर्ता** = **डी. आर. भंडारकर** लेकिन मुख्य उत्खनन **एच. एच. लेक** ने कराया।
- इस स्थल से नवपाषाणकाल + ताम्रपाषाण काल से लेकर मौर्योत्तर काल तक के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

आवरा

- यह **मंदसौर** में अवस्थित ताम्रपाषाणिक स्थल है।
- यहां से ताम्रपाषाणिक सामग्री व रोम सभ्यता से संपर्क के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

मध्यप्रदेश में महाकाव्य काल

- इस काल के अधिकांश साक्ष्य दक्षिण भारत से प्राप्त होते हैं।
- इस काल का नामकरण कब्रों पर बड़े–बड़े पत्थर रखे जाने के कारण हुआ।
- इन कब्रों में लोहे के औजार एवं घोड़े के कंकाल के भी साथ प्राप्त हुए हैं।
- इस काल में मानव **धूसर लौह उपकरणों** का प्रयोग करता था।
- मध्य प्रदेश में इस काल की बहुत कम साक्ष्य मिले हैं जो निम्न स्थानों से प्राप्त हुए –
  ग्वालियर, भिंड, रीवा, सिवनी, मुरैना।

मध्य प्रदेश में आद्य ऐतिहासिक काल

- इस काल में लिपि-लेखन कला का तो विकास था लेकिन **लिपि अपठनीय** थी।
- अतः इस काल की जानकारी का प्रमुख स्त्रोत **पुरातात्विक साक्ष्य** ही हैं।
- **उदाहरण**
  - सिंधु घाटी सभ्यता
  - ऋग्वैदिक काल
  - उत्तर वैदिक काल

नोट– सिंधु घाटी सभ्यता एवं ऋग्वैदिक काल के साक्ष्य मध्य प्रदेश के वर्तमान भौगोलिक संदर्भ में प्राप्त नहीं होते हैं।

मध्यप्रदेश में उत्तरवैदिक काल

- **समय काल** = 1000-600 BC (ईस्वी पूर्व)
- उत्तरवैदिक काल में उल्लेख मिलता है कि आर्यों ने विंध्यांचल पर्वत को पार कर लिया था।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- मध्य प्रदेश में इस काल के साक्ष्य हमें उत्तरवैदिक काल के ग्रंथों जैसे – ब्राह्मण ग्रंथों एवं अरण्यकों प्राप्त होते हैं।
- **प्रमुख साक्ष्य**
  - **ऐतरेय ब्राह्मण** में निषादों/अनार्य का उल्लेख हुआ है जो मध्य प्रदेश के घने वनों में निवासरत थे।
  - **महर्षि अगस्त्य** के नेतृत्व में यादवों का एक समूह नदी नर्मदा घाटी में आकर बसा एवं यहीं से मध्यप्रदेश में आर्यों का आगमन प्रारंभ हुआ।
  - **कौशितिकी उपनिषद** में विंध्य पर्वत का उल्लेख **अपरोक्ष्य पर्वत** के रूप में हुआ है।
  - **शतपथ ब्राह्मण** में नर्मदा का उल्लेख रेवोत्तम अर्थात् रेवा नदी के रूप में मिलता है।

पौराणिक काल खण्ड

- वैवस्वत मनु के पुत्र **कारूष** ने **बघेलखण्ड** क्षेत्र में **कारूष वंश** की स्थापना की थी।
- मनु की पुत्री **इला का विवाह सोम** से हुआ था। सोम के पुत्र पुरूरवा ने **बंदेलखण्ड क्षेत्र में ऐल साम्राज्य** का विस्तार किया।
- पुरूरवा के वंशज **ययाति** ने अपने पुत्र **यदु** को म.प्र. में चंबल, बेतवा और शुक्तिमति (केन) नदियों के आसपास का क्षेत्र प्रदान किया। यदु ने यादव वंश की स्थापना की एवं बुंदेलखण्ड क्षेत्र में शासन किया।
- यदु के दो पुत्र हुए। पहला पुत्र **क्रोष्ट्** एवं दूसरा पुत्र **सहस्त्रजित** था।
- क्रोष्ट्ट के वंशज यादव और सहस्त्रजित के वंशज हैहय कहलाए।
- **मांधाता इक्ष्वाकु वंश के राजा** थे। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि इनका विवाह ऐल वंश की राजकुमारी बिंदुमति से हुआ था।
- मांधाता के तीन पुत्र हुए।
  - पुरूकुत्स
  - अंबरीष
  - मुचुकुन्द

> कुछ विद्वान पुरूकुत्स एवं रेवा के पुत्र के रूप में मुचुकुन्द का उल्लेख करते हैं लेकिन हिन्दी ग्रंथ अकादमी में पुरूकुत्स एवं मुचुकुन्द को इक्ष्वाकु वंशीय शासक मांधाता का पुत्र बताया गया है।

- मध्य प्रदेश के उत्तरी क्षेत्र में **गंधर्वों** व दक्षिणी क्षेत्र में **नागों** का शासन था। बाद में इन दोनों के मध्य आपस में संघर्ष भी हुआ।
- **मुचुकुन्द**
  - यह इक्ष्वाकु वंशीय शासक राजा **मांधाता का पुत्र** था।
  - इसने मांधाता के नाम पर **मांधाता नगरी (ओंकारेश्वर)** की स्थापना की।
- परवर्ती काल में **हैहय शासकों** ने इस क्षेत्र में पर्याप्त अभिवृद्धि की।
- **महिष्मत**
  - यह हैहय वंश का शासक था।
  - उल्लेख मिलता है कि इसने इक्ष्वाकु शासक मुचुकुन्द को पराजित किया था।
  - इसने नर्मदा के किनारे **महिष्मति (महेश्वर)** की स्थापना की।

नागों एवं गंधर्वों में संघर्ष

- साम्राज्य विस्तार के क्रम में नाग व गंधर्व आपस में संघर्षरत हुए। नागों ने **अयोध्या के इक्ष्वाकुओं** के सहयोग से गंधर्वों को पराजित किया।
- नागों की इस विजय में इक्ष्वाकु वंशीय राजा के पुत्र **पुरुकुत्स** की महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- नागों ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री **रेवा** का विवाह **पुरूकुत्स** से किया एवं उपहार स्वरूप सतपुड़ा का क्षेत्र इक्ष्वाकुओं को मिला।

- **कार्तवीर्य अर्जुन**
  - यह हैहय वंश का सबसे प्रतापी शासक था।
  - **अन्य नाम** = सहस्त्रबाहु अर्जुन + सहस्त्रअर्जुन
  - **कार्कोट के युद्ध** में इसने **अनूप देश (निमाड़)** के शासक को हराया।
  - इसने रावण को बंदी बनाया था।
- **जयध्वज**
  - यह कार्तवीर्य अर्जुन इसका पुत्र था जिसने उज्जैनी

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

को जीता था।

- जयध्वज के वंशज **वीतिहोत्र, कुंडीकेर** ने वर्तमान **बुंदेलखण्ड** क्षेत्र में शासन किया।

- **राजा अवंती**
  - जय ध्वज का पौत्र था जिसने मालवा क्षेत्र में शासन किया था।
  - इसने उज्जैनी का नाम **अपने नाम पर अवंती** रखा।

अन्य तथ्य

- वैदिक काल में नर्मदा का नाम **रेवा,** चंबल का नाम **चर्मावती** व केन का नाम **शुक्तिमती** मिलता है।
- इक्ष्वाकु वंश के शासक **दंडक** का राज्य म.प्र. के दक्षिणी के घने वनों में विस्तृत था। दण्डक के नाम पर ही यह क्षेत्र बाद में **दण्डकारण्य** कहलाया जो वर्तमान में मूलतः छत्तीसगढ़ के बस्तर में विस्तृत है।
- इसी समय **विदर्भ के शासक भीमरथ** ने अपनी पुत्री दमयन्ति

मध्यप्रदेश में जनपद काल

पुरातात्विक साक्ष्यों से यह जानकारी मिलती है कि उत्तर वैदिक काल के बाद एवं महाजनपद काल से पहले मध्य प्रदेश के प्रमुख जनपद निम्न थे –

क्रमांक	जनपद	वर्तमान क्षेत्र
1	तुंडीकर	दमोह
2	अनूप	निमाड़
3	दशार्ण	विदिशा
4	अवंती	उज्जैन
5	त्रिपुरी / तेवर	जबलपुर
6	आकर	मालवा का पूर्वी भाग
7	वत्स	ग्वालियर
8	नलपुर	शिवपुरी
9	चेदि	खजुराहो

मध्य प्रदेश में ऐतिहासिक काल

- यह वह काल है जिसके लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं एवं उन साक्ष्यों को पढ़ा भी जा सका है।
- **उदाहरण** = महाकाव्य काल से लेकर बाद का इतिहास
- महाकाव्य काल के साक्ष्य हमें दो रूपों में मिलते हैं –

रामायण काल ⟷ महाभारत काल

चित्रकूट

- रामायण काल में इस समय मध्यप्रदेश में पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- राम ने मां सीता एवं लक्ष्मण के साथ अपने बनवास का कुछ समय यहीं व्यतीत किया था।
- इसके साक्ष्य हमें **रामघाट** व **भरत मिलाप मंदिर** के रूप में मिलते हैं।

मध्यप्रदेश में रामायण काल

- रामायण काल का संबंध **त्रेता युग** से है। इस काल में म.प्र. में पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- इस काल में तमसा नदी के किनारे **वाल्मीकि के आश्रम** का उल्लेख मिलता है।
- **चित्रकूट** में भी इस काल के पर्याप्त साक्ष्य मिलते हैं।
- राम जी मध्य प्रदेश के बाद छत्तीसगढ़ पहुंचे जहां दंडक वन के **दंडकारण्य** क्षेत्र (बस्तर क्षेत्र) में सीताहरण का उल्लेख मिलता है।
- राम के पुत्र कुश ने दक्षिणी कोसल (छ.ग.) में शासन किया था।
- शत्रुघन के पुत्र **शत्रुघाती** ने विदिशा पर शासन किया था। शत्रुघाती की राजधानी **कुशावती** थी।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

मध्यप्रदेश में महाभारत काल

- महाभारत काल का संबंध **द्वापर युग** से है। म.प्र. में इस काल के पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- इस काल में यदुवंशीय नरेशों का **निमाड़ देश (अनूप देश)** पर शासन था।
- **बिंदु**, इस काल में अवंती के शासक थे।
- **अनबिंदु** इस काल में विदिशा के शासक थे।
- पांडवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय **मध्यप्रदेश के वनों** में बिताया था।
- इस काल के प्रमुख जनपद निम्न थे –
  - विदिशा
  - महिष्मति
  - अवंती / उज्जैयिनी
  - कुंतल
  - दशार्ण
  - चेदि
  - विराट पुरी (सोहागपुर)

महाभारत युद्ध

- यह युद्ध **द्वापर युग** में **कौरवों एवं पांडवों के मध्य** लड़ा गया था।
- **महिष्मती, अवंती, विदर्भ व निषादों** ने कौरवों की ओर से युद्ध में भाग लिया था।
- **दशार्ण, वत्स, काशी, मत्स्य व चेदी** के शासकों ने पांडवों की ओर से युद्ध में भाग लिया था।

मध्य प्रदेश में महाजनपद काल

- यह छठवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व के समय का काल है।
- जैन ग्रंथ **भगवती सूत्र** व बौद्ध ग्रंथ **अंगुत्तर निकाय** में सोलह महाजनपदों की चर्चा मिलती है।
- वर्तमान मध्य प्रदेश के भौगोलिक संदर्भ में देखा जाए तो 16 में से 2 महाजनपद यहां अवस्थित थे –

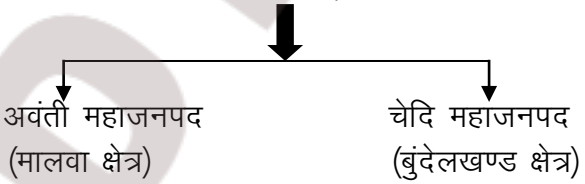

अवंति महाजनपद

- यह 16 महाजनपदों में से एक था जो **आधुनिक मालवा** में विस्तृत था।
- **दीपवंश** में उल्लेख मिलता है कि **राजा अच्युतगामी** ने उज्जैन नगरी की स्थापना की थी।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने उज्जैन का उल्लेख "**उ-शे-ये-ना**" के रूप में किया है।
- यह दो प्रशासनिक इकाइयों में विभक्त था जैसे –
  - **उत्तरी अवंति** = इसकी राजधानी उज्जैनी थी।
  - **दक्षिणी अवंती** = इसकी राजधानी महिष्मति थी।
- इस समय के प्रमुख बौद्ध केंद्र **सुदर्शनपुर एवं कुररघार** थे।
- अवंती महाजनपद के प्रमुख जनपद निम्नलिखित थे–
  - वत्स (ग्वालियर)
  - अनूप (निमाड़)
  - अनलपुर (शिवपुरी)

बेवर नामक विद्वान उत्तरी एवं दक्षिणी अवंती के मध्य एक नदी वेत्रवती का उल्लेख करते हैं जिसका संबंध बेतवा से है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **चंडप्रद्योत**
  - यह अवंति का प्रतापी शासक था जो **हाथी कला पालन** का विशेषज्ञ भी था।
  - यह महात्मा बुद्ध के समकालीन था।
  - मगध के समकालीन शासक **बिंबिसार** से इसके मित्रवत संबंध थे।
  - बिंबिसार ने इसकी बीमारी को ठीक करने के लिए अपने **राजवैद्य जीवक** को भेजा था।
  - जीवक ने इनके **पांडु रोग** को ठीक किया था बदले में इन्होंने **बिंबिसार को 500 हाथी** उपहार स्वरूप भिजवाए।
- चंडप्रद्योत के उत्तराधिकारी क्रमशः गोपालक, पालक, आर्यक हुए।
- बिंबिसार के बाद **अजातशत्रु** मगध का शासक बना एवं मगध व अवंती के मध्य तनावपूर्ण संबंधों की शुरुआत हुई।
- कालांतर में मगध के नागवंशीय शासक **शिशुनाग** ने अवंती को मगध में मिला लिया।
- उल्लेख मिलता है कि शिशुनाग की **पहली राजधानी मगध व दूसरी राजधानी विदिशा** थी।
- शिशुनाग वंश का अंतिम शासक नंदिवर्धन हुआ। नंदवंशीय शासक महापद्मनंद ने नंदिवर्धन की हत्या कर दी एवं अवंति को नदंवंश के क्षेत्र में शामिल कर लिया।

चेदि महाजनपद

- **परिचय**= यह छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व के **सोलह महाजनपदों** में एक था।
- **राजधानी** = शुक्तिमती
- **विस्तार** = वर्तमान के पूर्वी बुंदेलखंड क्षेत्र में इसका विस्तार था।
- **प्रमुख जनपद** = दशार्ण (विदिशा) + तुंडीकेर (दमोह)
- भौगोलिक दृष्टि से यह यमुना व विंध्य पर्वत के मध्य स्थित है।
- **शिशुपाल**
  - यह चेदी महाजनपद का प्रसिद्ध शासक था।
  - भिंड एवं चंदेरी के क्षेत्र भी इसके नियंत्रण में थे।
  - भगवान **श्री कृष्ण** द्वारा इसके वध का उल्लेख मिलता है।
- शिशुपाल की मृत्यु के बाद **महापद्मनंद** ने चेदी को मगध में मिला लिया था।
- जब महापद्मनंद ने चेदी पर आक्रमण किया था तब चेदी का शासक यादवंशीय **व्रतीहोत** था।

मध्यप्रदेश में मौर्य कालीन संबंधी विवरण

- मध्यप्रदेश में मौर्यकाल का संक्षिप्त इतिहास
- मौर्यकालीन अभिलेख
- मौर्यकालीन स्तूप
- मौर्यकालीन नगर व सिक्के

म.प्र.में मौर्यकाल का संक्षिप्त इतिहास

- **चंद्रगुप्त मौर्य** ने इस वंश की स्थापना की थी।
- मध्यप्रदेश का उत्तरी भाग, मालवा एवं अवंती के क्षेत्र भी चंद्रगुप्त मौर्य के शासन के अधीन थे।
- चंद्रगुप्त मौर्य के बाद **बिंदुसार**, मौर्य वंश का अगला शासक बना।
- बिंदुसार के शासनकाल में उसका छोटा पुत्र **अशोक अवंति का राज्यपाल** था जिसकी जानकारी हमें बौद्ध ग्रंथ **दीपवंश** से प्राप्त होती है।
- अशोक लगभग **11 वर्षों** तक अवंति का राज्यपाल रहा। अशोक ने अपनी **राजधानी उज्जैयिनी** को बनाया एवं शासन संचालन किया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- अवंति का गवर्नर रहते हुए अशोक ने निम्न महत्वपूर्ण कार्य किए–
  - दो बार **तक्षशिला** में हुए विद्रोह का दमन किया।
  - विदिशा के एक व्यापारी की पुत्री **महादेवी/वैदेही/श्रीदेवी** से विवाह किया।
  - अशोक एवं महादेवी की संतान **महेंद्र एवं संघमित्रा** हुए जिन्होंने श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार किया जिसका उल्लेख हमें **महावंश** नामक ग्रंथ में मिलता है।
  - इसने अवंति की राजधानी **उज्जैन** को बनाया।
  - उज्जैन में **वैश्य टेकरी** का निर्माण कराया एवं **सांची के स्तूप** का भी निर्माण कराया।

म.प्र.में मौर्यकालीन अभिलेख

- गुर्जरा अभिलेख (दतिया)
- कालीतलाई अभिलेख (जबलपुर)
- पानगुड़ारिया अभिलेख (सीहोर)
- सांची अभिलेख (रायसेन)
- कसरावद अभिलेख (खरगौन)
- सारोमारो अभिलेख (शहडोल)
- **रूपनाथ अभिलेख**
  - पहले यह जबलपुर में था लेकिन अब कटनी के बहोरीबंद में है।
  - इससे मौर्यकालीन कला की जानकारी प्राप्त होती है।

गुर्जरा अभिलेख

- यह अशोक का लघु शिलालेख है।
- इसे **सिद्धों की टोकरी** भी कहा गया है।
- इसमें अशोक का नाम अशोक मिलता है।

मौर्य कालीन सिक्के

- ये चांदी व तांबे से बने हुए हैं।
- ये विदिशा, त्रिपुरी, उज्जैन, ऐरण सतना से प्राप्त हुए हैं।

मप्र. में मौर्यकालीन नगर

- उज्जैन
- ग्वालियर
- विदिषा
- महिष्मति
- सांची

म.प्र.में मौर्यकालीन स्तूप

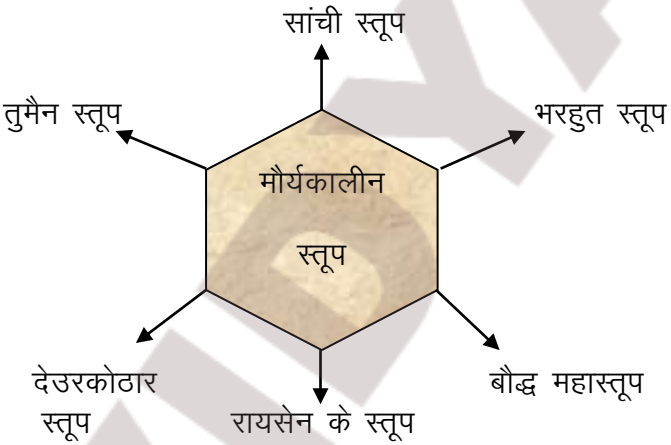

देउर–कोठार स्तूप

- ईंटो से निर्मित यह स्तूप **रीवा के गढ़** क्षेत्र में अवस्थित है।
- यह धार्मिक एवं पुरातात्विक महत्व का है।

बौद्ध महास्तूप (उज्जैन)

- अशोक ने बनवाया
- वर्तमान में वैश्य टेकरी के रूप में इसके अवशेष विद्यमान हैं।

रायसेन के स्तूप

- सतधारा स्तूप
- सोनारी स्तूप
- अंधेर स्तूप

सांची स्तूप

- यह **रायसेन** में अवस्थित मौर्यकालीन स्तूप है।
- महादेवी के कहने पर **अशोक द्वारा** इसका **निर्माण** कराया गया।
- यह मूलतः ईंटों से निर्मित है।
- शुंग काल में इस स्तूप में **वेदिका एवं प्रवेश द्वार का निर्माण** कराया गया।
- इसे भारत का सबसे बड़ा स्तूप माना जाता है।
- **खोज** = जनरल टेलर (1818)
- **विशेष** = 1989 में यूनेस्को द्वारा इसे **विश्व धरोहर सूची** में शामिल किया गया है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

भरहुत स्तूप

- यह **सतना की उचेहरा तहसील** में अवस्थित मौर्यकालीन स्तूप है।
- अशोक द्वारा निर्मित लेकिन शुंगकाल में इसका विस्तार हुआ।
- **खोज** = अलेक्जेंडर कनिंघम **(1873)**

बृहद्रथ

- यह मौर्य वंश का **अंतिम शासक** था।
- इसकी हत्या करके इसके सेनापति **पुष्यमित्र शुंग** ने मध्यप्रदेश में भी **शुंग वंश** का नियंत्रण स्थापित किया

मध्यप्रदेश में मौर्योत्तर काल

↓

मध्यप्रदेश में ब्राह्मण वंशों का आधिपत्य

↓

शुंग वंश | सातवाहन वंश

मध्यप्रदेश में शुंग वंश

- **परिचय** = यह एक ब्राह्मण राजवंश था। (शुंग **मूलतः उज्जैन** से संबंधित थे)
- **संस्थापक** = पुष्यमित्र शुंग
- **स्थापना** = अंतिम मौर्य शासक ब्रहदृथ की हत्या करके **पुष्यमित्र शुंग** ने इस वंश की स्थापना की।
- **राजधानी** = शुंगों की **प्रथम राजधानी मगध व दूसरी राजधानी विदिशा** थी।

पुष्यमित्र शुंग

- **परिचय** = यह अंतिम मौर्य शासक ब्रहदृथ का सेनापति था एवं **शुंग वश का संस्थापक** था।
- **शासन क्षेत्र** = इसका शासन नर्मदा नदी तक विस्तृत था।
- **विवाद का विषय**
  - बौद्ध धर्म का संरक्षक = सांची एवं भरहुत स्तूपों का जीर्णोद्धार कराया।
  - बौद्ध धर्म का विनाषक = 1000 बौद्ध भिक्षुओं की हत्या कर सरयू नदी में फिंकवाया।
- इसका पुत्र **अग्निमित्र** अगला शासक बना।

अग्निमित्र

- पुष्यमित्र शुंग का पुत्र एवं **शुंगवंशीय शासक।**
- इसने विदर्भ के शासक **यज्ञसेन** को पराजित किया था।
- इसने **विदिषा** को राजधानी बनाकर मालवा क्षेत्र पर शासन किया।

मालविकाग्निमित्रम् कालिदास का संस्कृत नाटक है जिसमें अग्निमित्र व मालविका के प्रेम–प्रसंगों का विवरण है।इसी ग्रंथ में उल्लेख मिलता है कि **वसुमित्र** ने सिंध नदी के किनारे **यवनों** को पराजित किया था।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

भागभद्र

- ये शुंग वंश के **नौवें** शासक थे।
- इन्हें राजा **भाग या भागमित्र** भी कहा जाता था।
- इन्हीं के समय **हेलियोडोरस** ने विदिषा की यात्रा की थी।

हेलियोडोरस

- यह ग्रीक (यूनानी) शासक **एंटियाकीड्स** का राजदूत था।
- इसने भागभद्र के शासनकाल में विदिषा की यात्रा की।
- इसने बैष्णव/भागवत धर्म को स्वीकारा था।
- भागवत धर्म के सम्मान में इसने विदिषा के बेसनगर में **हेलियोडोरस स्तम्भ** का निर्माण करवाया।

हेलियोडोरस स्तम्भ

- भागवत/बैष्णव धर्म के सम्मान में स्थापित एवं विष्णु को समर्पित।
- **संस्थापक** = हेलियोडोरस
- विदिषा के बेसनगर में है।
- **अन्य नाम** = गरूण स्तम्भ, गरूण ध्वज, खाम बाबा

देवभूति

- यह शुंग वंश का **अंतिम शासक** था।
- इसकी हत्या **बसुदेव कण्व** ने की एवं **कण्व वंश** की स्थापना की।

नोट = **सुषर्मन**, **कण्व वंश** का अंतिम शासक था जिसकी हत्या **सिमुक** ने की एवं **सातवाहन वंश** की नींव डाली। इसी के साथ मध्यप्रदेश में सातवाहन वंश का नियंत्रण स्थापित हुआ।

मध्यप्रदेश में सातवाहन वंश

- **परिचय** = यह एक **ब्राह्मण राजवंश** था जिसका शासन वर्तमान मध्यप्रदेश तक विस्तृत था।
- **संस्थापक** = सिमुक
- **जानकारी** = नासिक अभिलेख (गौतमी बलश्री) + पुणे अभिलेख से
- **विरोधाभास** = वंश पितृसत्तामक लेकिन शासकों द्वारा अपने नाम में माता के नाम का प्रयोग मिलता है।
- **योगदान**
  - ब्राह्मणों को भू–दान देना आरंभ किया एवं **सीसे के सिक्के** चलाये।
  - **उत्तर एवं दक्षिण के मध्य सेतु** का कार्य किया।
  - अजंता एवं एलोरा गुफा समूह में कुछ गुफाओं का निर्माण कराया।
- सांची स्तूप के तोरण द्वार पर लेख से यह जानकारी मिलती है कि सातवाहनों ने मध्यप्रदेश के **मालवा क्षेत्र** में शासन किया था।
- सातवाहन शासकों के प्रमुख शासकों का वर्णन निम्न है **(मप्र. के संदर्भ में)**

सातवाहन वंश के प्रमुख शासक निम्न थे

- सिमुक
- शातकर्णी प्रथम
- गौतमी पुत्र शातकर्णी
- वाषिष्ठीपुत्र पुलुवामी।

- **शातकर्णी प्रथम**
  - इसने पश्चिमी मालवा तथा निमाड़ क्षेत्र पर शासन किया था।
- **गौतमीपुत्र शातकर्णी**
  - इसने सीसे के सिक्के चलवाये।
  - इसके सिक्के **उज्जैन व रायसेन** से प्राप्त हुए हैं।
  - इसका नाम सांची के स्तूप पर मिलता है ।

नोट – शक शासक मिनांडर के सिक्के **बालाघाट** से प्राप्त होते है।

- **यज्ञश्री शातकर्णी**
  - इसके सिक्के तेवर (जबलपुर) , बेसनगर (विदिषा) एवं देवास से मिले हैं।
- सातवाहन शासक **हाल** ने **गाथासप्तसती** की रचना की।
- **वाशिष्ठी पुत्र पुलुवामी** के सिक्के भिलसा एवं देवास से प्राप्त हुए हैं।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

मध्यप्रदेश में गुप्तकाल

प्रमुख शासक

वर्तमान मध्यप्रदेश के भौगोलिक संदर्भ में गुप्त वंश के शासकों का उल्लेख निम्नवत् है

श्रीगुप्त

- यह गुप्त वंश का **संस्थापक** था।
- इसके बारे में जानकारी हमें प्रभावती गुप्त के **पूना अभिलेख** से प्राप्त होती है।

घटोत्कच

- **सुपिया अभिलेख** से जानकारी प्राप्त होती है कि **घटोत्कच** गुप्तवंश का संस्थापक था।

चंद्रगुप्त प्रथम

- यह गुप्त वंश का **वास्तविक संस्थापक** था।
- इसने गुप्त संवत चलाया।
- **लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी** से विवाह किया।

समुद्रगुप्त

- **परिचय** = यह कुमारदेवी व **चंदगुप्त प्रथम** का पुत्र था।
- **उपाधि** = धरणीबंध, कविराज, वीणावादक, **लिच्छवि दौहित्र**
- **शासन क्षेत्र** = इसका साम्राज्य हिमालय से लेकर नर्मदा घाटी तक विस्तृत था।
- **दक्षिणापथ विजय**
  - दक्षिणापथ विजय हेतु इसने वर्तमान मध्यप्रदेश के निम्न मार्ग का प्रयोग किया।
    रीवा ⟶ महाकौषल ⟶ महाकान्तर (बस्तर)
  - दक्षिणापथ विजय पर जाते समय इसने विदिशा के **शक राजा श्रीधरवर्मन** को पराजित कर विजय स्मृति में सागर के **ऐरण में एक स्मारक का निर्माण** करवाया था।
- इसके सिक्के मध्यप्रदेश के विदिषा, ऐरण (सागर), अनूप क्षेत्र एवं अवंति से प्राप्त हुए हैं।
- इसके समय ऐरण को **स्वभोग नगर** कहा जाता था।
- इतिहासकार **विंसेट स्मिथ** ने इसे ''**भारत का नेपोलियन**'' एवं **100 युद्धों का विजेता** कहा गया है।

सुपिया अभिलेख में गुप्तवंश में समुद्रगुप्त के पष्चात् रामगुप्त का उल्लेख मिलता है।

चंद्रगुप्त– II विक्रमादित्य

- यह गुप्त वंश का प्रतापी शासक था।
- इसकी प्रथम राजधानी पाटलीपुत्र थी **(राजनैतिक राजधानी)**
- इसके **मंत्री** वीरसेन ने उदयगिरी की पहाड़ियों में एक अभिलेख उत्कीर्ण करवाया था।
- **उदयगिरी अभिलेख** से यह जानकारी प्राप्त होती है कि इसने विदिशा क्षेत्र में अभियान कर शकों को पराजित किया था एवं शकों को हराने के बाद इसने उज्जैनी (अवंति) को अपनी **सांस्कृतिक राजधानी** बनाया। **(द्वितीय राजधानी)**

VIDYA ICS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- इसी के समय चीनी यात्री **फाह्यान** ने भारत एवं मध्यप्रदेश की यात्रा की। फाह्यान ने अपने यात्रा वृतान्त **फो–यू–की** में मालवा की जलवायु को **विष्व की श्रेष्ठ** जलवायु बताया है।

कुमारगुप्त

- **चंद्रगुप्त–II का पुत्र** एवं गुप्तवंशीय शासक।
- इसके समय मंदसौर को **दशपुर** कहा जाता थाा।
- इसने **मयूर प्रकार के सिक्के** चलाये थे।
- तुमैन अभिलेख में इसे **शरदकालीन सूर्य** की भांति बताया गया है।
- इसका पुत्र स्कंधगुप्त अगला शासक बना।

स्कंधगुप्त

- यह **कुमारगुप्त प्रथम** का पुत्र था।
- **मंदसौर अभिलेख** से जानकारी प्राप्त होती है कि इसके समय हूण आक्रमण हुआ था।
- सुपिया अभिलेख (रीवा) से जानकारी प्राप्त होती है कि इसने गुप्त वंश के शासक के रूप में कार्य किया था।

भानुगुप्त

- गुप्तवंश का शासक जिसके समय **हूणों का आक्रमण** हुआ।
- इसने अपनी सहायता हेतु अपने मित्र व सेनापति **गोपराज** को बुलाया।
- गोपराज की युद्ध में मृत्यु हुई एवं उसकी पत्नी ने **सती प्रथा** का पालन किया।
- इस सती प्रथा का साक्ष्य हमें **ऐरण अभिलेख** से प्राप्त होता है।

प्रमुख अभिलेख

मंदसौर अभिलेख

- यह **कुमारगुप्त द्वितीय** के समय का अभिलेख है।
- इसे संस्कृत विद्वान **वत्सभट्टी द्वारा** संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण करवाया था।
- इसमें **विक्रम तिथि** का उल्लेख मिलता है।
- इसमें सूर्य मंदिर के निर्माण का उल्लेख मिलता है।
- इसमें **रेशम बुनकर श्रेणी** का उल्लेख मिलता है।

सुपिया अभिलेख

- यह रीवा में अवस्थित है जिससे हमें **स्कंधगुप्त** के शासन की जानकारी प्राप्त होती है।
- इसमें गुप्त वंश को **घटोत्कच वंश** कहा गया है।
- इसमें गुप्त वंशावली को **घटोत्कच से आरंभ** माना गया है।

ऐरण अभिलेख

- यह **सागर मे** अवस्थित गुप्तकालीन अभिलेख है।
- इससे **भानुगुप्त** के शासन की जानकारी प्राप्त होती है।
- इसी अभिलेख से हमें **सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य** प्राप्त होता है।

गुप्तकालीन नगर

- **स्वभोगनगर(ऐरण)**
- **अनूप(पूर्वी निमाड)**
- **दशपुर**
- **दशार्ण(विदिशा)**
- **रीवा**
- **अवंति (उज्जैन)**

तुमैन अभिलेख

- अशोकनगर में अवस्थित, कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल का अभिलेख।
- इसमें **राजा को शरदकालीन सूर्य** की भांति बताया गया है।
- इसमें हमें कुमारगुप्त प्रथम की मृत्यु एवं सत्ता स्कंधगुप्त के हाथों में आने की जानकारी प्राप्त होती है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

सांची अभिलेख

- इसमें **आर्य संघ को दान** दिये जाने का उल्लेख मिलता है।

उदयगिरी अभिलेख

- यह **रायसेन** में उदयगिरी की पहाड़ियों में अवस्थित है।
- इसे चंद्रगुप्त द्वितीय के **मंत्री वीरसेन ने उत्कीर्ण** करवाया था।
- इसमें यह उल्लेख मिलता है कि **शंकर नामक व्यक्ति** ने यहां **पार्श्वनाथ की मूर्ति** स्थापित करवाई थी।

गुप्तकालीन मंदिर

- नचना कुठार का पार्वती मंदिर
- भूमरा का षिव मंदिर (नागौद)
- खोह मंदिर (नागौद)
- तिगवा का विष्णु मंदिर बहोरीबंद (कटनी)
- तिगवा का कंकाली माता मंदिर
- ऐरण का विष्णु मंदिर (सागर)

नचना कुठार का पार्वती मंदिर

- पन्ना की अजयगढ़ तहसील के नचना कुठार नामक स्थान पर।
- **खोजकर्ता** = अलेक्जेंडर कनिंघम
- अलेक्जेंडर कनिंघम ने इसे पार्वती मंदिर के रूप में वर्णित किया है।

भूमरा का षिव मंदिर

- सतना के नागौद में अवस्थित।
- पाषाण निर्मित एकमुखी षिवलिंग मंदिर यहा की प्रमुख विषेषता है।

नोट = ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार म.प्र. के **दमोह जिले** की हटा तहसील के **सकोर ग्राम** से उत्खनन के दौरान **24 स्वर्ण मुद्राओं** की प्राप्ति हुई है। इन मुद्राओं पर समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय एवं स्कंदगुप्त के नाम अंकित हैं। इन 24 स्वर्ण मुद्राओं में से **15 सिक्के चंदगुप्त द्वितीय** के हैं।

मध्यप्रदेश में गुप्तकालीन गुफाऐं निम्न हैं –

- उदयगिरी गुफाएँ (विदिशा)
- बाघ की गुफाएँ (धार)

मध्यप्रदेश मे कुषाण वंश

- कुषाण शासक चीन के **यू-ची कबीले** से संबंधित थे।
- **संस्थापक** = कुजुल कडफिसेस
- **कनिष्क**
  - यह कुषाण वंश का प्रतापी शासक था।
  - इसने उज्जैन के **पश्चिमी क्षत्रपों (शकों)** को हराया।
  - कनिष्क ने 78 AD में **कनिष्क संवत्/शक संवत्** चलाया। जो इसके सिंहासन पर विराजमान होने का प्रमाण है।
  - इसके **324 सिक्के शहडोल** से प्राप्त हुए हैं।
- **विमकडफिसेस** के सिक्के **विदिशा** से प्राप्त हुए हैं।
- **हुविष्क** के सिक्के **शहडोल व हरदा** से प्राप्त हुए हैं।
- कुषाण शासक **वशिष्क** का अभिलेख सांची से प्राप्त हुआ है।
- **वासुदेव** इस वंश के अंतिम राजा हुए इनके सिक्के विदिषा व तेवर (जबलपुर) से प्राप्त हुए हैं।
- भारत में सबसे ज्यादा सोने के सिक्के कुषाणों ने चलाये।
- रेशम व्यापार का उल्लेख कनिष्क के समय के **मंदसौर प्रशस्ति** पर उल्लिखित है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

मध्यप्रदेश मे शक वंश

- स्वतंत्र शक वंश का संस्थापक **चस्टाना** को माना जाता है।
- चस्टन ने अपनी राजधानी **उज्जैन** को बनाया।
- शकों को पराजित करने का कार्य **चंद्रगुप्त–II विक्रमादित्य** ने किया।
- शकों ने मध्यप्रदेश के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में शासन किया था।
- शकों ने दो शाखाओं के माध्यम से शासन किया –
  - कार्दमक वंश/शाखा
  - क्षहरात वंश/शाखा

क्षहरात वंश

- इस शाखा का नामकरण **राजा क्षहरात** के नाम पर हुआ है।
- इस शाखा के शासक **भूमक** ने मालवा एवं गुजरात में शासन किया।
- इस शाखा के शासक **नहपान** की राजधानी **मिन्ननगर** (मंदसौर) थी।
- नहपान के सिक्के शिवपुरी से प्राप्त हुए हैं।
- नहपान का युद्ध सातवाहनों से हुआ एवं युद्ध में नहपान की पराजय के बाद शक वंश का पतन हुआ।

कार्दमक शाखा

- इस शाखा का संस्थापक **चस्टन** था।
- इन्हें **मालवा के शक** भी कहा जाता है। इसकी राजधानी **उज्जैनी** थी।
- इसका शासन गुजरात के काठियावाड से लेकर मालवा तक विस्तारित था।
- **रूद्रदामन**
  - यह कार्दमक वंश का प्रतापी शासक था।
  - इसने तिथियुक्त चांदी के सिक्के म.प्र. में चलाये।
  - जूनागढ़ अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि इसने दो बार सातवाहन शासकों को हराया था एवं सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार कराया था।
- रूद्रदामन का उत्तराधिकारी **रूद्रसिंह** हुआ जिसने **शाजापुर** में **खेतखडी शिलालेख** उत्कीर्ण करवाया।
- **श्रीवर्धन**
  - यह शकों की कार्दमक शाखा का शासक था।
  - इसके सिक्के मध्यप्रदेश के ऐरण, सांची से प्राप्त हुए हैं।

मध्यप्रदेश में गुप्तोत्तर काल

- पुष्यभूति/वर्धन वंश
- चालुक्य वंश
- राष्ट्रकूट वंश

म.प्र. मे पुष्यभूति/वर्धन वंश

- इस वंश का संस्थापक **नरवर्धन** को माना जाता है।
- **हर्षबर्धन**
  - यह पुष्यभूति वंश का प्रतापी शासक था। कल्चुरि शासक **बुद्धराज** के समय इसने पूर्वी मालवा पर अधिकार किया एवं बाद में इसने **बल्लभी शासक ध्रुवसेन** को पराजित कर पश्चिमी मालवा पर भी अधिकार कर लिया। लेकिन बाद में हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह ध्रुवसेन से किया एवं मालवा का क्षेत्र उपहारस्वरूप ध्रुवसेन को प्रदान किया।
  - नर्मदा के किनारे **पुलकेशिन–II** से इसका संघर्ष हुआ।
  - **परिणाम** = इस युद्ध के परिणामों को लेकर इतिहासकारों में मतएक नहीं हैं लेकिन अधिकांश इतिहासकार हर्षवर्धन की पराजय को स्वीकार करते हैं।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- हर्ष के दरबार में **वाणभट्ट** नामक विद्वान को संरक्षण प्राप्त था। मध्यप्रदेश में अवस्थित **वाणसागर परियोजना** का नाम इनके नाम पर है।

म.प्र. मे चालुक्य वंश

- यह वातापी का चालुक्य वंश था।
- इसका मूल शासन क्षेत्र **आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना** क्षेत्र था।
- **संस्थापक** = जयसिंह
- **पुलकेशिन-II**
  - यह वातापी के चालुक्य वंश का शासक था।
  - इसका शासन **मध्यप्रदेश के दक्षिणी भाग** में विस्तृत था।
  - चीनी यात्री **ह्वेनसांग** के अनुसार इसने नर्मदा के किनारे हर्षवर्धन को पराजित कर उसके दक्षिणी विस्तार पर रोक लगायी व **परमेश्वर** की उपाधि धारण की।

उत्तर भारत और दक्कन में तीन साम्राज्यों का काल (8 वी से 10 वीं सदी तक)

(स्रोत मध्यकालीन भारत सतीशचन्द्र – NCERT)

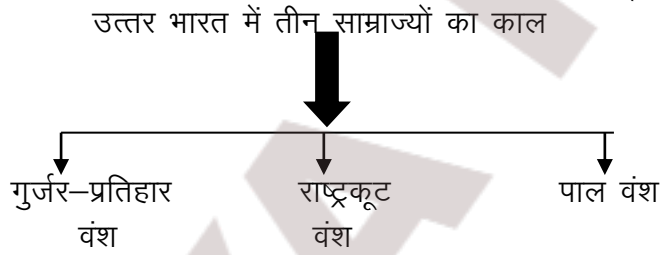

म.प्र. मे गुर्जर-प्रतिहार वंश

- **शासनकाल** = 730–1030 ईस्वी
- **संस्थापक** = नागभट्ट प्रथम
- **प्रथम राजधानी** = कन्नौज
- **द्वितीय राजधानी** = उज्जैन

मध्यप्रदेश के भौगोलिक संदर्भ में इस वंश के प्रमुख शासकों का उल्लेख निम्नवत है –

नागभट्ट प्रथम

- यह गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक था। इसने **यज्ञदेव नामक जैन विद्वान** को संरक्षण दिया था।
- उल्लेख मिलता है कि राष्ट्रकूट शासक दांतिदुर्ग ने इसे पराजित किया था।

> - नागभट्ट प्रथम के बाद अगले शासक क्रमशः कुक्कुस्थ एवं देवराज हुए। ये नागभट्ट प्रथम के भतीजे थे।
> - देवराज के बाद उसका पुत्र वत्सराज अगला शासक बना एवं वत्सराज के बाद नागभट्ट द्वितीय ने सत्ता संभाली।

नागभट्ट द्वितीय

- यह **वत्सराज का पुत्र** एवं गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था। **(800-833 ईस्वी)**
- इसने कलिंग एवं विदर्भ क्षेत्रों में विजय प्राप्त की।
- उल्लेख मिलता है कि राष्ट्रकूट शासक **गोविंद तृतीय** ने इसे पराजित किया था।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- नागभट्ट द्वितीय के पश्चात् उसका पुत्र **रामभद्र** अगला शासक बना। रामभद्र के बाद मिहिरभोज ने सत्ता संभाली।

मिहिरभोज

- **रामभद्र का पुत्र** एवं गुर्जर प्रतिहार वंश का सबसे प्रतापी शासक। (**836-885 ईस्वी**)
- इसे गुर्जर प्रतिहार वंश का **वास्तविक संस्थापक** माना जाता है।
- इसने कन्नौज को राजधानी बनाकर गुजरात, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के क्षेत्रों में विजय प्राप्त की।
- इसी के समय अरबी यात्री **सुलेमान** ने भारत की यात्रा की थी।
- इसी ने ग्वालियर के दुर्ग में **तेली के मंदिर** का निर्माण करवाया था।
- ग्वालियर अवस्थित **सागरताल अभिलेख** में इसे **आदिवराह** कहा गया है।

- मिहिरभोज के बाद महेन्द्रपाल प्रथम, भोज द्वितीय एवं महिपाल द्वितीय क्रमशः शासक हुए।
- महिपाल द्वितीय के बाद गुर्जर प्रतिहारों की शक्ति क्षीण होने लगी एवं धीरे–धीरे इस वंश का पतन हो गया।

म.प्र. मे राष्ट्रकूट वंश

मध्यप्रदेश के इतिहास में राष्ट्रकूट शासकों का महत्वपूर्ण योगदान है। इस वंश की कई शाखायें थीं जिनमें से दो शाखाओं का संबंध म.प्र. से था।

- **अचलपुर के राष्ट्रकूट**
  - इनका शासन मुख्तः महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में विस्तृत था। (**बैतूल क्षेत्र**)
- **मान्यखेट के राष्ट्रकूट**
  - **संस्थापक** = दांतिदुर्ग
  - इसके शासन की जानकारी हमें दो क्षेत्रों से मिलती है–
    - **नीलकंठ क्षेत्र** (छिंदवाड़ा)
    - **अमरावती क्षेत्र** (बैतूल)
  - उल्लेख मिलता है कि दांतिदुर्ग ने उज्जैयनी पर आक्रमण कर **गुर्जर प्रतिहार शासक नागभट्ट** को हराया एवं विजय के उपलक्ष्य में नर्मदा के किनारे **हिरण्यगर्भ दान** दिया।
- **राष्ट्रकूट शासक ध्रुव** ने प्रतिहार नरेश **वत्सराज** को हराया था।
- **गोविन्द-III** ने प्रतिहार नरेश नागभट्ट-II को हराया था जिसकी जानकारी हमें इंद्रगढ़ अभिलेख से प्राप्त होती है।
- राष्ट्रकूट शासक **कृष्ण द्वितीय** का विवाह त्रिपुरी के कल्चुरी शासक **कोक्कल प्रथम** की कन्या **बेजवा** से हुआ था। कृष्ण-II का **संघर्ष राजा भोज** से हुआ था।
- **राष्ट्रकूट शासक कृष्ण-III** एक साम्राज्यवादी शासक था। इसके विषय में जानकारी हमें **नीलकंठ अभिलेख** से प्राप्त होती है। उल्लेख मिलता है कि इसने बुंदेलखण्ड पर आधिपत्य स्थापित किया था साथ ही मालवा के परमार शासक **सीयक** को हराकर उसकी राजधानी पर कब्जा किया था।

नोट = 9वीं–10वीं शताब्दी मे गुर्जर–प्रतिहार वंश के पतन के बाद म.प्र. के क्षेत्र में अनेक स्वतंत्र सामंत राज्यों की स्थापना हुई जैसे –

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

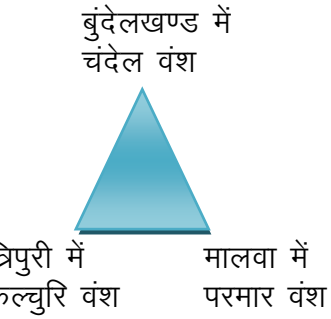

बुंदेलखण्ड का चंदेल वंश

- ये **गुर्जर–प्रतिहारों के सामंत** थे। बाद में इन्होंने स्वतंत्र रूप से शासन संचालन किया।
- 9वीं शताब्दी में बुंदेलखण्ड के क्षेत्र में इन्होंने शासन स्थापित किया।
- इन्हें **कला एवं संस्कृति के संरक्षक शासक** भी कहा जाता है।
- इस वंश का **संस्थापक नन्नुकदेव** को माना जाता है।
- बुंदेलखण्ड के चंदेल वंश के प्रमुख शासकों का उल्लेख निम्नवत् है

चंदेल वंश के शासक

नन्नुकदेव
↓
वाक्पति
↓
जयशक्ति
↓
विजयशक्ति
↓
राहिल
↓
हर्षदेव
↓
यशोवर्मन
↓
धंगदेव
↓
गंडदेव
↓
विद्याधर

नन्नुकदेव

- **शासनकाल** = 831–845 ईस्वी
- **संस्थापक** = बुंदेलखण्ड के चंदेल वंश का संस्थापक।
- **राजधानी** = इसने **खजुराहो** को अपनी राजधानी बनाया।
- **विशेष** = इन्हें **चंदेल वंश का आदि पुरूष** माना जाता है।

वाक्पति

- इन्होंने 845–865 ईस्वी तक शासन किया।
- यह प्रतिहारों का सामंत बना रहा।

जयशक्ति

- यह नन्नुक का पौत्र एवं **वाक्पति का पुत्र** था।
- **शासनकाल** = 865–885 ईस्वी
- इसका अन्य नाम **जेजाक** था। इसी के नाम पर बुंदेलखण्ड का नाम **जेजाकभुक्ति** हुआ।
- इसने अपनी पुत्री **हट्टा/नट्टादेवी** का विवाह कल्चुरि शासक **कोक्कल प्रथम** से किया।

विजयशक्ति

- यह जयशक्ति का छोटा भाई था।
- **शासनकाल** = 885-900 AD

राहिल

हर्षदेव

- **अन्य नाम** = श्रीहर्ष
- **शासनकाल** = 905–925 ईस्वी
- **उपाधि** = परमभट्टारक
- इसने विंध्यप्रदेश तक अपने शासन का विस्तार किया।
- इसने प्रतिहार नरेष **महिपाल** की सहायता की।

VIDYA ICS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **शासनकाल** = 900-905 ईस्वी
- इसने **परमदेव** की उपाधि धारण की।
- महोबा में विजय प्राप्त कर **राहिल्या सागर झील** का निर्माण कराया।
- राहिल के बाद हर्षदेव अगला शासक बना। हर्षदेव के बाद **यशोवर्मन** ने गद्दी संभाली।

यशोवर्मन

- यह **श्रीहर्ष का पुत्र** एवं उत्तराधिकारी था।
- इसका शासनकाल 925-950 ईस्वी तक रहा।
- इसे चंदेल वंश का **वास्तविक संस्थापक** माना जाता है क्योंकि इसने अपने वंश को प्रतिहारों की सामंतशाही से मुक्त कराया। **खजुराहो अभिलेख** से इसकी सैन्य उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- **स्थापत्य योगदान**
  - खजुराहो में लक्ष्मण मंदिर का निर्माण कराया।
  - चतुर्भुज मंदिर निर्माण कराया।
  - बेलाताल नामक विशाल जलाशय का निर्माण कराया।

यशोवर्मन की सैन्य उपलब्धियाँ

- सीयक द्वितीय को हराकर मालवा क्षेत्र में विजय प्राप्त की।
- महाकौशल क्षेत्र में साम्राज्य विस्तार किया।
- हिमालय के खोखरों एवं मिथिला प्रदेश पर विजय प्राप्त की।
- चेदि क्षेत्र में साम्राज्य विस्तार।
- राष्ट्रकूटों से कालिंजर का दुर्ग जीता।
- प्रतिहार नरेश **महिपाल** को हराया एवं विष्णु की मूर्ति को लाकर चतुर्भुज मंदिर में लगवाया।

धंगदेव

- **परिचय** = यशोवर्मन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी
- **शासनकाल** = 950-1007 ईस्वी
- **विशेष** = चंदेलों की **वास्तविक स्वतंत्रता का जन्मदाता**
- **उपाधियाँ** = परमभट्टारक, परमेश्वर, महाराजाधिराज, परममहेश्वर, कलिंजराधिपति
- **सैन्य उपलब्धियाँ**
  - उत्तर में यमुना से दक्षिण में मालवा तक साम्राज्य विस्तार किया।
  - पूर्व में वाराणसी से पश्चिम में ग्वालियर तक साम्राज्य विस्तार किया।
  - इसने कच्छपघात वंशीय शासकों को पराजित कर ग्वालियर पर विजय प्राप्त की।
  - कालिंजर पर विजय प्राप्त की एवं उसे अपनी राजधानी बनाया किंतु बाद में पुनः **खजुराहो को राजधानी** बनाया।
  - कल्चुरि शासक **शंकरगढ़ तृतीय** को हराया।
  - कन्नौज के गुर्जर प्रतिहार शासकों को भी इसने हराया था।
  - महमूद गजनवी के विरूद्ध शाही शासक **जयपाल को सैन्य सहायता** दी।
- **सांस्कृतिक उपलब्धियाँ**
  - धार्मिक सहिष्णुता की नीति को अपनाया।
  - खजुराहो में जैनों को मंदिर बनवाने की अनुमति दी।
  - उच्च कोटि का निर्माता, खजुराहो में अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया। जैसे –

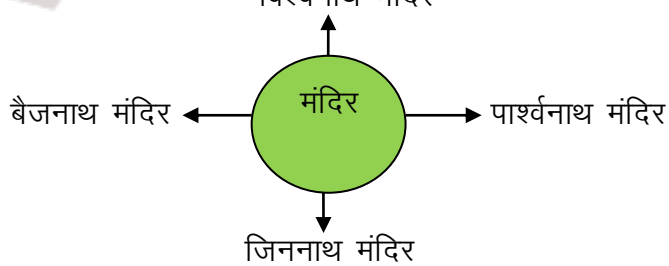

गंडदेव

- यह धंगदेव का पुत्र था।
- **शासनकाल** = 1008-1019 AD
- 1008 में महमूद गजनवी के विरूद्ध जयपाल के पुत्र **आनंदपाल शाही** को सैन्य सहायता दी।
- जगदम्बे, चित्रगुप्त व वैष्णव मंदिर का निर्माण करवाया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- इसने **प्रयाग** में संगम के निकट अपने प्राण त्याग दिये।
- इसके बाद इसका पुत्र **गंडदेव** शासक बना। गंडदेव के बाद **विद्याधर** ने गद्दी संभाली।

विद्याधर

- **परिचय** = गंडदेव का पुत्र एवं चंदेल वंश का सबसे प्रतापी राजा।
- **शासनकाल** = 1019-1029 ईस्वी
- **अन्य नाम** = मुस्लिम इतिहासकार इसका उल्लेख **नंद, चंद, विद्या** के नाम से करते हैं।
- **राज्यपाल का वध**
  - राज्यपाल गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था। यह महमूद गजनवी से बिना लड़े भाग गया था अतः विद्याधर ने इसकी हत्या कर दी।
- **सैन्य उपलब्धियाँ**
  - कल्चुरि शासक **गांगेयदेव एवं** मालवा के परमार शासक **राजा भोज** को हराया।
  - महमूद गजनवी को दो बार प्रबल टक्कर दी। (**1119–20 एवं 1122 के मध्य**) दोनों के मध्य संघर्ष लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला।
- **स्थापत्य योगदान**
  - खजुराहो में **कंदरिया महादेव मंदिर** का निर्माण कराया।

विद्याधर ने लुगात–ए–हिन्दवी नामक कविता की रचना की थी।

विजयपाल

- विद्याधर का पुत्र जिसने 1029 से 1045 तक शासन किया।
- इसके समय **गांगेयदेव** ने चंदेलों के पूर्वी भाग पर आधिपत्य किया।

देववर्मन

- इसने 1045-1060 ईस्वी तक शासन किया।

कीर्तिवर्मन

- **शासनकाल** = 1060-1100 ईस्वी
- इसने महोबा में **कीरतसागर झील** बनवाई।
- कीर्तिवर्मन के समय ही **श्रीकृष्ण मित्र ने प्रबोध चंद्रोदय** नामक संस्कृत नाटक की रचना की।
- इसने कल्चुरि शासक **लक्ष्मीकर्ण** को पराजित किया।

नोट = इसके बाद सल्लक्षण वर्मा, जयवर्मन, प्रथ्वीवर्मन क्रमशः शासक हुए।

मदनवर्मन

- शासनकाल = 1129-1165 ईस्वी
- इसके सिक्के **रीवा** से प्राप्त हुए हैं।
- इसने मालवा के **य शोवर्मन** से **विदिशा** को जीता।
- इसके बाद **यशोवर्मन–II एवं परमार्दिदेव** अगले शासक हुए।

विद्याधर के बाद शासक

विजयपाल
↓
देववर्मन
↓
कीर्तिवर्मन
↓
सल्लक्षणवर्मन
↓
जयवर्मन
↓
पृथ्वीवर्मन
↓
मदनवर्मन
↓
यशोवर्मन-II
↓
परमर्दिदेव
↓
त्रिलोक्यवर्मन
↓
वीरवर्मन
↓
भोजवर्मन
↓
हम्मीरवर्मन
↓
कीरतसिंह

VIDYA ICS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

परमार्दिदेव वर्मन

- **परिचय** = यशोवर्मन-II का पुत्र एवं चंदेल वंशीय शासक।
- **शासनकाल** = 1165–1203
- **अन्य नाम** = परिमाल/परमाल
- **राजधानी** = कालिंजर एवं महोबा
- **विशेष** = यह चंदेल वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक था।
- **सेनापति** = आल्हा–ऊदल इसके सेनापति थे।
- इसने कल्चुरि शासक जयसिंह को पराजित किया था।
- **पराजय कहाँ–कहाँ**
  - **1182** में प्रथ्वीराज चौहान का आक्रमण हुआ एवं **सिरगढ़ के युद्ध** में आल्हा–ऊदल मारे गए है एवं महोबा पर पृथ्वीराज का कब्जा हो गया।
  - **1203** में **ऐबक** ने कालिंजर पर आक्रमण कर परमार्दिदेव को पराजित किया एवं कालिंजर पर अधिकार कर किया।

त्रिलोक्य वर्मन

- **शासनकाल** = 1203-1245 ईस्वी
- इसने कालिंजर पर पुनः विजय प्राप्त की एवं **सोने व तांबे के सिक्के** चलाये।

नोट = इसके बाद वीरवर्मन एवं भोजवर्मन अगले शासक हुए।

अंतिम शासक

- **हम्मीरवर्मन** = कुछ विद्वान इनको अंतिम शासक मानते हैं।
- **कीरत सिंह**
  - अधिकांश विद्वान इन्हें ही चंदेल वंश का अंतिम शासक मानते हैं।
  - इन्हीं के समय **1305** में बुंदेलखण्ड को **अलाउद्दीन खिलजी** ने दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

मालवा का परमार वंश

सामान्य जानकारी

- आरंभ में ये गुर्जर प्रतिहारों के सामंत हुआ करते थे।
- **संस्थापक** = उपेंद्र/कृष्णराज
- मालवा क्षेत्र में **9 वीं शताब्दी** के पूर्वार्ध में इनका उदय हुआ।
- **प्रारंभिक राजधानी** = उज्जैन
- बाद में इस वंश के शासकों ने अपनी राजधानी **धारानगरी (धार)** को बनाया।
- इस वंश के प्रमुख शासकों का वर्णन निम्न है

श्रीहर्ष की उपलब्धियाँ

- इसने अपने वंश को राष्ट्रकूटों की अधीनता से मुक्त कराया।
- हूण मंडल के राजा को पराजित किया। **(नवसहसांकचरित** के अनुसार)
- चालुक्य नरेश **अवंतिवर्मन** को हराया।
- राष्ट्रकूट नरेश **खोटिग्ग** को पराजित किया एवं **मान्यखेट** पर अधिकार किया।

श्रीहर्ष

- **परिचय** = मालवा के परमार वंश का प्रथम प्रतापी शासक
- **अन्य नाम** = सीयक द्वितीय

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- इसने परमार राज्य को दक्षिण में ताप्ती नदी तक विस्तारित किया।
- इसका पुत्र वाक्पति मुंज इस वंश का अगला शासक हुआ।

वाक्पति मुंज

- **परिचय** = श्रीहर्ष का पुत्र एवं परमार वंशीय शासक।
- **शासन काल** = 973-995 ईस्वी
- **विशेष** = मालवा मे परमारों की शक्ति का उदय इसी के समय हुआ
- **उपाधि** = श्रीवल्लभ, अमोघवर्ष, पृथ्वीवल्लभ
- **सैन्य उपलब्धियाँ**
  - मालवा में हूण राजा को पराजित किया (जानकारी **कैथेम दानपत्र अभिलेख** से)
  - मेवाड़ के गुहिलवंशीय शासक **शक्तिकुमार** को हराया (**हस्तकुंड अभिलेख** से जानकारी प्राप्त)
  - कल्चुरी शासक **युवराज द्वितीय** को हराया।
  - गुजरात के शासक **मूलराज प्रथम** को पराजित कर उससे **लाट प्रदेश** को जीता।
  - इसने कल्याणी के चालुक्य नरेश **तैलप द्वितीय** को **6 बार** हराया लेकिन सातवीं बार तैलप द्वितीय ने इसे हराया व इसकी हत्या कर दी।
- **सांस्कृतिक उपलब्धि**
  - स्थापत्य विकास जैसे धार में **मुन्ज सागर झील** का निर्माण कराया।
  - विद्वानों का संरक्षक जैसे –

विद्वान	रचना
धनंजय	दशारूपक
धनक	यशोरूपक
हलायुध	मृतसंजीवनी

सिंधुराज

- **परिचय** = यह **वाक्पति मुंज का छोटा भाई** था।
- **शासनकाल** = 995-1000 ईस्वी
- **सैन्य उपलब्धि**
  - इसने **हूणों को अंतिम रूप से** पराजित किया था।
  - इसने लाट के शासकों को हराया था।
  - इसने कौशल प्रदेश (छत्तीसगढ), में विजय प्राप्त की।
  - नागवंशीय शासक को युद्ध में सहायता देकर उसकी पुत्री **शशिप्रभा** से विवाह किया।
  - **तैलप द्वितीय** के उत्तराधिकारी **सत्ताश्रय** पर आक्रमण करके अपने भाई की मृत्यु का बदला लिया एवं अपने राज्य का विजित प्रदेश चालुक्यों से वापस लिया।

पद्मगुप्त, वाक्पति मुंज एवं सिंधुराज के दरवारी विद्वान थे। इन्होंने नवसहसांकचरित्र नामक काव्य की रचना की है।

- **सांस्कृतिक उपलब्धियाँ**
  - धार में **शिव मंदिर** का निर्माण करवाया।
  - परमार कालीन संस्कृति को बढ़ावा दिया।
  - **नवसहसांकचरित** के लेखक **पद्मगुप्त** को राजकीय संरक्षण दिया।
  - **कुमारपालचरित** में उल्लेख मिलता है कि गुजरात के चालुक्य नरेश **चामुंडराय** से युद्ध के दौरान इसकी मृत्यु हो गई।

राजा भोज

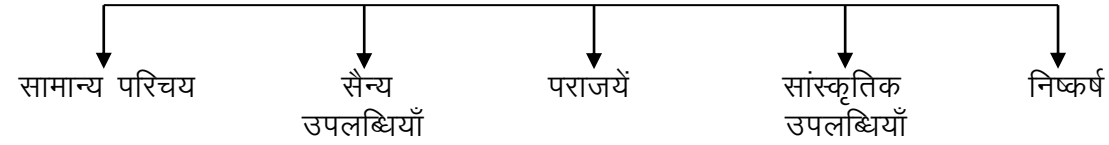

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

सामान्य परिचय

- यह **सिंधुराज** का उत्तराधिकारी एवं परमार वंश के यशस्वी/प्रतापी शासकों में से एक था।
- इसकी गिनती महानतम **विद्वान नरेशों** में की जाती है।
- इन्हें **कलम एवं तलवार के धनी व्यक्ति** भी कहा जाता है।
- **शासनकाल** = 1000-1055 ईस्वी
- **उपाधि** = कविराज, नवविक्रमादित्य
- **राजधानी** = इसने अपनी राजधानी **उज्जैन से धार** स्थानांतरित की।

सैन्य उपलब्धि

- इन्होंने तुर्कों को हराया व **धारानगरी** को अपनी राजधानी बनाया जिसकी जानकारी हमें **उदयपुर प्रशस्ति** से प्राप्त होती है।
- त्रिगुट निर्माण कार्य कल्याणी के चालुक्यों को हराया। इस त्रिगुट में **राजा भोज + गांगेयदेव + चोल शासक** शामिल थे।
- उड़ीसा के शासक **इंद्ररथ** को हराया जिसकी जानकारी हमें **तिरुमलै अभिलेख** से प्राप्त होती है।
- **कल्वन अभिलेख** से निम्न शासकों को पराजित करने की जानकारी प्राप्त होती है–
  - कर्णाट प्रदेश पर विजय प्राप्त की।
  - लाट शासक **कीर्तिवर्मन** को हराया।
  - कोंकण शासक **कोशोदेव** को हराया।(**1020 ईस्वी**)
- **कुशचंद्र** के नेतृत्व में सेना भेजकर अन्हिलवाड़ा के चालुक्य नरेश **भीम प्रथम** को हराया जिसकी जानकारी हमें **प्रबंधचिंतामणि** एवं **उदयपुर प्रशस्ति** से प्राप्त होती है।
- महमूद गजनवी के विरुद्ध **आनंदपाल** को सैन्य सहायता दी **(1008 ईस्वी)**

सांस्कृतिक उपलब्धियां

- **विद्वान शासक**
  - राजा भोज स्वयं विद्वान थे इन्होंने **कविराज** की उपाधि धारण की व अनेक ग्रंथों की रचना की जैसे –
    - आयुर्वेदसर्वस्व (चिकित्सा)
    - समरांगणसूत्राधार (स्थापत्य)
    - सरस्वती कंठाभरण
    - विद्या विनोद
    - सिद्धांत संग्रह
    - युक्ति कल्पतरु

पराजय कहां कहां

- कच्छवाहों से हार गए
- सोमेश्वर प्रथम से हारे(**1047 AD**)
- विद्याधर से पराजित हुए
- भीम प्रथम एवं लक्ष्मीकर्ण (कल्चुरी) की संयुक्त सेना ने हराया (**1055 ईस्वी**)

- **विद्वानों का संरक्षण**
  - लगभग 500 विद्वानों को संरक्षण दिया जिसकी जानकारी हमें **आईने अकबरी** से मिलती है।
  - **भास्कर भट्ट, दामोदर मिश्र, धनपाल, चित्रक, विनायक, शंकर** जैसे विद्वानों को इनका संरक्षण प्राप्त था।
  - **प्राभचंद्रसूरी** इनके समय के सुप्रसिद्ध विद्वान थे।
- **शैक्षणिक विकास**
  - धारानगरी को शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित किया।
- **स्थापत्य कार्य**
  - धार में **भोजशाला संस्कृत विद्यालय** की स्थापना करवाई।
  - भोजशाला में सरस्वती मंदिर का निर्माण कराया एवं **वाग्देवी प्रतिमा** की स्थापना की।
  - रायसेन में **भोजपुर शिव मंदिर** की स्थापना की।
  - भोपाल शहर की स्थापना की।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- चित्तौड़गढ़ में **त्रिभुवन नारायण मंदिर** का निर्माण कराया।
- उज्जैन में **महाकाल मंदिर** का निर्माण कराया।
- भोपाल में बड़ा तालाब बनवाया।
- **साइक्लोपीयन बांध** का निर्माण कराया।

निष्कर्ष

- **1055** ईस्वी में **भीम प्रथम एवं लक्ष्मीकर्ण** ने आपस में संधि करके धारा नगरी को लूटा एवं इसी के बाद राजा भोज बीमार हुए व अस्वस्थता के चलते उनकी मृत्यु हो गई।
- इनका शासनकाल राजनैतिक व सांस्कृतिक दृष्टि से **परमारों के उत्कर्ष का काल** माना जाता हैं।

जय सिम्हा

- इसे **जयसिंह प्रथम** भी कहा जाता है।
- **शासनकाल** = 1055-1070 ईस्वी
- इन्होंने कल्याणी के चालुक्य शासक **सोमेश्वर प्रथम** के पुत्र **विक्रमादित्य छठवें** की सहायता से अपनी राजधानी को **लक्ष्मीकर्ण एवं भीम प्रथम** से मुक्त कराया।
- बाद में यह **सोमेश्वर प्रथम** का आश्रित बन गया।

- जयसिम्हा के बाद **उदयादित्य, लक्ष्मणदेव, नरवरवर्मन, यशोवर्मन, जयवर्मन, अर्जुनबर्मन,** क्रमशः शासक हुए।
- अर्जुनवर्मन विद्वान एवं विद्या प्रेमी शासक था इसने **परिजातमंजरी** के लेखक **मदन एवं आसाराम** जैसे विद्वानों को संरक्षण दिया।
- अर्जुनवर्मन के बाद **देवपाल, जैमिनीदेव, जयवर्मन द्वितीय, महकलकदेव** क्रमशः शासक हुए।

महलकदेव

- यह मालवा के परमार वंश का **अंतिम शासक** था।
- इसी के समय **1305** में **अलाउद्दीन खिलजी** के **सेनापति अनाइल-मुल्क** ने इसे हराया एवं मालवा को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।
-

परमारकालीन मंदिर

- सरस्वती मंदिर (धार)
- ऊन मंदिर समूह (खजुराहो)
- धनेश्वर मंदिर (उज्जैन)
- भोजपुर शिव मंदिर (रायसेन)
- ओंकारेश्वर मंदिर (खंडवा)
- नीलकंठेश्वर मंदिर (विदिशा)
- सिद्धेश्वर मंदिर (नेमावर)

धनपाल

- ये वाक्पति मुंज एवं राजा भोज के समकालीन जैन विद्वान थे।
- इन्होंने संस्कृत में **तिलकमंजरी** नामक काव्य की रचना की है।
- इन्होंने राजा भोज को जैन धर्म के प्रति उदार शासक बताया है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

परमारकालीन साहित्य

क्रमांक	विद्वान	रचना
1	पद्मगुप्त / परिमल	नवसहसांकचरित
2	धनंजय	दशरूपक
3	धनक	यशोरूपक
4	धनपाल	तिलक मंजरी
5	देवसेन	दर्शन सागर
6	हलायुध	कविरहस्य
7	मदन	परिजातमंजरी
8	राजा भोज	आयुर्वेदसर्वस्व, सरस्वती कंठाभरण, समरांगण सूत्रधार

मध्यप्रदेश में कल्चुरि वंश

- छठवीं शताब्दी में गुप्त वंश की कमजोर हो रही स्थिति का लाभ उठाकर कल्चुरि राजवंश का उदय हुआ।
- कल्चुरी नाम से भारत में दो राजवंश थे।
  - **उतरी कलचुरी** = इनका शासन मध्यप्रदेश, राजस्थान के क्षेत्रों में था इन्हें **चेदि हैहय** भी कहा जाता था।
  - **दक्षिणी कलचुरी** = इनका शासन वर्तमान कर्नाटक में था।
- विभिन्न साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों में इन्हें चंद्र कुल से उत्पन्न **सोमवंशी क्षत्रिय** बताया गया है।
- कल्चुरी वंश की अनेक शाखाएं समय–समय पर अस्तित्व में आयीं जिनमें से कुछ शाखाएं मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के क्षेत्र में शासनरत रहीं जैसे –

महिष्मती के कल्चुरी

सामान्य परिचय

- **परिचय** = यह मध्य प्रदेश में कल्चुरी वंश की प्रमुख शाखा थी।
- **राजधानी** = महिष्मती
- **संस्थापक** = इस वंश के संस्थापक व प्रथम शासक के बारे में स्पष्ट जानकारी प्राप्त नहीं होती है।
- **प्रथम शासक** = कृष्णराज इस वंश प्रथम ज्ञात शासक था।

कृष्ण राज

- **परिचय** = यह महिष्मती के कलचुरी वंश का प्रथम ज्ञात शासक था।
- **शासनकाल** = 550-575 ईस्वी
- **संस्थापक** = इन्हें ही कलचुरी वंश की महिष्मति शाखा के संस्थापक के रूप में माना जाता है।

महाकवि दंडी की विख्यात रचना दसकुमारचरित के आठवें अध्याय के कल्चुरि राजवंश के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **राजधानी** = इसने **महिष्मती को राजधानी** बनाया एवं परमेश्वर की उपाधि धारण की।
- **सिक्के** = इसके चांदी के सिक्के बेसनगर, तेवर, पाटन से प्राप्त हुए हैं।

शंकरगढ

- परिचय = कृष्णराज का पुत्र एवं महिष्मति के कलचुरी वंश का शासक ।
- शासनकाल = 575-600 ईस्वी
- जानकारी = इसके बारे में जानकारी **अभोण एवं संखेड़ा ताम्रपत्र** से प्राप्त होती है।
- इसने **कल्चुरी संवत** चलाया ।

बुद्धराज

- **परिचय** =शंकरगढ़ का पुत्र एवं उत्तराधिकारी जो कलचुरी वंश की महिष्मति की शाखा का **अंतिम ज्ञात शासक** था।
- **शासनकाल** = 600-620 ईस्वी
- **चालुक्यों से संघर्ष**
  - **महाकूट अभिलेख** से जानकारी मिलती है कि चालुक्य शासक **मंगलेष** ने बुद्धराज को पराजित किया था।
  - आगे **मंगलेश एवं पुलकेशिन द्वितीय** के मध्य संघर्ष आरंभ हुआ जिसका लाभ उठाकर बुद्धराज ने कुछ समय तक और शासन किया।
  - कालांतर में पुलकेशिन द्वितीय ने मंगलेश को पराजित किया और बाद में बुद्धराज को भी पराजित किया और बुद्धराज के एक बड़े भू-भाग पर पुलकेशिन का आधिपत्य स्थापित हुआ।

⬇

- यहाँ से कल्चुरी वंश के पतन की प्रक्रिया आरंभ हुई और धीरे–धीरे यह राजवंश अपना अस्तित्व खो बैठा।
- चालुक्यों से पराजित होने के बाद बुद्धराज के वंशज महिष्मति को छोड़कर **तेवर** की तरफ चले गए एवं **त्रिपुरी के कल्चुरी वंश** की स्थापना हुई।

त्रिपुरी का कल्चुरि वंश

- चंदेलों के दक्षिण में त्रिपुरी के कल्चुरी वंश के शासकों का शासन विस्तृत था।
- इन्हें **"अमरकंटक के मंदिरों का निर्माता"** भी कहा जाता है।

वामराजदेव

- **अन्य नाम** = वापराजदेव
- **विशेष** = **सागर एवं छोटी देवरी अभिलेख** में इसे त्रिपुरी वंश का **प्रथम शासक** माना गया है।
- **राजधानी** = इसने **कालिंजर** पर विजय प्राप्त की एवं उसे अपनी राजधानी बनाया लेकिन बाद में इसने **त्रिपुरी** को अपनी नयी राजधानी बनाया।
- **उपाधि** = परम भट्टारक, महाराजाधिराज
- **क्षेत्र विस्तार**
  - बघेलखंड को जीता एवं उत्तर में गोमती से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक साम्राज्य विस्तार ।
  - इसने कालिंजर पर भी विजय प्राप्त की।

नोट = वामराजदेव के बाद तीन पीढ़ियों तक शासकों का कोई स्पष्ट उल्लेख प्राप्त नहीं होता है (700–750 AD)

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

शंकरगढ प्रथम

- शासनकाल = 750-775 ईस्वी
- **सागर एवं छोटी देवरी** से इसके शासन काल के दो अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

लक्ष्मणराज प्रथम

- **शासनकाल** = 825-850 ईस्वी
- **कालीतलाई अभिलेख** से जानकारी मिलती है कि इसने राष्ट्रकूटों की आधीनता स्वीकार की थी।
- इसने राजपूतों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए।

कोक्कल प्रथम

- **शासनकाल** = 850-908 ईस्वी
- **विशेष** = इसे त्रिपुरी के कल्चुरी वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- यह **महत्वाकांक्षी एवं प्रतापी शासक** था। इसी क्रम में इसने समकालीन शासकों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए जैसे–
  - चंदेल शासक **जयसिंह की पुत्री हट्ट**ा से विवाह किया।
  - राष्ट्रकूट शासक **कृष्ण द्वितीय** से अपनी पुत्री का विवाह किया।
  - इसने पाल शासकों से भी वैवाहिक संबंध स्थापित किए।
- इसने प्रतिहार नरेश **भोज** एवं उनके सामंतों को हराया।
- बंग, कोंकण एवं तरूष्क पर आधिपत्य किया। इसकी जानकारी हमें **युवराज देव प्रथम** के **बिल्हारी पाषाणलेख व वाराणसी ताम्रपत्र** से प्राप्त होती है।
- **बिल्हारी लेख** (जबलपुर) में इसे **समस्त पृथ्वी का विजेता** कहा गया है।

युवराजदेव प्रथम

- **परिचय** = त्रिपुरी के कल्चुरी वंश का प्रतापी शासक था।
- **शासनकाल** = 915-945 ईस्वी
- **उपाधि** = केयूरवर्ष और मालवा विजेता या उज्जैनी भुजंग (राजशेखर द्वारा प्रदत्त)
- **राजशेखर** इसी के दरबारी विद्वान थे।
- इसने भेड़ाघाट के **चौंसठ योगिनी मंदिर** का निर्माण कराया।
- इसने दमोह के **नोहटा में नोहलेश्वर मंदिर** का निर्माण करवाया।
- यह चंदेल शासक यशोवर्मन से पराजित हुआ लेकिन इसने लाट के शासकों को हराया था।
- इसके मंत्री **गोल्लक** का एक अभिलेख **बांधवगढ़** से मिला है।

राजशेखर के बारे में

- संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि एवं नाटककार।
- आरंभ में इनको गुर्जर प्रतिहारों का संरक्षण प्राप्त था ।
- बाद में इन्होंने कल्चुरी शासक **युवराज देव प्रथम** के दरबार में आश्रय लिया।
- इन्होंने **युवराजदेव प्रथम** को दो उपाधियां प्रदान की –
  - त्रिलिंगाधिपति
  - उज्जैनी भुजंग
- इनकी प्रमुख रचनायें निम्न हैं –
  - काव्यमीमांसा
  - कर्पूरमंजरी
  - बालभारत
  - बाल रामायण
  - विद्वशालभंजिका

लक्ष्मणदेव

- **परिचय** = युवराजदेव प्रथम का पुत्र एवं त्रिपुरी के कल्चुरि वंश विस्तारवादी शासक था।
- **शासनकाल** = 945-970 ईस्वी
- अपने पिता के समान प्रतापी शासक था।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- इसने भी साम्राज्य विस्तार पर बल दिया जिसकी जानकारी हमें **2 लेखों से प्राप्त होती है**–
  - बिल्हारी लेख
  - गौहरबा लेख
- **विस्तारवादी नीति पर बल जैसे** –
  - पूर्व में बंगाल, उड़ीसा तक विजय प्राप्त की।
  - यह उड़ीसा आक्रमण के समय **कालियानाग की रत्नजड़ित मूर्ति** उठा लाया था।
  - पांड्यों, लाटों एवं गुर्जरों पर विजय प्राप्त की।
  - कश्मीर पर विजय प्राप्त की।
- इसने अपनी पुत्री का विवाह चालुक्य नरेश **विक्रमादित्य चतुर्थ** से किया था।
- **वैद्यनाथ मठ** को दान दिया था।
- इसका पुत्र **शंकरगढ़ तृतीय** अगला शासक बना।

शंकरगढ तृतीय

- **परिचय** = लक्ष्मण देव का पुत्र एवं उत्तराधिकारी।
- **शासनकाल** = 970-980 ईस्वी
- यह चंदेलों के साथ एक युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ।

युवराजदेव द्वितीय

- **परिचय** = शंकरगढ़ तृतीय का छोटा भाई एवं त्रिपुरी के कल्चुरि वंश का शासक।
- **शासनकाल** = 980-990 ईस्वी
- **जानकारी** = इसके शासनकाल की जानकारी **बिल्हारी एवं गौहरवा लेख** से प्राप्त होती है।
- **गौहरबा लेख** = गौहरवा लेख में इसे **चेदिंद्र** अर्थात चेदीवंशीय राजाओं में चंद्र के समान बताया गया है।
- **वाक्पति मुंज से संघर्ष**
  - यह एक कमजोर शासक था अतः परमार नरेश **वाक्पति मुन्ज** ने इसे हराते हुए **त्रिपुरी** पर अधिकार कर लिया।
  - इसी बीच चालुक्य शासक **तैलप द्वितीय** ने मालवा पर आक्रमण कर दिया फलतः मजबूर होकर मुंज ने कल्चुरियों से संधि कर उनकी राजधानी को वापस लौटा दिया।

कोक्कल द्वितीय

- **शासनकाल** = 990-1041 ईस्वी
- इसके शासनकाल का एक अभिलेख **गुर्गी** से प्राप्त हुआ हैं।
- इसी के समय कल्चुरियों ने अपनी खोई शक्ति एवं प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त किया।
- इसने गुजरात पर आक्रमण कर **चालुक्य नरेश चामुंडराय** को हराया।

गांगेयदेव

- **परिचय** = कोक्कल-II का पुत्र एवं उत्तराधिकारी
- **शासन काल** = 1019-1041 AD
- इसके शासन के **दो अभिलेख** प्राप्त हुए हैं
  - पियावन (रीवा)
  - मुकुंदपुर (सतना)
- इसके राज्यारोहण के समय कल्चुरियों की स्थिति अधिक मजबूत नहीं थी।

गांगेयदेव की उपाधियाँ

- विक्रमादित्य(**खैरा लेख** में वर्णन)
- डाहल का शासन (अलबरूनी विवरण में वर्णन)
- विश्वजीत (**महोबा लेख** में वर्णन)
- परमेश्वर,
- महामंडलेश्वर

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **राजा भोज एवं विद्याधर** इसके प्रबल विरोधी थे।
- **परमार शासक राजा भोज से संबंध**
  - मित्रवत व्यवहार = राजा भोज, गांगेयदेव एवं राजेन्द चोल ने मिलकर कल्याणी के चालुक्य नरेश जयसिंह-II को हराया था।
  - शत्रुवत व्यवहार = राजा भोज ने गांगेयदेव को हराया था।
- **चंदेल शासक विद्याधर से संबंध**
  - विद्याधर ने गांगेयदेव की अधीनता स्वीकार की थी।
  - यह भी उल्लेख मिलता है कि गांगेयदेव, विद्याधर की गुरु के समान पूजा करता था।
- **1041** में **प्रयाग** में इसकी मृत्यु हो गयी।

लक्ष्मीकर्ण/कर्णदेव

सामान्य परिचय | शासन क्षेत्र | अभिलेख | सैन्य विजयें | सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

सामान्य परिचय

- **परिचय** = गांगेयदेव का पुत्र एवं कल्चुरी वंश का सबसे महत्वाकांक्षी, प्रतापी साम्राज्यवादी शासक।
- **शासन काल** = 1041-1073 ईस्वी
- **विवाह** = हूण कन्या आवल्ल देवी से विवाह किया
- **उपनाम** = हिंद का नेपोलियन/हिंदू नेपोलियन तथा कलिंगाधिपति
- **मृत्यु** = 1073

शासन क्षेत्र

- उत्तर में गंगा नदी से लेकर दक्षिण में महानदी तक।
- पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में बंगाल तक।

विजय अभियान

- पल्लवों, चोलो एवं कुंतलों पर विजय प्राप्त की।
- कलिंग विजय के पश्चात **कलिंगाधिपति** की उपाधि धारण की।
- पूर्व की ओर मगध के पाल शासकों एवं गौड़ वंश के शासकों को हराया।
- पाल शासक **विग्रहपाल** को हराया।
- **पिता की हार का बदला**
  - पहले **चालुक्य शासक भीम** को हराकर उससे संधि की एवं फिर दोनों की संयुक्त सेना ने **राजा भोज** पर आक्रमण कर धारानगरी को लूटा। इसकी जानकारी हमें **मेरुतुंगाचार्य की प्रबंध चिंतामणि** से मिलती है। **स्पष्ट है कि इसने आरंभ में आसपास के सभी राजाओं को हराया एवं चक्रवर्ती सम्राट की उपाधि धारण की। इन विजयों के निम्न परिणाम निकले–**
  - साम्राज्य का अतिशय विस्तार हुआ।
  - संपूर्ण शासन पर प्रभुत्व एवं नियंत्रण करना जटिल हो गया।
  - विद्रोह आरंभ हुए एवं कई क्षेत्र पुनः इसके हाथ से निकल गए।

अभिलेख

- इसके शासनकाल के 7/8 अभिलेख प्राप्त हुए हैं जैसे–
  - रीवा
  - सिमरा
  - बनारस
  - पैकौरे
  - गौहरबा
  - सारनाथ
- बंगाल एवं उत्तर प्रदेश में प्राप्त अभिलेख इन क्षेत्रों में इसके साम्राज्य विस्तार के बारे में बताते हैं।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

पराजय कहां–कहां –

- मालवा के परमार वंशीय शासक **जयसिंह प्रथम** ने अपने शत्रु **सोमेश्वर प्रथम** से मित्रता की एवं उसके पुत्र **विक्रमादित्य चतुर्थ** के सहयोग से लक्ष्मीकर्ण को हराया एवं अपनी राजधानी को मुक्त कराया।
- चंदेल शासक **कीर्तिवर्मन** ने लक्ष्मीकर्ण को हराया इसकी जानकारी हमें कृष्णमित्र के नाटक **प्रबोध चंद्रोदय** से मिलती है।
- पालों एवं सोलंकियों ने भी इसे हराया।
- **परमार शासक उदयादित्य से पराजय**
  - **उदयपुर प्रयाग प्रशस्ति** से जानकारी मिलती है कि **1070 ईस्वी** में लक्ष्मीकर्ण ने चालुक्य नरेष **सोमेश्वर** एवं **गंग नरेश उदयादित्य** से संधि कर मालवा पर आक्रमण किया एवं **परमार शासक जयसिंह** की हत्या कर दी।
  - बाद में लगभग **1073 ईस्वी** में मालवा के **परमार शासक उदयादित्य** ने अपनी शक्ति में वृद्धि कर **लक्ष्मीकर्ण** को पराजित किया।

सांस्कृतिक योगदान

- यह शैव मतानुयायी था । इसने **बनारस एवं अमरकंटक में कर्ण मंदिर** का निर्माण कराया।
- कटनी के निकट **पुष्पावती (बिलहरी)** नगरी बसाई।

यशकर्ण

- **परिचय** = यह लक्ष्मीकर्ण का पुत्र एवं अयोग्य शासक था। **शासनकाल** = 1073-1123 ईस्वी
- इसके समय कल्चुरियों का शासन बघेलखंड तक सीमित रह गया गया।

गयाकर्ण

- **परिचय** = यशकर्ण का पुत्र एवं कमजोर शासक ।
- **शासनकाल** = 1123-1151 ईस्वी
- **अभिलेख** = इसके दो अभिलेख तेवर व बहोरीबंद से प्राप्त हुए हैं।
- इसने चंदेल शासक नरेशवर्मन के दबाव में बघेलखंड भी छोड़ दिया था।
- इसी के समय छत्तीसगढ़ के कलचुरी भी इससे स्वतंत्र हो गए।
- इसका विवाह मालवा नरेश उदयादित्य की पुत्री **श्यामला देवी** से हुआ। साथ ही इसने मेवाड़ के शासक विजयसिंह की पुत्री **अल्हणदेवी** के साथ विवाह किया।
- इसके 2 पुत्र थे = नरसिंह, जयसिंह

नरसिंह

- यह गयाकर्ण का पुत्र था जिसने 1153 से 1163 तक शासन किया।
- इसके शासनकाल के अभिलेख **अल्हघाट, भेड़ाघाट एवं लाल पहाड़** से मिले हैं।

जयसिंह

- **गयाकर्ण** का पुत्र जो नरसिंह के बाद शासक बना।
- **शासन काल** = 1163-1188 ईस्वी।
- यह अयोग्य शासक था जिसे चंदेल शासक **परमर्दिदेव** ने हराया था।
- इसने अपनी पत्नी **गौशलदेवी** के नाम पर जबलपुर के निकट **गोसलपुर** नामक गांव बसाया।

विजयसिंह

- **परिचय** = जय सिंह का पुत्र एवं संभवतः कल्चुरी वंश का अंतिम शासक।
- **शासनकाल** = 1188-1210 ईस्वी

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **बटियागढ़ शिलालेख** से जानकारी मिलती है कि चंदेल शासक **त्रिलोक्यवर्मन** ने इस पर आक्रमण कर रीवा के आसपास के क्षेत्रों में विजय प्राप्त की।
- इसी के समय एक सामंत **सल्लक्षण** ने विद्रोह किया जिसका दमन इसके मंत्री **मलयसिंह** ने किया। जिसकी जानकारी हमे मलय सिंह के **रीवा अभिलेख** से प्राप्त होती है।
- यादव वंशीय शासक **जैतुगी प्रथम** ने इसे हराया व इसकी हत्या कर दी।
- इसकी मृत्यु के बाद कल्चुरी वंश का पतन हो गया।

नोट = त्रिपुरी के कल्चुरी वंश के अंतिम शासक को लेकर इतिहासकारों में मतैक्य नहीं है अधिकांश इतिहासकार **विजय सिंह** को ही इस वंश के अंतिम शासक के रूप में स्वीकारते हैं लेकिन कतिपय इतिहासकार विजयसिंह के उत्तराधिकारीयों के रूप में **अजयसिंह व त्रिलोक्यमल्ला** का भी उल्लेख करते हैं लेकिन इन्होंने कब कहां शासन किया यह ज्ञात नहीं है।

प्राचीनकाल में मध्यप्रदेश के अन्य राजवंश

नागवंश

- **दूसरी शताब्दी** ईस्वी में **ग्वालियर एवं विदिशा** के आस-पास के क्षेत्रों में एक नये राजवंश **नागवंश** का उदय हुआ।
- **संस्थापक** = वृषनाग
- विदिशा से नाग शासकों के **तांबे के सिक्के** प्राप्त हुए हैं जबकि ग्वालियर से नाग शासक **गणपति एवं भीम** के सिक्के प्राप्त हुए हैं।

आभीर वंश

- आरंभ में आभीर **सातवाहन वंश के अधीन** हुआ करते थे।
- सातवाहनों की कमजोर होती स्थिति का लाभ उठाकर आभीर ने **खानदेश में स्वतंत्र राज्य** की स्थापना की।
- **नासिक शिलालेख** से जानकारी मिलती है कि **ईश्वरसेन** इस वंश का संस्थापक था।
- बाद में इस वंश के शासकों ने मालवा तक अपना साम्राज्य विस्तार किया।
- बाद में इस वंश के सामंतों ने **वाकाटकों की आधीनता** स्वीकार कर ली।

वाकाटक वंश

- यह मध्यभारत में गुप्त शासकों के समकालीन राजवंश था।
- **शासनकाल** = तीसरी शताब्दी से पांचवी शताब्दी
- इस वंश के प्रमुख शासकों का वर्णन निम्न है–
- **विंध्यशक्ति**
  - वाकाटक राजवंश का **प्रथम शासक** एवं वाकाटकों का **आदिपुरूष।**
  - **वायुपुराण एंव अजंता अभिलेख** से इसके बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- **प्रवरसेन**
  - विंध्यशक्ति का पुत्र एवं वाकाटक वंश का प्रतापी शासक।
  - इसने **नागों की राजधानी विदिशा** पर आधिपत्य किया एवं नागों को अपने संरक्षण में लिया।
  - इसने **चार अश्वमेघ यज्ञों** का संपादन किया।
- **रूद्रसेन**
  - प्रवरसेन का पुत्र एवं वाकाटक वंश का शासक।
  - यह गुप्त शासक **समुद्रगुप्त के समकालीन** था।
  - इसका पुत्र **पृथ्वीसेन** अगला शासक बना।
- **पृथ्वीसेन**
  - रूद्रसेन का उत्तराधिकारी एवं वाकाटक वंश का शासक।
  - इसने **कुंतल राज्य पर विजय** प्राप्त कर वाकाटकों की शक्ति में वृद्धि की।
  - इसके बाद इसका पुत्र रूद्रसेन द्वितीय अगला शासक बना।
- **रूद्रसेन द्वितीय**
  - पृथ्वीसेन का पुत्र एवं वाकाटक वंश का शासक।
  - गुप्त शासक **चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त** का विवाह रूद्रसेन द्वितीय से किया था।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- इसकी अकाल मृत्यु के बाद कुछ समय तक प्रभावती गुप्त ने चंद्रगुप्त द्वितीय के संरक्षण में शासन कार्य संचालन किया।

- **प्रवरसेन द्वितीय**
  - इसका मूल नाम **दामोदर** सेन था।
  - इसने **सेतुबंध नामक ग्रंथ** की रचना की थी।
  - इसने अपनी राजधानी प्रवरसेन में बनायी जिसे **आधुनिक पवनार** भी कहा जाता है।
  - इसके ताम्र-पत्र **छिंदवाड़ा, सिवनी बैतूल एवं इंदौर** से प्राप्त हुए।

नोट = प्रवरसेन द्वितीय के बाद **नरेंद्रसेन पृथ्वीसेन** एवं **नरेंद्रसेन द्वितीय** क्रमशः शासक बने जिनके बारे में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त नहीं होती।

औलिकर वंश

- **चौथी शताब्दी** में प्राचीन **दशपुर (मंदसौर)** में मालवों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया था।
- **नरवर्मन** को इस वंश का प्रथम शासक माना जाता है जो गुप्त शासक **चंद्रगुप्त द्वितीय के समकालीन** था।
- इस वंश के शासक **बंधुवर्मन का शिलालेख मंदसौर** से प्राप्त हुआ है। जिसमें इसे (बंधुवर्मन) **कुमारगुप्त प्रथम के सामंत** के रूप में बताया गया है।
- **यशोवर्मन**
  - दशपुर के औलिकर वंश का प्रतापी शासक।
  - **मंदसौर अभिलेख** से इसकी उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।
  - इसने **मिहिरकुल** को पराजित किया था।
  - इसकी मृत्यु के बाद औलिकरों की स्थिति कमजोर होती चली गई एवं परवर्ती गुप्त शासकों ने मंदसौर क्षेत्र में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था।

मैत्रक वंश

- आरंभ में मैत्रक **गुप्त शासकों के सामंत** हुआ करता था।
- गुप्तों की कमजोर होती स्थिति का लाभ उठाकर **भट्टारक** नामक व्यक्ति ने **वल्लभी के मैत्रक वंश** की स्थापना की।
- इस वंश के शासक **महाराजा शिलादित्य प्रथम** ने पश्चिमी मालवा क्षेत्र तक शासन विस्तार किया था।
- इस वंश का अन्य शासक **ध्रुवसेन-II** हुआ जिसके **दो ताम्रलेख रतलाम** क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं।

मौखरी वंश

- गुप्तों के पतन के बाद **कन्नौज में हरिवर्मन** ने **मौखरी वंश** की स्थापना की।
- **प्रमुख शासक** = आदित्यवर्मन + ईवरवर्मन + ईशानवर्मा + शववर्मा
- **शववर्मा** का एक **ताम्रपत्र आसीरगढ़** से प्राप्त हुआ है जो पूर्वी निमाड़ में मौखरि वंश की उपस्थिति को इंगित करता है।
- **भोजदेव के बाड़ा दानपत्र** में यह जानकारी प्राप्त होती है कि **शववर्मा का बुंदेलखंड पर प्रत्यक्ष नियंत्रण** था।

वर्धन वंश

- इस वंश की स्थापना हरियाणा क्षेत्र में **नरवर्धन** ने की थी।
- इस वंश के एक शासक **प्रभाकरवर्मन का पुत्र हर्षवर्धन** हुआ।
- **ह्वेनसांग के यात्रा विवरण एवं हर्षचरित** से यह जानकारी प्राप्त होती है कि हर्षबर्धन अपनी बहन राजश्री को खोजते हुए **विंध्यांचल पर्वत तक** आ पहुँचा था।
- हर्षबर्धन ने **पूर्वी मालवा पर भी आधिपत्य** भी किया था।
- वल्लभी शासक **ध्रुवसेन तृतीय** को पराजित कर हर्षबर्धन ने पश्चिमी मालवा पर अधिकार कर लिया था।

शैल वंश

- **आठवीं शताब्दी** के आस-पास वर्तमान मध्यप्रदेश के **महाकौशल क्षेत्र में** शैल राजवंश का उद्भव हुआ।
- **बालाघाट के राघोली** से प्राप्त ताम्रपत्र से इस वंश की वंशावली का उल्लेख मिलता है। इसमें बताया गया है कि इस वंश का **प्रथम शासक श्रीवर्धन** था।
- श्रीबर्धन के पुत्र **पत्थुवर्धन** ने गुर्जर प्रदेशों में विजय प्राप्त की थी।
- इस वंश के शासक **जयवर्धन प्रथम** ने विंध्य के शासक को पराजित किया था।
- जयवर्धन के पुत्र **श्रीवर्धन द्वितीय** को **विंध्य का स्वामी** कहा गया है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

बोधि वंश

- **दूसरी–तीसरी** शताब्दी में **तेवर/त्रिपुरी (जबलपुर)** क्षेत्र में बोधि वंश की स्थापना हुई थी।
- **श्री बोधि, बसु बोधि, चंद्रबोधि, शिववोधि** इस वंश के प्रमुख शासक हैं।

मघ राजवंश

- मध्यप्रदेश के **बघेलखंड क्षेत्र** पर इस वंश का शासक था।
- इस वंश का प्रथम शासक **भीमसेन** था।
- इस वंश के अन्य शासक **भदमघ एवं शिवमघ** थे।
- मघवंशी शासकों के **सिक्के बांधवगढ़** से प्राप्त हुए हैं।

परिव्राजक वंश

- मध्यप्रदेश के **बुंदेलखंड क्षेत्र** से इस राजवंश का शासन स्थापित था।
- इस वंश का पहला **राजा देवादय** था।
- देवादय के उत्तराधिकारी **प्रभंजन, दामोदर और हस्तिन** हुए।
- हस्तिन इस वंश का प्रतापी शासक था। इसके **तीन ताम्रपत्र खोह, जबलपुर और मझगवां** से प्राप्त हुए हैं।
- हस्तिन का पुत्र **संक्षोभ** संभवतः इस वंश का अंतिम शासक था। संक्षोभ के **दो ताम्रपत्र बैतूल एवं खोह** से प्राप्त हुए हैं।

उच्चकल्प के राजवंश

- यह **परिव्राजक वंश के समकालीन** राजवंश था।
- इसका शासन क्षेत्र **उच्चकल्प अर्थात् ऊचहेरा** (सतना) के आस-पास के क्षेत्रों में विस्तृत था।
- इस वंश के प्रमुख शासक निम्न थे –
  - **ओघदेव (प्रथम शासक)**
  - कुमारदेव
  - जयस्वामिन
  - व्याघ्रदेव
  - जयनाथ
  - **शर्वनाथ (अंतिम शासक)**

मैकल का पांडव

- **शहडोल एवं अनूपपुर** (अमरकंटक क्षेत्र) में इस राजवंश का विस्तार था।
- **बसनी** से प्राप्त **राजा नागबल के अभिलेख** से इस वंश के शासकों की जानकारी प्राप्ति होती है।
- **प्रमुख शासक**
  - जयबल
  - बत्सराज
  - नागबल
  - भरतबल

****

VIDYA IAS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

मध्यकाल में मध्यप्रदेश का इतिहास

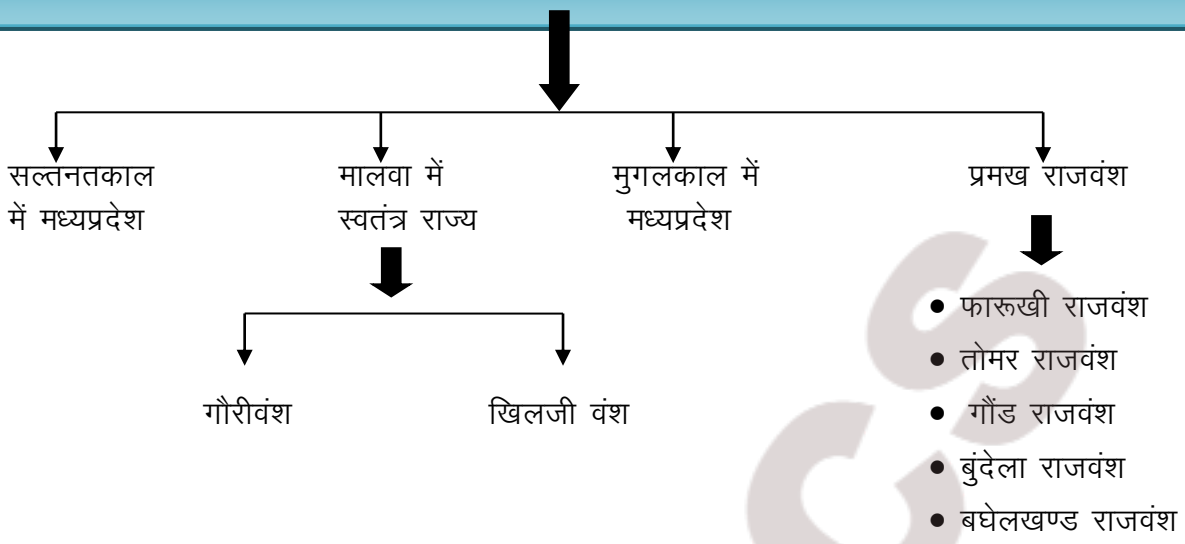

सल्तनत काल में मध्यप्रदेश का इतिहास

- दिल्ली सल्तनत से संबंधित मध्यप्रदेश के इतिहास को हम निम्न बिंदुओं के अंतर्गत देख सकते हैं –

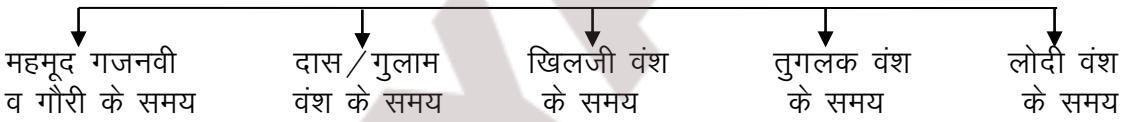

महमूद गजनवी और गौरी के समय

- **1019 ईस्वी** में महमूद गजनवी ने **कालिंजर एवं ग्वालियर** पर आक्रमण किया था।
- **1195-96** में मोहम्मद गोरी ने **ग्वालियर** पर आक्रमण किया था एवं इस समय ग्वालियर के शासक लोहांगदेव थे।

गुलाम वंश के समय

- **1196–97** में **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने मालवा क्षेत्र में आक्रमण किया हुआ व उज्जैन में लूटपाट की यद्यपि कि यह विजय अस्थायी ही थी।
- **1202–03** में **ऐबक** ने बुंदेलखंड क्षेत्र पर आक्रमण कर चंदेल शासक **परमार्दिदेव** को हराया एवं कालिंजर, खजुराहो, महोबा पर आधिपत्य स्थापित किया।
- **1231 इल्तुतमिश** ने ग्वालियर दुर्ग पर आक्रमण कर **गुर्जर प्रतिहारों** को पराजित किया था इस युद्ध में **नरवर्मन** ने तुर्कों की सहायता की थी। प्रसन्न होकर इल्तुतमिश ने **नरवर्मन** को शिवपुरी क्षेत्र प्रदान किया।
- **1233–34** में **इल्तुतमिश** ने कालिंजर के क्षेत्र पर विजय प्राप्त की।
- **1234** में **छहदेव** नामक राजपूत सरदार ने इल्तुतमिश को हराया था।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **1234–35** में **इल्तुतमिश** ने मालवा पर आक्रमण कर उज्जैन अवस्थित **महाकालेश्वर मंदिर** को लूटा अतः इल्तुतमिश पहला सुल्तान था जिसने महाकाल मंदिर को लूटा।
- **ऐबक की मृत्यु** के बाद **प्रतिहारों ने ग्वालियर** जबकि **चंदेलों ने कालिंजर** व पन्ना के **अजयगढ़ पर** आधिपत्य स्थापित कर लिया था।
- **नासिरुद्दीन महमूद** के समय उसके नायब–ए–ममलिकात **बलबन** ने मध्यप्रदेश में निम्न अभियान किए–
  - **1247** में बलबन ने कालिंजर पर आक्रमण कर बघेल शासक **दलकेश्वर एवं मल्केश्वर** को पराजित किया।
  - **1250** में बलवन ने परमार शासक **जैतुगिदेव** पर आक्रमण किया।
  - **1251** में बलवन ने उलूग खाँ के नेतृत्व में कालिंजर पर आक्रमण किया था।
  - **1251** में बलबन ने चंदेरी व नरवर के राजा **चहाड़देव** पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था।

खिलजी वंश के समय

- खिलजी वंश के संस्थापक **जलालुद्दीन खिलजी** ने मालवा पर आक्रमण कर **मांडू में लूटपाट** की थी।
- **1295** में जलालुद्दीन खिलजी **ग्वालियर में शिकार अभियान** पर आया एवं यहां यात्रियों के ठहरने के लिए एक भवन का निर्माण करवाया।
- **1292** में **अलाउद्दीन खिलजी** ने **चंदेरी एवं विदिशा (भेलसा)** पर आक्रमण कर लूटपाट की।
- **1292** में ही **अलाउद्दीन** ने परमार राजा **भोज द्वितीय** के समय मालवा पर आक्रमण किया था।
- **1294** में **अलाउद्दीन** देवगिरी पर अभियान को जाते समय मालवा से होकर ही गुजरा था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने **चंदेरी, विदिशा, उज्जैन, मांडू** आदि क्षेत्रों में लूटपाट की।
- **1305** में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सेनापति एवं मुल्तान के सूबेदार **आइन– उल–मुल्क** के नेतृत्व में मालवा पर आक्रमण कर **महलकदेव** को पराजित किया एवं मांडू पर अलाउद्दीन का आधिपत्य स्थापित हुआ।
- चंदेल शासक **हम्मीरवर्मन** की मृत्यु के बाद दमोह एवं जबलपुर क्षेत्र में भी अलाउद्दीन का आधिपत्य स्थापित हो जाता है। (जानकारी **सलैया ग्राम शिलालेख** से)

सलैया ग्राम शिलालेख

- दमोह में अवस्थित यह शिलालेख 1309 ईस्वी का है।
- इसमें **अलाउद्दीन खिलजी को सार्वभौम शासक** कहा गया है।
- इससे अलाउद्दीन की दमोह एवं जबलपुर क्षेत्रों में आधिपत्य की जानकारी मिलती है।

तुगलक वंश के समय

- फारसी भाषा में उत्कीर्ण **बटियागढ़ अभिलेख (दमोह)** से यह जानकारी प्राप्त होती है कि दमोह क्षेत्र पर **ग्यासुद्दीन तुगलक** का आधिपत्य था।
- **मोहम्मद बिन तुगलक** द्वारा बटियागढ़ (दमोह) में प्राणियों हेतु गोमठ, बावड़ी एवं बगीचा बनवाए जाने का उल्लेख मिलता है।
- उल्लेख मिलता है कि दक्षिण विजय पर जाते समय **मोहम्मद बिन तुगलक** ने **धार में किले** का निर्माण करवाया था।
- **फिरोजशाह तुगलक** के बारे में विवरण **दुलचीपुर/हुलनीपुर (सागर)** से प्राप्त अभिलेख में मिलता है।
- फिरोजशाह तुगलक के पुत्र **मोहम्मद शाह** ने 1390 में **दिलावर खां** को मालवा में सूबेदार नियुक्त किया जिसने आगे चलकर मालवा में **स्वतंत्र मुस्लिम राजवंश** की स्थापना की।

लोदी वंश के समय

- **सिकंदर लोदी** ने तोमर शासक **मानसिंह** को हराया था।
- **इब्राहिम लोदी** ने **1517** में तोमर वंश के शासक **विक्रमजीत** को हराया एवं उसे अपनी आधीनता स्वीकार कराई।
- विक्रमाजीत को पराजित करने के बाद इब्राहिम लोदी ने **तातार खाँ** को ग्वालियर का किलेदार बनाया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- विक्रमजीत ने इब्राहिम लोदी के साथ मिलकर पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर के विरुद्ध भागीदारी की।
- पानीपत के प्रथम युद्ध में **इब्राहिम लोदी** की पराजय हुई साथ ही **विक्रमजीत** भी मारा गया और ग्वालियर पर मुगलों का आधिपत्य स्थापित हुआ।

मालवा में स्वतंत्र मुस्लिम राज्य की स्थापना

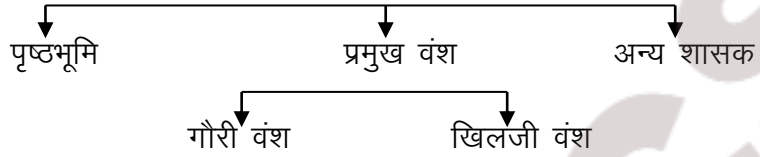

पृष्ठभूमि

- राजपूत काल में मालवा पर परमारों का शासन था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सेनापति **आइन–उल–मुल्क** के नेतृत्व में मालवा पर आक्रमण कर अंतिम परमार शासक **महलकदेव** को पराजित कर मालवा को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।
- कालांतर में दिल्ली में खिलजियों के बाद तुगलकों का शासन स्थापित हुआ। **फिरोज शाह तुगलक** ने **हुसैन खान** नामक व्यक्ति को **दिलावर खान** की उपाधि प्रदान की।
- **दिलावर खान** को आगे चलकर 1390 में फिरोज़ शाह तुगलक के पुत्र **नसिरूउद्दीन मोहम्मदशाह तृतीय** ने मालवा का सूबेदार नियुक्त किया।
- **1398** में नसिरुद्दीन महमूद के समय **तैमूरलंग ने भारत पर** आक्रमण किया एवं नसीरुद्दीन महमूद भागकर मालवा आ गया एवं **दिलावर खां** के यहां शरण ली।
- दिलावर खान ने इसे अत्यधिक सम्मान प्रदान किया व संप्रभु शासक माना। 1398–1401 तक नसिरुद्दीन मालवा में रहा।
- **नसीरुद्दीन महमूद** के मालवा के चले जाने के पश्चात् दिलावर खाँ मालवा में **स्वतंत्र मुस्लिम राज्य** की स्थापना की।

मालवा का गौरी वंश

- यह मालवा का स्वतंत्र मुस्लिम राजवंश था।
- **संस्थापक** = दिलावर खाँ गौरी

प्रमुख शासक
- दिलावर खाँ गौरी
- हुशंगशाह गोरी
- मोहम्मदशाह गौरी

दिलावर खाँ गौरी

- **परिचय** = मालवा में स्वतंत्र मुस्लिम राज्य का संस्थापक (गौरीवंश)
- **वास्तविक नाम** = हुसैन खान या आमीन खान
- **शासनकाल** = 1401-1486 ईस्वी
- **वंश** = यह अपनी माता की ओर से दमिश्क के सुल्तान **शिहाबुद्दीन गौरी** का वंशज था।
- **फरिश्ता** के अनुसार **दिलावर खाँ** का पिता गौर प्रदेश का निवासी था यानी दिलावर **विदेशी तुर्क** था।
- इसने अपने **पुत्र अल्प खाँ** के कहने पर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की और **धार को अपनी राजधानी** बनाया।
- खानदेश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करते हुए अपनी **पुत्री का विवाह मलिक रजा फारूखी** से किया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

हुशंगशाह

हुशंगशाह का मकबरा
- यह मांडू में अवस्थित है।
- यह सफेद संगमरमर से निर्मित भारत की पहली इमारत है।
- इसका निर्माण महमूद खिलजी ने करवाया।

- **परिचय** = दिलावर खान का पुत्र एवं उत्तराधिकारी।
- **शासनकाल** = 1406-1435
- **वास्तविक नाम** = अल्प खाँ
- **राजधानी** = इसने अपनी राजधानी **धार से मांडू** स्थानांतरित की
- **गुरू** = यह सूफी संत **शेख बुरहानुद्दीन** का शिष्य था।
- **कार्य**
  - मांडू में एक किला बनवाया जिसमें **12 दरवाजे** हैं जिसमें से **दिल्ली दरवाजा** सबसे प्रमुख है।
  - होशंगाबाद नगर बसाया एवं **हिंडोला महल** का निर्माण कराया।
  - राजपूतों को मालवा में बसने के लिए प्रोत्साहित किया।
  - **नरदेव सोनी (जैन)** को अपना खजांची बनाया।
  - इसने भोपाल पर आक्रमण कर राजा भोज द्वारा निर्मित झील को ध्वस्त किया।
- **1407** में गुजरात के शासक **मुजफ्फरशाह** ने मालवा पर आक्रमण कर हुशंगशाह को पराजित किया किंतु मालवा में हो रही अव्यवस्था के चलते हुशंगशाह को कैद से मुक्त कर दिया गया।
- हुशंगशाह ने **1420** में जाजनगर अभियान के दौरान खेरला एवं **1423** में गागरोन के किलों को जीता लेकिन **1428** में **अहमदशाह बहमनी** ने खेरला पर आक्रमण कर इसे पराजित किया।
- **जुलाई 1435** में इसकी मृत्यु हो गई।

मोहम्मद गौरी

- इसका वास्तविक नाम **गजनी खाँ** था।
- यह हुशंगशाह की मृत्यु के बाद अल्पकाल के लिए शासक बना।
- इसने अपना वजीर **महमूद खां खिलजी** को बनाया था।
- यह अयोग्य एवं निरंकुश शासक था अतः इसके वजीर **महमूद खाँ खिलजी** ने अपने सहयोगी **मलिक मगीस** के साथ मिलकर इसकी हत्या कर दी एवं नए वंश **खिलजी** वंश की स्थापना की।

मालवा का खिलजी वंश

प्रमुख शासक
- **महमूद खिलजी**
- **ग्यासुद्दीन खिलजी**
- **नासिरुद्दीन नादिरशाह**
- **महमूद खिलजी द्वितीय**

- यह मालवा का स्वतंत्र मुस्लिम राजवंश था।
- **संस्थापक** = महमूद खिलजी

महमूद खिलजी

- **परिचय** = मालवा के खिलजी वंश का संस्थापक, योग्य, शक्तिशाली एवं प्रतापी शासक था।
- मिस्र के खलीफा ने इसकी स्थिति को मान्यता प्रदान की।
- इसने **मुशाहिर–उल–मुल्क** को अपना वजीर बनाया।
- **सैन्य उपलब्धियाँ**
  - गुजरात के **अहमदशाह प्रथम** से युद्ध किया।
  - बहमनी शासक **अहमदशाह तृतीय** से युद्ध किया।
  - मेवाड़ के शासक **राणा कुंभा** से संघर्ष किया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **अन्य उपलब्धियां**
  - मालवा के गौरव को चरमोत्कर्ष पर पहुंचाया ।
  - मांडू में चिकित्सालय एवं आवासीय विद्यालय बनवाया।
  - जैन व्यापारियों को संरक्षण दिया।
  - मांडू में **हुशंगशाह का मकबरा** बनवाया।
  - **अशर्फी महल** का निर्माण कराया जो कि एक मदरसा था।
  - हुशंगशाह द्वारा आरंभ किए गए जामा मस्जिद के निर्माण कार्य को पूरा कराया।

मेवाड़ के शासक राणा कुंभा से इसने संघर्ष किया। जिसमें दोनों पक्ष अपनी–अपनी विजय का दावा करते हैं। विजय के उपलक्ष्य में राणा कुंभा ने **चित्तौड़ में विजय स्तंभ** जबकि महमूद खिलजी ने **मांडू में सात मंजिला भवन** का निर्माण करवाया।

ग्यासुद्दीन खिलजी

- **परिचय** = महमूद खिलजी का पुत्र एवं उत्तराधिकारी।
- **शासनकाल** = 1469–15 ईस्वी
- **अन्य नाम** = गियाथशाह / ग्यासशाह
- **प्रवृत्ति** = यह अत्यंत ही विलासी प्रवृत्ति का शासक था। उल्लेख मिलता है इसके दरबार में 16000 दासियां थीं।
- **निर्माण कार्य**
  - **चंपा बावड़ी** का निर्माण करवाया।
  - **जहाज महल** का निर्माण करवाया जो **कपूर व मुंज तालाब** के मध्य स्थित है।
- इसके पुत्र **नासिरुद्दीन नासिरशाह** ने जहर देकर इसकी हत्या कर दी।

जहाज महल का निर्माण मूलतः राजा भोज ने करवाया लेकिन इसे नए रूप में परिवर्तित गयासुद्दीन खिलजी ने करवाया

नासिरुद्दीन नासिरशाह

- **परिचय** = ग्यासुद्दीन खिलजी का पुत्र एवं उत्तराधिकारी (1501–1510)
- यह अल्पकाल के लिए शासक रहा।
- इसने उज्जैन में **कालियादेह महल** का निर्माण करवाया।
- इसी के समय **ईश्वर सूरि** नामक कवि ने **'ललिता चरित्र'** नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- **1510** में बुखार के कारण इसकी मृत्यु हो गई।

महमूदशाह

- **परिचय** = यह मालवा के खिलजी वंश का अंतिम शासक था।
- **अन्य नाम** = महमूद खिलजी–II एवं आजम हुमायूं
- **शासनकाल** = 1530-1531
- इसने मुसलमान अमीरों से अपनी रक्षा के लिए **रायचंद पुरलिया** को **मेंदिनीराय** की उपाधि प्रदान की एवं उसे अपना वजीर बनाया।
- मेंदिनीराय ने चंदेरी में विद्रोह का दमन कर चंदेरी पर आधिपत्य किया।
- बाद में **मेंदिनीराय** के बढ़ते प्रभाव से छुटकारा पाने के लिए इसने **गुजरात के शासक बहादुर शाह** की मदद ली लेकिन बाद में इसके संबंध बहादुर शाह से खराब हो गए।
- अतः बहादुर शाह ने मालवा पर आक्रमण कर उसे गुजरात के अधीन कर लिया। **(1531)**
- इस प्रकार मालवा में खिलजी वंश का पतन हो गया

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

मालवा के अन्य शासक

बहादुर शाह

- इसने **1531–37** तक मालवा को अपने अधीन रखा।
- **1535** में **हुमायूं एवं बहादुरशांह** के बीच मंदसौर में युद्ध हुआ एवं इस युद्ध में **हुमायूं** ने बहादुरशाह को पराजित कर मालवा पर अधिकार किया लेकिन शीघ्र ही बाजबहादुर ने पुनः मालवा पर अधिकार कर लिया।
- **1537** में बहादुरशाह की मृत्यु हो जाती है।

⬇

बहादुरशाह की मृत्यु से गुजरात की राजनीति में अव्यवस्था उत्पन्न हुई इसी क्रम में गुजरात के भावी शासक **इमादुलमुल्क** ने **1537** में **मल्लू खाँ** को **कादिर खान** की उपाधि प्रदान कर मालवा का स्वतंत्र शासक बनने की अनुमति प्रदान की।

कादिर खाँ

- इसका मूल नाम मल्लू खाँ था
- **शासनकाल** = 1537-1542
- इसी के समय **शेरशाह** ने उत्तर भारत में अपनी स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से मालवा पर आक्रमण किया था।
- कादिर शाह **शेरशाह के आक्रमण** से डरकर गुजरात भाग गया था।
- इसके बाद शेरशाह का मालवा पर आधिपत्य हुआ एवं उसने **शुजायत खाँ** को मालवा में सूबेदार बनाया और वापस चला गया।

शुजायत खाँ

- **परिचय** = यह मूलतः अफगानी था जिसे शेरशाह ने मालवा का सूबेदार बनाया था।
- **शासन काल** = 1542–1556
- मालवा का अगला शासक इसका पुत्र **बाजबहादुर** बना।

बाजबहादुर

- **परिचय** = शुजायत खान की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बाजबहादुर मालवा सल्तनत का अगला शासक बना।
- **मूल नाम** = वायजीद खाँ
- **शासनकाल** = 1556–1561 ईस्वी
- **राजधानी** = सारंगपुर (राजगढ़)
- इसे गौंड शासिका **दुर्गावती** ने कई बार हराया अतः इसने साम्राज्य विस्तार की भावना को त्याग दिया एवं यह संगीत एवं नृत्य कलाओं में व्यस्त हो गया।
- **विवाह** = रानी रूपमती से
- रानी रूपमती के लिए इसने **रेवा कुंड व रूपमती महल** का निर्माण करवाया।
- इसने मुगलों के साथ **सारंगपुर का युद्ध** लड़ा एवं पराजित होने पर दक्षिण की ओर भाग गया।

सारंगपुर युद्ध

- 1561 में बाज बहादुर और अकबर के सेनापति अधम खाँ के मध्य यह युद्ध हुआ।
- बाजबहादुर पराजित हुआ एवं दक्षिण की ओर भाग गया
- रानी रूपमती ने अपने सतीत्व की रक्षा हेतु अंगूठी में लगे हीरे को खाकर अपनी जान दे दी।
- **परिणाम** = मालवा पर मुगल आधिपत्य स्थापित हुआ।

VIDYA ICS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- बाद में दक्षिण के राजाओं की सहायता से बाजबहादुर ने **पुनः मालवा पर अधिकार** कर लिया एवं अधम खां को भगा दिया।
- अकबर ने पुनः **पीर मोहम्मद** के नेतृत्व में सेना भेजी एवं बाजबहादुर का पीछा किया इसी क्रम में **नर्मदा में गिरकर पीर मोहम्मद** की मृत्यु हो गई लेकिन मुगल सेना का मालवा पर कब्जा हो गया साथ ही बाजबहादुर ने भी मुगल आधिपत्य स्वीकार लिया।
- उल्लेख मिलता है कि बाद में रानी रूपमती की कब्र पर वियोग में बाजबहादुर की मृत्यु हो गई।
- बाद में अकबर को इस आक्रमण का पछतावा हुआ उसने **सारंगपुर** में रूपमती एवं बाज बहादुर की कब्र बनवाई।
- बाज बहादुर की कब्र पर **'आशिक–ए–सादिक'** एवं रूपमती की कब्र पर ''**शहीद–ए–वफा**'' लिखवाया।

मुगल काल में मध्यप्रदेश

- पानीपत के प्रथम युद्ध के पश्चात भारत में मुगल सत्ता की स्थापना हुई एवं इसका प्रभाव मध्यप्रदेश में भी रहा जिसे हम निम्न बिंदुओं के अंतर्गत देख सकते हैं

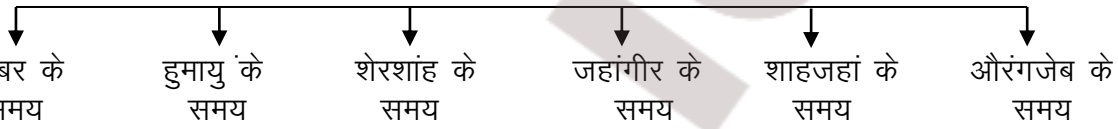

बाबर के समय

- पानीपत के प्रथम युद्ध में ग्वालियर के शासक **विक्रमजीत सिंह** ने इब्राहिम लोदी का बाबर के विरुद्ध साथ दिया था। **विक्रमजीत** मारा गया एवं **कोहिनूर हीरा** मुगलों को प्राप्त हुआ।
- पानीपत के प्रथम युद्ध के बाद **बाबर ने ग्वालियर विजय** की एवं ग्वालियर के तात्कालीन शासक **तातार खान** को अपने अधीन किया।
- बघेलखंड के शासक **वीरसिंहदेव** ने खानवा के युद्ध में **राणा सांगा** का साथ दिया लेकिन बाद में उसने **बाबर** से मित्रता कर ली थी। वीरसिंहदेव का पुत्र **वीरभान** हुआ।
- बाबर ने **1528** में चंदेरी के युद्ध में मेंदिनीराय को हराकर अपने पुत्र **हुमायूं व कामरान** का विवाह मेंदिनीराय की पुत्रियों से किया।

हुंमायू के समय

- हुमायूं ने ही ग्वालियर से विश्व प्रसिद्ध **कोहिनूर हीरे** की प्राप्ति की थी।
- हुमायूं ने मालवा में गुजरात के शासक बहादुर शाह की शासन स्थापना को चुनौती दी एवं **1535** में **मंदसौर के युद्ध** में बहादुरशाह को पराजित कर मालवा एवं मांडू पर आधिपत्य किया लेकिन यह विजय अस्थायी थी क्योंकि बहादुरशाह ने कुछ समय पश्चात् **पुनः मालवा एवं माण्डू पर आधिपत्य** कर लिया।
- वीरसिंहदेव के पुत्र **वीरभान** ने चौसा के युद्ध में हुमायूं की मदद की थी एवं युद्ध में रसद सामग्री पहुंचाने का कार्य दिया। वीरभान का पुत्र **रामचंद्र** हुआ जो अकबर के समकालीन था।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

शेरशाह सूरी के समय

- **1542** में शेरशाह ने मालवा में कादिर खाँ पर विजय प्राप्त कर **शुजायत खाँ** नामक व्यक्ति को यहां का प्रमुख बनाया।
- **1542** में ही मालवा विजय के दौरान शेरशाह ने ग्वालियर पर विजय प्राप्त की।
- **1543** में शेरशाह ने रायसेन के किले पर आक्रमण कर **पूरनमल** हत्या की एवं रायसेन पर आधिपत्य स्थापित किया। रायसेन विजय को **शेरशाह के चरित्र पर कलंक** माना जाता है।
- शेरशाह सूरी ने **आगरा से बुरहानपुर** तक सड़क निर्माण करवाया था।
- **1545** में शेरशाह ने **कालिंजर पर आक्रमण** किया था। इसी समय **उक्का नामक आग्नेयास्त्र** चलाने के दौरान शेरशाह सूरी की मृत्यु हो गई।

अकबर के समय

- **1561** में अकबर ने मुगल सेनापति **अधम खां** के नेतृत्व में सेना भेजकर मालवा पर आधिपत्य का प्रयास किया एवं **1564** तक मालवा पर मुगलों का पूर्ण प्रभुत्व स्थापित हुआ।
- **1564** में अकबर ने **आसफ खान** के नेतृत्व में सेना भेजकर रानी दुर्गावती को पराजित कर गोंडवाना पर मुगल आधिपत्य स्थापित किया।
- **1601** में अकबर ने अपना अंतिम विजय अभियान **असीरगढ़ के मीरन बहादुर** के विरुद्ध किया एवं खानदेश मुगल साम्राज्य के अधीन हो गया एवं अकबर ने **शहजादा दानियाल** को यहां का प्रशासक नियुक्त किया।
- अकबर के समकालीन **बघेलखंड के शासक रामचंद्र** थे। अकबर ने रामचंद्र के दरबार से ही **तानसेन** को बुलाया था।

जहांगीर के समय

- जहांगीर के मित्र **वीरसिंह बुंदेला** ने **अबुल फजल** की हत्या की साथ ही ओरछा में जहांगीर के लिए **जहांगीर महल** का निर्माण करवाया।
- **1610** में रीवा के **राजा विक्रमादित्य** ने विद्रोह किया जिसका दमन **राजा मानसिंह के नेतृत्व में जहांगीर** ने करवाया।

शाहजहां के समय

- **1630–32** तक शाहजहां **बुरहानपुर** में रहा और **बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा** के विरुद्ध सैन्य गतिविधियों का संचालन करता रहा।
- शाहजहां की पत्नी **मुमताज** की मृत्यु **1631** में **बुरहानपुर** में ही हुई।
- मुमताज की प्रारंभिक कब्र **बुरहानपुर** में ही बनवाई गई जिसे बाद में संभवतः **1652** में **आगरा** में स्थानांतरित कर दिया गया।
- **1632** में मालवा में भील जमींदार **भागीरथ भील** का विद्रोह हुआ जिसका दमन मालवा के मुगल सूबेदार **नासिर खान** के नेतृत्व में शाहजहां ने करवाया।
- इसी के समय ओरछा मुगल साम्राज्य में शामिल हुआ।
- इसके शासनकाल के अंत में **उत्तराधिकार का युद्ध** हुआ। इसी क्रम में उज्जैन के निकट **1658** में **धरमत का युद्ध** हुआ जिसमें **औरंगजेब ने मुराद** को हराया था।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

औरंगजेब के समय

- बुंदेला सरदार **चंपतराय** ने उत्तराधिकार के युद्ध में औरंगजेब का सहयोग दिया लेकिन बाद में यह औरंगजेब के विरोधी हो गए।
- चंपतराय के पुत्र **राजा छत्रसाल** की भी औरंगजेब से शत्रुता बनी रही।
- औरंगजेब ने गोंड राज्य की राजधानी **देवगढ़** का नाम बदलकर **रामगढ़** कर दिया था।
- औरंगजेब के शासनकाल में ही **मालवा में मराठों का प्रथम आक्रमण** हुआ ।
- **1707** में औरंगजेब की मृत्यु के बाद बहादुरशाह मुगल बादशाह बना इसके बाद धीरे–धीरे मुगलों की सत्ता मध्यप्रदेश से समाप्त हो गई एवं मराठों का प्रभुत्व स्थापित हुआ।

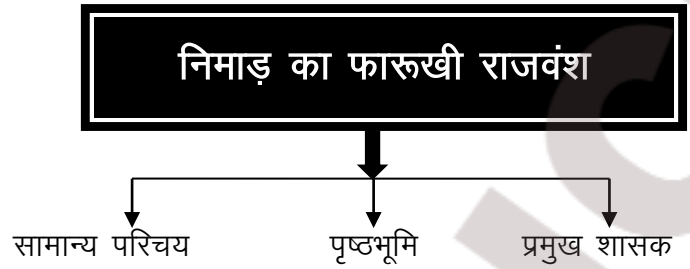

सामान्य परिचय

- **परिचय** = यह मध्यकाल में म.प्र. का प्रमुख मुस्लिम राजवंश था।
- **शासनक्षेत्र** = खानदेश
- **राजधानी** = बुरहानपुर
- **संस्थापक** = मलिक अहमद रजा
- **शासन काल** = 1398–1601
- नाम करण = चूंकि मलिक अहमद रजा ने **खलीफा उमर–फारूख** से अपना संबंध स्थापित किया अतः यह वंश फारूखी वंश कहलाया।

मध्यकाल में मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग यानी बुरहानपुर जिले को खानदेश के नाम से जाना जाता था। जहाँ फारूखी राजवंश ने शासन किया।

पृष्ठभूमि

- फिरोजशाह तुगलक ने 1382 ईस्वी में मलिक अहमद रजा को **थालनेर एवं करौंद** का प्रमुख बनाया था।
- **1398** में तैमूर के हमले के बाद फैली अव्यवस्था का लाभ उठाकर **मलिक अहमद रजा** ने अपनी स्वतंत्रता घोषित की और **फारूखी राजवंश की स्थापना** की।

मलिक अहमद रजा

- यह निमाड़ के फारूखी वंश का संस्थापक था।
- आरंभ में ये करौंद एवं थालनेर के सूबेदार थे।
- इसने **1398 में फारुखी वंश** की स्थापना की।
- अपनी स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से मालवा के सूबेदार **दिलावर खान गौरी** की बेटी से अपने बेटे **मलिक नासिर** का विवाह किया जबकि अपनी बेटी का विवाह **दिलावर खान के बेटे अल्प खाँ** (हुशंगशाह) से किया
- **1399** में इसकी मृत्यु हो गई ।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

मलिक नासिर

- **परिचय** = यह मलिक अहमद रजा का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। (**1399–1437**)
- **गुरू** = इसके गुरु **शेख जैनुद्दीन** थे।
- **मुख्यालय** = अपनी स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से इसने छलपूर्वक खानदेश के पश्चिम में स्थित **असीरगढ़ दुर्ग** को जीतकर खानदेश का मुख्यालय बनाया।
- **स्थापना** = अपने गुरु की सलाह पर इसने **जैनाबाद तथा बुरहानपुर** नगरों की स्थापना की। बुरहानपुर का नाम **सूफी संत शेख बुरहानुद्दीन** के नाम पर रखा गया। कालांतर में अपने गुरु के कहने पर ही मलिक नासिर ने **बुरहानपुर को अपनी राजधानी** बनाया।
- **उपाधि** = गुजरात के सुल्तान ने मलिक नासिर को **खान की उपाधि** दी तब से फारूखी शासक खान एवं उनके द्वारा शासित प्रदेश को **खानदेश** कहा जाने लगा।

मलिक नासिर के बाद **मीरन आदिल खाँ (1437–1441)** एवं **मीरन मुबारक खान (1441–1457)** खानदेश के शासक बने जिनके बारे में कोई विशेष उपलब्धि नहीं मिलती है।

आदिल खान–II

- **परिचय** = यह फारूखी वंश का कुशल एवं योग्य शासक था।
- **शासनकाल** = 1457 से 1501
- इसने **बुरहानपुर के किले** का निर्माण कराया एवं असीरगढ़ के किले में चाहरदीवारी का निर्माण कराया।
- इसी के समय व्यापारिक केंद्र के रूप में **बुरहानपुर** का उदय हुआ।
- इसने **सैयद कमालुद्दीन** एवं **मौलाना शाह बुखारी** जैसे सूफी संतों को संरक्षण प्रदान किया।
- इसने गुजरात के **अहमद खान** को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

नोट = आदिल खान द्वितीय की मृत्यु के बाद गुजरात के शासक **महमूद बेगड़ा** ने **अहमद खान** को **आदिल खान तृतीय के नाम से गद्दी पर बैठाया** जिसने 1520 तक शासन किया।

मीरन मोहम्मदशाह

- **परिचय** = यह आदिल खान तृतीय का उत्तराधिकारी था।
- **शासनकाल** = 1520–1537
- इसने गुजरात के शासक **बहादुरशाह** को मालवा एवं गुजरात विजय से सहायता दी क्योंकि मालवा एवं गुजरात को हुमायूं ने जीत लिया था।
- इसका विवाह **बहादुरशाह की बहन** से हुआ था।
- इसी के समय **रुकैया बैगम** ने बुरहानपुर की पहली **जामा मस्जिद** के रूप में **बीबी की मस्जिद** का निर्माण कराया।

मीरन मुबारकशाह

- **परिचय** = यह मीरन मोहम्मदशाह का उत्तराधिकारी था।
- **शासनकाल** = 1537–1566
- इसी के समय 1561 में मालवा पर मुगलों का आधिपत्य हुआ फलतः मालवा के शासक **बाजबहादुर** ने इसके यहां शरण ली।
- मुगलों के आक्रमण के भय से बचने हेतु इसने अपनी **पुत्री का विवाह अकबर से** किया एवं इस तरह मुगलों का खतरा खानदेश से टल गया।
- इसके बाद कुछ समय के लिए **हसन खान** शासक बना एवं उसके बाद **रजा अली खाँ** शासक बना।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

रजा अली खान

- **शासनकाल** = 1570–1597
- यह मुगलों की तरफ से **बहमनियों** के खिलाफ लड़ते हुए मारा गया।

बहादुरशाह

- यह निमाड़ के फारूखी वंश का **अंतिम शासक** था जिसने **1597 से 1601** तक शासन किया।
- इसी के समय अकबर ने असीरगढ़ पर हमला किया एवं **फरवरी 1601** में असीरगढ़ पर अकबर का आधिपत्य हो गया।

नोट = असीरगढ़ पर विजयोपरांत अकबर ने अपने पुत्र शहजादा **दानियाल** को खानदेश का जिम्मा सौंपा और खानदेश का नाम **दानदेश** कर दिया।

तोमर राजवंश

- **परिचय** = यह राजवंश ग्वालियर और उसके आसपास के क्षेत्रों में विस्तृत था।
- **स्थापना** = उत्तर में तैमूरलंग के आक्रमण का लाभ उठाकर 14वीं शताब्दी **(1388)** में **वीरसिंहदेव तोमर** ने तोमर वंश की स्थापना की।

वीरसिंहदेव
↓
उद्धरणदेव
↓
विक्रमदेव
↓
गणपति
↓
डूंगरदेव
↓
कीर्तिसिंह
↓
कल्याणमल्ल
↓
मानसिंह
↓
विक्रमदित्य
↓
रामसिंह

वीरसिंहदेव

- यह स्वतंत्र तोमर वंश का संस्थापक था। **(1388)**
- इसने **1394** में **ग्वालियर** पर अधिकार किया।
- इसने दिल्ली के सुल्तान **नासिरुद्दीन मोहम्मद शाह** को हराया।
- **1324** में इसी के समय मालवा के **हुशंगशाह** ने **ग्वालियर** पर आक्रमण किया था।
- इनके बारे में उल्लेख मिलता है कि इन्होंने **वीरसिंहावलोक** एवं **दुर्गाभक्ति तरंगिणी** नामक ग्रंथों की रचना की।

विक्रमदेव

- विक्रमदेव के समय **नासिरुद्दीन महमूद** के सेनापति **मल्लू इकबाल** ने ग्वालियर पर आक्रमण किया था परंतु वह असफल रहा।
- विक्रमदेव का एक अभिलेख **मुरैना के मितावली** से प्राप्त हुआ है।

डूंगरदेव

- यह तोमर वंश का महत्वाकांक्षी एवं योग्य शासक था।
- इसने दतिया के भांडेर पर आक्रमण कर **कालपी के शासक मुबारक खाँ** को हराया ।
- जौनपुर के शासकों के सहयोग से इसने **हुशंगशाह** को पराजित किया लेकिन **नरवर के युद्ध** में **महमूद खिलजी** से पराजित हुआ।
- **साहित्यिक संरक्षण**
  - **महाकवि रईधू** = इन्होने **सम्मतगुण विधान** एवं **पार्श्वपुराण** की रचना की।
  - **विष्णुदास** = इन्होनें **पांडवचरित्र** एवं **स्वार्गारोहण** की रचना की।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

राजा कीर्तिपाल

- इसने दिल्ली के **बहलोल लोधी** और जौनपुर के **हुसैनशाह शर्की** के ग्वालियर पर किए गए आक्रमण को विफल किया था।

कल्याणमल्ल

- **उपनाम** = भूप मुनि
- **रचना** = सुमेल चित्त
- इनके समय के विद्वान एवं उनकी रचनाएं निम्न है–
  - **नारायण दास = बिल्हणचरित्र**
  - **दामोदरदास = द्वितार्रचरित**
  - **चतुर्भुजदास = मधुमालती**

मानसिंह

- **परिचय** = यह कल्याणमल्ल का उत्तराधिकारी एवं तोमर वंश का प्रतापी शासक था।
- **शासनकाल** = 1486–1516
- **विवाह** = गूजरी देवी से इनका विवाह हुआ जिसे ये प्रेम से **मृगनयनी** कहते थे।
- **निर्माण** = ग्वालियर में ग्वालियर दुर्ग पर **गूजरी महल एवं मानमहल** का निर्माण कराया
- **ग्रंथ** = इनकी संगीत में विशेष रूचि थी इन्होंने **मान कौतुहल** नामक संगीत ग्रंथ की रचना की।
- **संरक्षण** = इन्होंने **बैजू बावरा, तानसेन, हरिदास** जैसे संगीतकारों को दरबार में संरक्षण दिया।
- समकालीन दिल्ली के शासकों **बहलोल एवं सिकंदर लोदी** से इनके कटुतापूर्ण संबंधित थे।
- मानसिंह के प्रसिद्ध सामंत/मंत्री **खेमदास** थे।
- इनके समय के प्रमुख विद्वान एवं उनकी प्रमुख रचनाएं निम्न हैं –
  - **बेताल पच्चीसी – मानिक**
  - **द्वितार्रचरित – दामोदरदास**

खड्गरायकृत गोपांचल आख्यान में राजा मानसिंह के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

विक्रमजीत सिंह

- यह मानसिंह का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था।
- इब्राहिम लोदी ने इसे पराजित कर अपनी आधीनता स्वीकार करवाई।
- इसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भागीदारी की एवं मृत्यु को प्राप्त हुआ।

राम सिंह

यह तोमर वंश का अंतिम शासक था इसी के समय मुगलों द्वारा ग्वालियर पर आधिपत्य कर लिया गया।

****

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

बघेलखण्ड की रियासत

बीसलदेव, सोलंकी शासक भीमदेव द्वितीय के प्रधानमंत्री थे।

सामान्य परिचय

- **परिचय** = यह मध्यकाल में मध्यप्रदेश की एक प्रमुख रियासत थी।
- **संबंध** = बघेल मूलतः **अन्हिलवाड़ा (गुजरात)** के सोलंकी/चालुक्य वंश से संबंधित थे।
- **स्थापना** = 1236 में बघेल राज्य की स्थापना हुई।
- **संस्थापक** = पाटन (गुजरात) से आए **बीसलदेव बघेल और भीमलदेव** बघेल ने की।
- **क्षेत्र**
  - रीवा
  - सोहावल (सतना)
  - उचेहरा (सतना)
  - बांधवगढ़
  - मुकुंदपुर (सतना)
  - चौखंडी (रीवा)

अर्णोराज

- **परिचय** = ये चालुक्य वंश से संबंधित थे एवं चालुक्य शासक **कुमारपाल के मौसेरे भाई** थे।
- **सामंत** = कुमारपाल ने इनकी योग्यता से प्रसन्न होकर इन्हें **व्याघ्रपल्ली (बघेलबारी)** की सामंती प्रदान की।
- **पुत्र** = ये आजीवन व्याघ्रपल्ली के सामंत रहे। इनकी मृत्यु के बाद इनके पुत्र **लवणप्रसाद उर्फ व्याघ्रपल्लीय** (व्याघ्रदेव) अगले सामंत बने। व्याघ्रदेव को **बघेलों का आदिपुरूष** भी माना जाता है।
- **विशेष** = बघेलवारी गांव में रहने के कारण **अर्णोराज** के वंशज बघेल कहलाए।

बीसलदेव एवं भीमलदेव

- ये पाटन (गुजरात) से आए बघेल भाई थे।
- इन्होंने कालिंजर के **भर राजा** के यहां आकर नौकरी की।
- इन भाइयों ने षड़यंत्रपूर्वक **गहोरा (चित्रकूट)** के लोधी सामंत की हत्या कर **भर राजा से गहोरा की सामंती** प्राप्त कर ली।
- बाद में **1236** में उन्होंने गहोरा में **बघेल सत्ता** की स्थापना की।
- बीसलदेव अपने छोटे **भाई भीमलदेव** को सत्ता सौंप कर **अन्हिलवाड़ा (गुजरात)** चले गए।

भीमलदेव के पश्चात् अगला शासक **रानिंगदेव/अनीकदेव** बना (**वीरभानुदयकाव्यम** में इसे **गहोरा का प्रथम शासक** बताया गया है)। इसके बाद **वालनदेव** राजा बना जो रानिंगदेव का पुत्र था। तत्पश्चात् **बुल्लारदेव** शासक बना।

बुल्लारदेव

- **परिचय** = यह बघेल सत्ता का प्रथम प्रभावशाली, पराक्रमी, शासक था।
- **शासनकाल** = 1353-1389
- **महाराजाधिराज** की उपाधि धारण करने वाला **बघेल वंश का पहला शासक**।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- यह **फिरोजशाह तुगलक** के समकालीन था। फिरोजशाह ने इसके आक्रमणों से प्रभावित होकर इसे राजा स्वीकारा था।
- इसने अपने पुत्र **वीरमदेव** को अपना उत्तराधिकारी बनाया एवं **जल समाधि** ले ली जिसकी जानकारी हमें **तारीख-ए-फिरोजशाही** से मिलती है।

वीरमदेव

- **परिचय** = यह बघेल वंश का महत्वकांक्षी एवं विस्तारवादी शासक था।
- **शासन काल** = 1389–1438
- **क्षेत्र विस्तार** = इसने कैमूर के दक्षिण में बांधवगढ़ एवं अमरकंटक तक साम्राज्य विस्तार किया।
- **विजय** = इसने **बांधवगढ़** पर विजय प्राप्त की। बांधवगढ इस समय **हाथियों की सबसे बड़ी मण्डी** के लिए जाना जाता था।
- **अन्य नाम** = **तारीख–ए–मोहम्मदशाही** में इसे **"युग का नीरम"** कहा गया है। वस्तुतः नीरम एक ईरानी पहलवान था।
- **संबंध** = शर्की शासक **इब्राहिमशाह शर्की** से इसके मित्रवत संबंध थे जबकि **नासिरुद्दीन महमूद** (तुगलक) से इसका युद्ध हुआ था।
- **उत्तराधिकारी** = वीरमदेव के बाद अगला शासक इसका पुत्र नरहरिदेव बना।

भैदचंद्र

- यह नरहरिदेव का पुत्र था जिसने **1470 से 1495** तक शासन किया।
- शर्की शासकों से इसके मित्रवत संबंध थे जिसके चलते लोधी शासकों से इसका संघर्ष हुआ ।
- **1488** में प्रथम व **1494** में दूसरी बार लोधियों ने इस पर आक्रमण किया।
- **1495** में इसकी मृत्यु हो गयी।

नरहरिदेव

- **वीरमदेव का पुत्र (1438–1470)**
- **मासिर–ए–महमूदशाही में वर्णन मिलता है नरहरिदेव के मालवा के खिलजी शासक महमूद खिलजी के साथ कटुतापूर्ण संबंध थे।**

सालिवाहन

- यह भैदचंद्र का पुत्र था जिसने **1495 से 1500** तक शासन किया।
- **तृतीय बघेल–लोधी संघर्ष** इसी के समय हुआ था।
- लोदी सेना से बांधवगढ़ की रक्षा न कर पाने के कारण आत्मग्लानि से इसकी मृत्यु हो गयी।
- लोदी सेना द्वारा बघेल राज्य को भारी क्षति पहुंचाई गई इसी क्रम में आगामी बघेल शासकों ने शर्की शासकों की बजाय लोधी शासकों से मित्रवत संबंध स्थापित किए।

वीरसिंह बघेल

- **परिचय** = यह बघेल वंश का कुशल कूटनीतिज्ञ एवं पराक्रमी शासक था।
- **शासनकाल** = 1500-1535
- **समकालीन** = यह गौंड शासक **अर्जुनदास** व उनके पुत्र **संग्रामशाह** के समकालीन था।
- **सिकंदर लोदी** के साथ इसके मित्रवत संबंध थे।
- इसने खानवा के युद्ध में बाबर के विरुद्ध **राणा सांगा की मदद की** लेकिन भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद बाबर एवं बघेल शासकों के मध्य प्रगाण मैत्री संबंध स्थापित हुए जिसकी जानकारी हमें **बाबरनामा** एवं **वीरभानुदयकाव्यम** से प्राप्त होती है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

वीरभानु बघेल

- **परिचय** = वीरसिंह का पुत्र, उत्तराधिकारी एवं बघेल वंश का शासक।
- **शासनकाल** = 1535–1555
- **समकालीन** = यह हुमायूं एवं शेरशाह सूरी के समकालीन था।
- **संरक्षण** = वीरभानुदयकाव्यम के लेखक **कवि माधव** को इन्होंने अपने दरबार में संरक्षण दिया था।
- **मुगलों से संबध**
  - मुगलों के साथ इसके मित्रवत संबंध थे।
  - इन्हीं संबंधों के चलते **चौसा के युद्ध** में इसने हुमायूं की मदद की।
  - हुमायूं की मदद के कारण शेरशाह के आक्रमण के भय से यह कालिंजर के कीरतसिंह के यहां चला गया एवं 1545 में शेरशाह ने कालिंजर पर आक्रमण किया।

रामचंद्रदेव बघेल

- **परिचय** = यह वीरभानु का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था।
- **शासनकाल** = 1555-1592
- यह अकबर के समकालीन था।
- इसने **बिजली खां** से कालिंजर का दुर्ग पुनः खरीदा।
- **अकबर से संबंध**
  - प्रारंभ में अकबर के साथ इसके मित्रवत संबंध थे। इसी क्रम में अकबर ने **1562** में रामचंद्रदेव के दरबार से **तानसेन** को अपने दरबार में बुलाया।
  - बाद में अकबर के विरोधी **गाजी खां** को शरण देने के कारण अकबर एवं रामचंद्रदेव के मध्य संघर्ष हुआ लेकिन **बीरबल की मध्यस्थता** के चलते दोनों के मध्य सुलह हो गयी।
  - **1559** में अकबर ने कालिंजर के विजय प्राप्त की।
- **1592** में इनकी मृत्यु हो गयी।

- अकबर की विस्तारवादी नीति के भय से इसने अपनी राजधानी **गहोरा से बांधवगढ़** स्थानांतरित की।
- राजधानी बांधवगढ़ स्थानांतरित होने के बाद यह राज्य **बांधव राज्य** कहलाने लगा।

वीरभद्रदेव

- रामचंद्रदेव का पुत्र जो **अकबर के दरबार में प्रतिनिधि** के तौर पर नियुक्त था।
- **1592** में रामचंद्रदेव की मृत्यु के बाद अकबर ने इसे राजा की उपाधि देकर बांधवगढ़ का शासक बनाया।
- मुगल दरबार से बांधवगढ़ की ओर जाते हुए रास्ते में **बरौंधा (शहडोल)** के निकट पालकी गिरने से इसकी मौत हो गयी।
- **शासनकाल** = 1592-1593
- वीरभद्रदेव ने संस्कृत **कन्दर्पचूड़ामणि** एवं **दशकुमारपूर्वकथासारः** नामक ग्रंथ लिखे।
- इनके दरबारी **कवि पद्मनाथ मिश्र** ने **वीरभद्रदेव चंपू** नामक काव्य लिखा।

विक्रमजीत बघेल

विक्रमजीत बघेल ने **रीवा को अपनी राजधानी** व **बांधवगढ़ को सैनिक मुख्यालय** बनाया। राजधानी रीवा बनने के पश्चात बघेल राज्य को **रीवा राज्य** के नाम से जाना जाने लगा।

- **परिचय** = यह वीरभद्र का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था।
- **शासनकाल** = 1593 से 1602 तक, और 1605 से 1624 तक
- इसने अकबर की अधीनता स्वीकार करने से इंकार कर दिया फलतः बांधवगढ़ पर मुगलों का आधिपत्य हुआ।
- 1602 में अकबर ने वीरभद्र के दासी पुत्र **जिर्जोधन** को अगला शासक बनाया जो 1605 तक शासक रहा।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

अमर सिंह

- बघेल वंश का शासक **(1624–1640)**
- इसने स्वेच्छा से मुगल आधीनता स्वीकार की।
- इसने मुगलों के साथ मिलकर **खानेजहां लोधी, रतनपुर के जमींदारो, जुझारसिंह बुंदेला** के विद्रोह का दमन किया।
- इसके बाद **अनूपसिंह** अगले शासक बने।

अनूपसिंह

- बघेल वंशीय शासक **(1640–1675)**
- ओरछा के **पहाड़ सिंह बुंदेला** ने उन्हें रीवा से निष्कासित कर दिया था।
- इन्होंने शाहजहां के सहयोग से पुनः रीवा पर आधिपत्य किया।
- इन्हीं के समय **छत्रसाल बुंदेला** ने मैहर पर कब्जा किया जो रीवा राज्य के अधीन था।

राजभाव सिंह

- अनूप सिंह के बाद शासक बने। **(1675–1692)**
- ये संस्कृत के विद्वान थे और इन्होंने **होत्रकल्पद्रुम** की रचना की एवं **महामृत्युंजय मंदिर** का निर्माण कराया ।
- **मृत्यु** = 1700

राजभाव सिंह के समय वास्तविक सत्ता इनके भाई **जसवंत** के हाथों में थी। भावसिंह के निःसंतान होने के कारण जसवंत सिंह ने भावसिंह के जिंदा रहते हुए ही **1692 में अनिरूद्ध सिंह** का राज्याभिषेक करा दिया।

अनिरूद्ध सिंह

- भावसिंह के बाद ये बघेल वंश के अगले शासक बने। **(1692–1700)**
- इसी के समय छत्रसाल के पुत्र **हिरदेशशाह** ने रीवा राज्य पर आक्रमण किया था।

राजा अवधूत सिंह

- ये अनिरुद्ध सिंह के पश्चात बघेल वंश के अगले शासक बने।
- **शासनकाल** = 1717–1755
- इन्हीं के समय **बघेल-बुंदेला संघर्ष** अपने चरम पर था जिसे **बुंदेली लड़ाई** के नाम से भी जाना जाता है।

बुंदेली लड़ाई के परिणाम

- आरंभ में संपूर्ण पश्चिमी बघेलखंड पर बुंदेलाओं का आधिपत्य स्थापित हुआ
- बाद में **1726** में संपूर्ण रीवा राज्य पर **हिरदेशशाह (बुंदेला)** का अधिपत्य हुआ।
- अवधूत सिंह ने मुगलों की सहायता से रीवा पर पुनः बघेलों की सत्ता स्थापित की।
- मुगलों की ओर से अवधूत सिंह की सहायता **मोहम्मद खां बंगश** ने की थी।

राजा अजीत सिंह

- **शासनकाल** = 1755–1809
- इसी के समय बांदा के नवाब **अलीबहादुर** ने आक्रमण किया लेकिन युद्ध हर्जाने के तौर पर 1 लाख देकर इन्होंने अपने राज्य की रक्षा की।
- इसी के समय **पश्चिमी बघेलखंड + सोहागपुर + चॉदिया** पर मराठों का आधिपत्य स्थापित हुआ।
- **1802** में हुई **बेसीन की संधि** के बाद यहां ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित हुआ।

महाराजा जय सिंह

- ये राजा अजीत सिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। **(1818–1833)**
- इसी के समय **1812 में करीम खान** के नेतृत्व में पिंडारियों का रीवा पर आक्रमण हुआ।
- इन्होनें पिंडारियों के दमन हेतु **अक्टूबर 1812** में अंग्रेजों के साथ **बांदा की संधि** की।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **बांदा की संधि** के तहत जयसिंह को रीवा का वैध शासक माना गया ।
- ये हिंदी व संस्कृत के विद्वान थे इन्होंने **हर्षचरित्र–चंद्रिका** नामक ग्रंथ की रचना की।

नोट = **जयसिंह** धार्मिक प्रवृत्ति के थे एवं शासन में कोई विशेष रूचि नहीं रखते थे अतः उन्होंने **1813** में ही प्रशासन के संचालन का दायित्व अपने बड़े पुत्र **विश्वनाथ** को सौंप दिया था।

विश्वनाथ सिंह

- ये महाराज जयसिंह के बड़े पुत्र थे (**1833-1854**)
- इनके समय वास्तविक शक्तियां ब्रिटिशर्स के हाथों में थी एवं इस समय रीवा दरबार में ब्रिटिश रेजीडेंट **रिचर्ड्सन** थे।
- **रचना** = आनंद–रघुनंदन, ध्रुवास्टक, कबीर बीजक

रघुराज सिंह

- ये महाराज विश्वनाथ सिंह के पुत्र थे। **(1854–1880)**
- इनके समय **ओस्वार्न** रीवा में अस्थाई पोलिटिकल एजेंट थे।
- रीवा राज्य का दीवान **दीनबंधु पांडे**, अंग्रेजों का सबसे बड़ा सहयोगी था।
- अंग्रेजों एवं दीनबंधु पाण्डे की सहयोगिता के चलते रीवा राज्य में व्यापक स्तर पर **अव्यवस्था** व्याप्त थी। इन अव्यवस्थाओं के चलते रघुराज सिंह ने दीनबंधु पाण्डे को हटाकर **ग्वालियर के दीवान सर दिनकर राव** को अपना प्रशासक बनाकर सुधारों पर बल दिया।
- **1857 की क्रांति**
  - इन्हीं के समय 1857 की क्रांति हुई।
  - इन्होंने प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिशर्स का सहयोग किया लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से क्रांतिकारियों का सहयोग किया।
- **1880** में इनकी मृत्यु हो गयी।

दिनकर राव के सुधार

- लगान व्यवस्था में **टीका पद्धति** का प्रचलन।
- **मिताक्षरा कचहरी** नामक फौजदारी अदालत स्थापित।
- इलाहाबाद जबलपुर रेलवे लाइन को सतना से जोड़ा।
- 1871 में **बघेलखंड एजेंसी** की स्थापना।

नोट = राज्य में फैली अव्यवस्था को दूर करने हेतु **1871** में **बघेलखंड एजेंसी** की स्थापना हुई जिसके अंतर्गत पांच रियासतें रीवा, नागौर, मैहर, कोठी एवं सोहावल शामिल थीं। इस व्यवस्था से कोई सुधार नहीं हुआ उल्टा रीवा रियासत पर **वित्तीय बोझ** बढ़ गया अंततः परेशान होकर **रघुराज** ने रीवा राज्य का प्रशासन ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया।

रणमतसिंह

- इन्होंने रीवा राज्य में 1857 की क्रांति को नेतृत्व प्रदान किया।
- इन्होंने **मुक्त फौज** का गठन कर स्वतंत्रता सेनानियों से संपर्क स्थापित किया।
- **श्यामसिंह, धीरसिंह, पंजाबसिंह** इनके सहयोगी थे ।
- **हीरासिंह** के विश्वासघात के कारण ये गिरफ्तार हुए व ब्रिटिशर्स द्वारा **1 अगस्त 1859** इनको फांसी दे दी गई।

सुप्रिडेंटकाल

- 1880 से 1895 के मध्य का शासन काल।
- **कारण** = 1880 में महाराजा रघुराज सिंह की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र **वेंकटरमन सिंह** नाबालिग थे **(4 वर्ष)** इसी कारण सुप्रिडेंट्स काल 1895 तक जारी रहा।

वेंकटरमण सिंह के सुधार कार्य

- 1895 में अकाल पीड़ित कोष की स्थापना की।
- दीवान पद को समाप्त किया।
- **सरस्वती भंडार पुस्तकालय** का निर्माण कराया।
- दीवानी मुकदमों के निर्णय हेतु **चौरों** की स्थापना की।
- 1902 में **दरबार प्रेस** की स्थापना व **'भारत भ्राता'** नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
- रीवा से हिंदी साप्ताहिक **शुभचिंतक** का प्रकाशन किया।
- बाघों के वध पर प्रतिबंध लगाया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

वेंकटरमण सिंह

- ये महाराजा रघुराज सिंह के पुत्र थे।
- **शासनकाल** = 1895–1918

●इनका राज्याभिषेक तो **1880** में हुआ। चूंकि ये नाबालिग थे अतः वास्तविक रूप से **1895** में ही इनको शक्तियां प्राप्त हुई।

- **1918** में इनफ्लुएंजा नामक बीमारी से इनकी मृत्यु हो गयी।

●वेंकटरमन की मृत्यु के समय उनके पुत्र **गुलाब सिंह** नाबालिग थे अतः **रतलाम नरेश सज्जन सिंह** को रीवा का रीजेंट बनाया गया। 1918 से 1922 तक सज्जन सिंह ने **7 सदस्यीय समिति** के माध्यम से शासन संचालन किया ।

महाराजा गुलाब सिंह

- **शासनकाल** = 1922–1946
- इनके समय अंग्रेज अधिकारी **कॉल्विन** रीवा राज्य में प्रशासनिक अधिकारी थे।
- इन्होने प्रशासनिक एवं सामाजिक सुधारों पर बल दिया।
- **सुधार कार्य**
  - 1932 में **राज्य परिषद** का गठन किया।
  - 1940 में सतना में **बघेलखंड फ्लोर मिल** की स्थापना की।
  - **बुढ़ार** में रीवा राज्य के प्रथम न्यायालय की स्थापना की।
  - रीवा में **बैंक ऑफ बघेलखंड** स्थापित की।
  - 1934 में **रीवा शिक्षा बोर्ड** की स्थापना की।
  - वर्ण व्यवस्था उन्मूलन हेतु **सहभोज प्रथा** आरंभ की।
  - 1934 में **पवाई रूल्स** लागू किए जिसका मुख्य उद्देश्य इलाकेदारों व पवाईदारों को मनमाना कर वसूलने से रोकना तथा उनके अधिकारों को सीमित करना था। पवाईदारों एवं इलाकेदारों ने इसे **काला कानून** की संज्ञा दी।
- 1946 में इनकी मृत्यु हो गयी।

सुधार कार्यों के कारण ही इन्हें अपने युग का **प्रथम समाज सुधारक नरेश** कहा जाता है।

महाराजा मार्तंडसिंह जूदेव

- ये रीवा राज्य के **अंतिम शासक** थे जिनका शासनकाल 1946 से 1995 तक था।
- इन्हीं के समय सर्वप्रथम रीवा में **सफेद शेर** को देखा गया।
- बघेलखंड रियासत का भारत संघ में विलय इन्हीं के समय हुआ।
- इन्होंने लोकसत्तात्मक शासन विधान हेतु **हरिसिंह गौर की अध्यक्षता में 7 सदस्यीय संवैधानिक सुधार समिति** का गठन किया।

1948 में बघेलखंड एवं बुंदेलखंड की सभी 35 रियासतों को मिलाकर **विंध्यप्रदेश** का गठन किया गया। बाद में 1956 में विंध्यप्रदेश का विलय मध्यप्रदेश में हो गया।

बघेल कालीन स्थापत्य योगदान

स्थापत्य		निर्माता
• गहोरा राजमहल	–	बुल्लारदेव
• गहोरा में शीतलामाता मंदिर	–	बुल्लारदेव
• महामृत्युंजय मंदिर	–	महाराज भावसिंह

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- रानी तालाब (रीवा) – महाराज भाव सिंह
- मैहर दुर्ग – महाराज भैदचंद्र
- बांधवगढ़ दुर्ग – बघेल शासक
- रीवा दुर्ग – जलाल खान
- सोहावल दुर्ग(सतना) – फतेहसिंह
- सोहापुर गढ़ी – वीरसिंह देव द्वारा
- गोविंदगढ़ किला – रघुराजसिंह
- बैंकट भवन – वेंकटरमन
- विश्वनाथ सागर तालाब – रघुराज सिंह
- लक्ष्मणबाग मंदिर – विश्वनाथ सिंह

बघेल राज्य के अंतर्गत अन्य रियासतें निम्न थीं

- **मध्यप्रदेश में**
  - नागौर जागीर (राजधानी उचहेरा)
  - मैहर जागीर
  - कोठी जागीर (जगत राय बघेल द्वारा स्थापित)
  - सोहावल जागीर (फतेह सिंह द्वारा स्थापित)
- **उत्तर प्रदेश में**
  - अरोड़ा जागीर
  - चौबे जागीर

बघेल कालीन साहित्य

- वीरभानुदयकाव्यम – कवि माधव
- वीरभद्रदेव चंपू – पदमनाथ मिश्र
- आनंद रघुनंदन – महाराज विश्वनाथ
- राधा चरित – रामचंद्र भट्ट (वीरसिहदेव)
- भक्तमाल – रघुराज सिंह
- होत्र कल्पद्रुम – भावसिंह

****

बुंदेलखंड की रियासतें

- बुंदेलखंड एक **भौगोलिक व सांस्कृतिक क्षेत्र** है जो मध्यप्रदेश के उत्तर में मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश में विस्तृत है।
- विंध्यन पर्वतमाला के कारण पहले इस क्षेत्र को **विंध्येलखंड** एवं बाद में **बुंदेलखंड** कहा जाने लगा।
- चंदेल शासकों के समय इस क्षेत्र को **जेजाकभुक्ति** कहा जाता था।
- बुंदेलखंड क्षेत्र की प्रमुख रियासतें निम्नलिखित हैं –

ओरछा रियासत	छतरपुर रियासत
पन्ना रियासत	शाहगढ़ रियासत
चिरगांव रियासत	जैतपुरा रियासत
बार–चंदेरी रियासत	अजयगढ़ रियासत
दतिया रियासत	विजयराघवगढ़ रियासत
गरौनी रियासत	मौघा रियासत

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

ओरछा रियासत

- यह बुंदेलखंड क्षेत्र में विस्तृत रियासत थी।
- **संस्थापक** = रूद्रप्रताप सिंह
- इस वंश के प्रमुख शासकों का क्रमवार विवरण निम्न है

रुद्र प्रताप सिंह

- **परिचय** = ओरछा रियासत के संस्थापक
- **शासन काल** = 1501–1531
- **क्षेत्र विस्तार** = ओरछा को बसाकर **(1531)** कालिंजर से कालपी तक साम्राज्य विस्तार किया।
- **विशेष** = इन्हें **ओरछा रियासत का आदि पुरुष** भी माना जाता है।
- **समकालीन** = ये सिकंदर लोदी, इब्राहिम लोदी व बाबर के समकालीन थे।
- **संबंध** = ग्वालियर के तोमर शासकों से इनके मैत्रीपूर्ण संबंध थे।
- **मृत्यु** = 1531

भारती चंद्र

- **परिचय** = ये रूद्रप्रताप सिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। **(1531–1554)**
- **राजधानी** = इसने ओरछा को अपनी राजधानी बनाया।
- **सहायता** = इन्होंने कालिंजर के शासक **कीरतसिंह को शेरशाह के विरुद्ध** सैन्य सहायता दी।
- **स्थापत्य** = ओरछा में **ओरछा दुर्ग, रामराजा मंदिर, रानी महल** की स्थापना की थी।
- **मृत्यु** = 1554 में अकस्मात मृत्यु ।

मधुकरशाह

- ये भारतीचंद्र के पुत्र एवं ओरछा रियासत के शासक थे।
- **शासनकाल** = 1554–1592
- इसके समय ही स्वतंत्र ओरछा रियासत की स्थापना हुई।
- ये अकबर के समकालीन थे एवं मुगलों से स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत रहे।
- सिरोंज, ग्वालियर एवं नरवर पर विजय प्राप्त की।

ये अकबर के बुलावे पर उस के दरबार में नहीं गए फलतः अकबर ने सादिक खां के नेतृत्व में सेना भेजकर मधुकरशाह को हराया।

रामशाह

- अकबर से क्षमा याचना करने के बाद इन्हें शासक बनाया गया **(1592–1605)**
- इनके राज्य का प्रबंध **इंद्रजीत सिंह** किया करते थे। **कवि केशवदास** इंद्रजीत सिंह के दरबार से ही संबंधित थे।

वीरसिंहदेव

- यह रामशाह का भाई था। **(1605–1627)**
- आरंभ में यह **बड़ौनी (दतिया)** का शासक था।
- **जहांगीर के साथ इसके मित्रवत संबंध** थे एवं इसी क्रम में

जहांगीर ने अबुल फजल की हत्या के एवज में **वीरसिंहदेव** को शासक बनाने का वादा किया था इसी क्रम में जब जहांगीर गद्दी पर बैठा तो उसने **रामशाह** को अपदस्थ कर चंदेरी राज्य दिया और **वीरसिंहदेव** को ओरछा का शासक बनाया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

इसने **अबुल फजल** की हत्या की।

- बाद में यह जहांगीर की सहायता से ओरछा का शासक बना।
- इसी के समय **बुंदेली स्थापत्य शैली** का विकास हआ।
- इसके प्रमुख स्थापत्य योगदान निम्न हैं –
  - जहांगीर महल (ओरछा)
  - राम मंदिर (मथुरा)
  - धामोनी किला (सागर)
  - झांसी का किला + करैरा किला (शिवपुरी)

पहाड सिंह एवं विक्रमजीत के मध्य के शासक

सुजानसिंह
↓
इंद्रमणि
↓
यशवंतसिंह
↓
भगवतसिंह
↓
उद्दोतसिंह
↓
पृथ्वीसिंह
↓
सावंतसिंह
↓
हतोसिंह
↓
विक्रमजीतसिंह

जुझार सिंह

- यह वीरसिंहदेव का ज्येष्ठ पुत्र था।
- इसने 1633 में गोंड राजा **प्रेमशाह** पर आक्रमण करके **चौरागढ़** को जीता परंतु **शाहजहां** के विरोध के चलते यह चौरागढ़ को छोड़कर दक्षिण की ओर भाग गया।

पहाड़ सिंह

- ये जुझार सिंह के छोटे भाई थे।
- इन्होंने कूटनीतिक क्षमता का परिचय देते हुए जुझार सिंह द्वारा चौरागढ़ से लूटे खजाने को **मुगलशाही खजाने** में जमा करके **चौरागढ़ किले** को मुगलों से प्राप्त किया।

विक्रमाजीत सिंह

- **शासनकाल** = 1776-1817
- मराठों के आक्रमण से व्यथित होकर **1783 में राजधानी ओरछा से टेहरी** स्थानांतरित की।
- बघाट के जागीरदार से **बघाट का युद्ध** लड़ा **(1816)**
- मराठों एवं पिंडारियों से सुरक्षा हेतु **पुरुषोत्तमगढ़, बम्होरी, बड़ागांव** में गढ़ी बनाई।

1787 से टेहरी को कृष्णजी/टीकमजी के नाम पर टीकमगढ़ कहा जाने लगा।

धर्मपाल सिंह

- ये विक्रमजीत के पुत्र थे। **(1817-1834)**
- इन्होने **लॉर्ड हेस्टिंग्स** के साथ मिलकर पिंडारियों का दमन किया।
- इन्होने फ्रांसीसी अधिकारी **जीन वेपिटिस्टा** को हराया।
- **तीन पत्नियां** = गरई रानी, लड़ई रानी, हरई रानी (तीनों निःसंतान)
- **1812** में अंग्रेजों के साथ सुरक्षा संधि पर हस्ताक्षर किए।

परवर्ती शासक

- **तेजसिंह** **(1834–1842)**
- **सुरज सिंह** **(1842–1874)**
- **हमीर सिंह** **(1848–1865)**
- **प्रताप सिंह** **(1874–1930)**
- **वीरसिंह** **(1930–1950)**

लड़ई सरकार

- ये धर्मपाल की पत्नी थी।
- **उपनाम = ओरछा राज्य की विक्टोरिया**
- 1842 के बुंदेला विद्रोह में **कर्नल स्लीमन** की सहायता की।
- इन्होंने अपने सेनापति **नत्थे खां** को रानी लक्ष्मीबाई पर आक्रमण हेतु भेजा था।
- नत्थे खां को लक्ष्मीबाई ने पराजित किया। बाद में नत्थे खां ने ह्यूरोज की सहायता की।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

पन्ना रियासत

बुंदेला सरदार **चंपत राय** के पुत्र **छत्रसाल** ने पन्ना रियासत की स्थापना की थी।

छत्रसाल बुंदेला

- **परिचय** = बुंदेला सरदार **चंपतराय** के पुत्र एवं पन्ना रियासत के संस्थापक।
- **जन्म** = 1649, और मृत्यु 1731
- **उपनाम** = बुंदेलखंड केसरी, बुंदेलखंड का शिवाजी
- **राजधानी** = पन्ना
- **1678** में पन्ना को राजधानी बनाया एवं **1687** में **योगीराज प्राणनाथ** के निर्देशन में अपना राज्याभिषेक करवाया।
- **उपलब्धियां**
  - छत्रपति शिवाजी से मैत्री संधि स्थापित की।
  - ओरछा के क्षेत्रों को विजित किया।
  - धामोनी के **शमशेर खान** को परास्त किया।
  - औरंगजेब को **वसिया के युद्ध** में हराया था अतः औरंगजेब ने इन्हें **4000 का मनसब** एवं राजा की उपाधि दी।
  - इसने कालिंजर के किले पर विजय प्राप्त की एवं मांधाता चौबे को वहां का किलेदार नियुक्त किया।
  - **1728–1729** पेशवा बाजीराव के सहयोग से मुगल सूबेदार **मोहम्मद खां बंगश** को हराया एवं पेशवा को अपने **तीसरे पुत्र** के रूप में माना।
  - इन्होंने **कवि भूषण, लाल कवि एवं हंसराज** को संरक्षण दिया।
  - धुबेला महल बनवाया।

ये **राजा जयसिंह** के सहयोग से मुगल सेना में भर्ती हुए एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया बाद में **1665** में **बीजापुर के युद्ध** में **देवगढ़ के गौंड शासक** को पराजित किया लेकिन इसका श्रेय ना मिलने के कारण इन्होंने **पन्ना रियासत** की स्थापना का संकल्प लिया।

1731 में इनकी मृत्यु के बाद इनके साम्राज्य का विभाजन इनके पुत्रों **हिरदेशशाह** एवं **जगतराय** और पेशवा बाजीराव में बंट गया क्योंकि इन्होनें **पेशवा बाजीराव** को अपना तीसरा पुत्र माना था।

- **हिरदेशशाह** = इन्हें पन्ना, कालिंजर, गढ़ाकोटा, मऊ, शाहगढ़ क्षेत्रों का शासन प्राप्त हुआ।
- **जगतराय** = इन्हें जैतुपर, विजावर, बांदा, चरखारी, के क्षेत्रों का शासन प्राप्त हुआ।
- **पेशवा बाजीराव** = इन्हें झांसी, हटा, कालपी, गुना के क्षेत्रों का शासन प्राप्त हुआ।

अन्य तथ्य

- पन्ना के शासक हिरदेशशाह ने रीवा में **बुंदेली दरवाजे** का निर्माण करवाया।
- **किशोर सिंह** ने 1758–1834 तक शासन किया।
- किशोर सिंह के पश्चात **हरिवंशराय** पन्ना के शासक बने एवं इन्होंने बुंदेला विद्रोह में अंग्रेजों की मदद की।
- **नृपतिसिंह** ने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों की मदद की।

नोट = पन्ना के एक शासक सुभाग सिंह (सभासिंह) के समय पृथ्वी सिंह ने विद्रोह कर गढ़ाकोटा एवं शाहगढ़ क्षेत्रों को प्राप्त कर शाहगढ़ रियासत की नींव रखी।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

शाहगढ़ रियासत

- छत्रसाल की मृत्यु के बाद **हिरदेश शाह** को शाहगढ़ का क्षेत्र प्राप्त हुआ।
- **हिरदेशशाह** के बाद **सुभागसिंह** के समय **पृथ्वी सिंह** ने विद्रोह कर शाहगढ़ रियासत की नींव डाली व पन्ना को अपनी राजधानी बनाया।
- **हरिसिंह**
  - इन्होने राजधानी **गढ़ाकोटा** स्थानांतरित की
- **मर्दनसिंह**
  - इन्होंने सागर में **मालथोन का दुर्ग** बनवाया।
  - इसी के समय **1809 में रघुजी भोंसले** ने गढ़ाकोटा पर आक्रमण किया जिसमें मर्दनसिंह की मृत्यु हो गई।
- **अर्जुनसिंह**
  - सिंधिया को मदद के एवज में इन्होंने **गढ़ाकोटा क्षेत्र** प्रदान किया।
  - **शाहगढ़ को पुनः राजधानी** बनाकर बचे हुए क्षेत्र पर शासन किया।
- **बखतबली**
  - ये **अर्जुनसिंह के भतीजे** एवं शाहगढ़ के शासक थे।
  - इन्हीं के समय 1842 में बुंदेला विद्रोह हुआ था।
  - इन्होंने गढ़ाकोटा प्राप्ति की चाह में बुंदेला विद्रोह में ब्रिटिशर्स का सहयोग करते हुए **हीरापुर के हिरदेशशाह** को पकड़वाया।
  - अंग्रेजों ने इनकी शर्तों को पूरा नहीं किया फलतः 1857 के विद्रोह के समय **बखतवली** ने अपने सेनापति **बौधनदौआ** ने साथ मिलकर ब्रिटिशर्स को सशक्त चुनौती दी।

जैतपुरा रियासत

शासक
↓
जगतराय
↓
पहाडसिंह
↓
गजराजसिंह
↓
केशरीसिंह
↓
राजा पारीक्षित

छत्रसाल की मृत्यु के बाद जैतपुरा रियासत **जगतराज** को प्राप्त हुई।

- **केसरीसिंह**
  - ये जैतपुरा के शासक थे।
  - इन्होंने मोहम्मदशाह एवं बहादुरशाह से परेशान होकर **1812** में अंग्रेजों से सुरक्षा संधि की।
  - मुहम्मदशाह एवं बहादुर शाह बांदा के सूबेदार थे जिन्हें **बुंदेलखंड का किंगमेकर** कहा जाता है।
  - केसरी सिंह के पुत्र **राजा परीक्षित** हुए।
- **राजा पारीक्षित**
  - ये जैतपुरा रियासत के शासक एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे।
  - केसरी सिंह के पुत्र (1813–1844)
  - **1836** में रतनसिंह व राजा परीक्षित के नेतृत्व में **चरखारी में बुढ़वा मंगल मेले** का आयोजन हुआ एवं **1842** के बुंदेला विद्रोह की पृष्ठभूमि निर्मित हुई ।
  - **1842** के बुंदेला विद्रोह में नेतृत्व प्रदान किया।
  - **बनवाड़ी एवं भूरागढ़ के युद्ध** में अंग्रेजों को हराया।
  - **गोलंदाज, रतनसिंह, लड़ई सरकार** ने इन्हें ब्रिटिशर्स को पकड़वाया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- इनकी गिरफ्तारी के बाद जैतपुरा पर ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित हुआ एवं कुछ समय के लिए खेतसिंह ने ब्रिटिशर्स के संरक्षण में शासन किया।
- 1849 में खेतसिंह की मृत्यु के बाद यह क्षेत्र पूर्णतः ब्रिटिशर्स के नियंत्रण में आ गया।

चरखारी रियासत

- **1731** में छत्रसाल की मृत्यु के बाद यह क्षेत्र **जगतराज** को प्राप्त हुआ।
- **जगतराज** के बाद **पहाड़सिंह व कीरतसिह** शासक बने।
- कीरत सिंह के बाद **1765** में **खुमानसिंह** शासक बने जिन्होंने बांदा हड़पने की कोशिश की फलतः सेनापति **अर्जुनसिंह** द्वारा इनकी हत्या कर दी गई।।
- इसी रियासत के शासक **विजयबहादुर** ने **ईशानगर तालाब** बनवाया।
- **विजय बहादुर** ने रंजीतसिंह के पुत्र **रतनसिंह** को अपना उत्तराधिकारी बनाया व ब्रिटिशर्स से मान्यता प्राप्त की **(1822)**।

रतनसिंह को उत्तराधिकारी बनाए जाने से नाखुश राजा परीक्षित ने स्वयं को चरखारी का शासक बनाया फलतः 1842 के बुंदेला विद्रोह में रतनसिंह ने अंग्रेजों का साथ दिया था।

चंदेरी वानपुर रियासत

- मुगल सम्राट **जहांगीर** ने **रामशाह** को बानपुरा की जागीर प्रदान की **(1609)**
- बाद में **शाहजहां** ने रामशाह के वंशज **भरतसिंह** से प्रसन्न होकर उसे **चंदेरी** की रियासत भी प्रदान कर दी।
- भरतसिंह ने अपनी राजधानी **चंदेरी** को बनाया।
- **मोर प्रहलाद**
  - ये चंदेरी-वानपुर रियासत के शासक थे।
  - सिंधियाओं ने **जॉन वैपिटिस्टा** के नेतृत्व में आक्रमण करके चंदेरी के एक बड़े भू-भाग पर आधिपत्य कर लिया।
  - बाद में इन्होंने **वानपुर** को अपनी राजधानी बनाया।
  - **1842** में इनकी मृत्यु के बाद **मर्दन सिंह** शासक बने।
- **मर्दनसिंह**
  - चंदेरी-वानपुर के शासक और मोर प्रहलाद के पुत्र।
  - **शासनकाल** = 1842-1858
  - चंदेरी को पुनः प्राप्ति की चाह में 1842 के बुंदेला विद्रोह में अंग्रेजों का साथ दिया लेकिन अंग्रेजों ने इन्हें चंदेरी प्रदान नहीं किया।
  - 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के विरोध में रहे।

अजयगढ़ रियासत

जैतपुरा के राजा पहाड़सिंह ने 1765 में बांदा–अजयगढ़ अपने भतीजे **गुमान सिंह** को प्रदान किया था।

बखतसिंह

- गुमानसिंह का गोद लिया हुआ पुत्र।
- इसके समय अजयगढ़ के किलेदार **लक्ष्मणदौआ** ने अंग्रेजों को लूटा था।
- 1857 की क्रांति के समय अजयगढ़ रियासत के **महीपत सिंह की पत्नी** ने अंग्रेजों का साथ दिया था।

छतरपुर रियासत

यद्यपि छतरपुर की स्थापना **राजा छत्रसाल** ने की लेकिन छतरपुर रियासत की स्थापना **सोनेजु पवार/सोनसिंह** ने की। इन्होंने **1785** में **छतरपुर** को राजधानी बनाकर छतरपुर रियासत की स्थापना की।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **प्रतापसिंह**
  - सोनेजू का ज्येष्ठ पुत्र जो 1786 में शासक बना।
  - इसने 1816 में अंग्रेजों से सुरक्षा संधि की।
  - **नौगांव** मे अंग्रेजी सैन्य छावनी बनवाई ।
  - इसने अपने भाई **खेतसिंह के पुत्र जगतराय** को गोद लिया एवं उत्तराधिकारी बनाया ।
- **जगत राय**
  - 1854 में प्रताप सिंह की मृत्यु के बाद यह अगला शासक बना।
  - नाबालिक होने के कारण प्रताप सिंह की पत्नी ने संरक्षिका की भूमिका अदा की।
  - प्रताप सिंह की पत्नी ने क्रांतिकारियों को 1857 की क्रांति के दौरान गुप्त रूप से सहयोग दिया जबकि जगतराय ने ब्रिटिशर्स को सहयोग दिया।

दतिया रियासत

- **वीरसिंह बुंदेला** ने अपने पुत्र **भगवानदास** को दतिया के बड़ौनी की रियासत प्रदान की।
- इसके बाद ही दतिया राज्य अस्तित्व में आया।
- **भगवानराव बुंदेला**
  - इन्हें दतिया रियासत का प्रथम शासक माना जाता है।
  - भगवानसिंह के बाद **राव शुभकरन** एवं उनके बाद **राव दलपत सिंह** शासक बने।

नोट = **राव दलपत सिंह** की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ जिसमें विजय प्राप्त कर **राव रामचंद्रसिंह** शासक बने जिन्हें मुगल बादशाह **बहादुरशाह** ने दतिया के शासक के रूप में मान्यता दी।

राव उपाधि वाले शासक
- राव भगवानसिंह,
- राव शुभकरणसिंह
- राव दलपतसिंह
- राव रामचंद्रसिंह
- राव इंद्रजीतसिंह
- राव शत्रुजीतसिंह

राजा की उपाधि वाले शासक
- राजा परीक्षित सिंह
- विजय बहादुर सिंह
- भवानी सिंह
- गोविंद सिंह जूदेव

- **शत्रुजीत सिंह**
  - ये ग्वालियर शासकों से संघर्ष करते हुए मारे गए।
- **राजा परीक्षित**
  - ये **1801–1839** के मध्य दतिया रियासत के राजा थे।
  - इन्होंने मराठों से व्यथित होकर **1804** में अंग्रेजों से सुरक्षा संधि की जिसमें **1818** में संशोधन हुआ।?

विजयराघवगढ़ रियासत

- यह **कटनी क्षेत्र** में विस्तृत रियासत थी।
- पन्ना रियासत में व्याप्त अराजकता का लाभ उठाकर **बैनी हजूरी (कछवाहा)** ने मैहर क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।
- **1826** में मैहर राज्य के विभाजन के बाद **मैहर एवं विजयराघवगढ़** नामक दो राज्य बने।
- मैहर के राजा **विष्णुसिंह** जबकि विजयराघवगढ़ के राजा **प्रयागदास** बने।
- प्रयागदास के बाद उसका अल्पवयस्क पुत्र गद्दी पर बैठा चूंकि यह अल्पवयस्क था अतः कंपनी ने प्रशासन अपने हाथों में लेकर **साबिर अली** को प्रशासक/तहसीलदार बनाया फलतः **सरजू प्रसाद** नाखुश हुए।
- सरजू प्रसाद में 1857 की क्रांति के समय साबिर अली के हत्या कर ब्रिटिशर्स को चुनौती दी।

मौधा रियासत के संस्थापक = **अनूपगिरी हिम्मत बहादुर** थे।
करौली रियासत के संस्थापक = **गोपाल सिंह।**

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

गोंडवाना रियासत

गोंडो का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। इसके साक्ष्य हमें निम्न रूपों में प्राप्त होते हैं।

- रामायणकाल में **दंडकारण्य** क्षेत्र में गोंड जनजाति के निवास के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- **रामनगर अभिलेख**
  - यह **1667** में **संस्कृत भाषा** में **हृदयशाह** द्वारा उत्कीर्ण अभिलेख है।
  - इसमें यादवराय से लेकर हृदयषाह तक **64 शासकों** का उल्लेख है।
- **कर्नल स्लीमैन** ने अपने विवरण में यादवराय से लेकर अंतिम शासक सुमेरशाह तक का वर्णन किया है।
- **गणेशनृपवर्णनम**
  - यह संस्कृत श्लोक ग्रंथ है।
  - इसमें 64 श्लोकों में गोंड वंश के **63 शासकों** का अवधि सहित उल्लेख किया गया है।
- गोंड वंश के शासक स्वयं को रावणवंशी भी बताते हैं।

जानकारी के अन्य स्त्रोत

- अकबरनामा
- सिख ग्रंथ सूरजप्रकाश
- वीरभानुदयकाव्यम
- हर्रका के सती लेख
- रसरत्नमाला (संग्रामशाह)
- तत्व चिंतामणि (महेश ठाकुर)
- गजेंद्रमोक्षकाव्यम (लक्ष्मीप्रसाद दीक्षित)

गोंडवाना क्षेत्र के कई रियासतों का शासन रहा जिसमें 4 रियासतों का योगदान महत्वपूर्ण है –

गढमंडला का गोंडराज्य | देवगढ राज्य | चांदा राज्य | खेरला राज्य

गढा मंडला का गोंड राज्य

यादव राय

- यह गढ़ा के गोंड वंश का **संस्थापक** था।
- इन्हें गोंडवाना राज्य का आदिपुरूष भी माना जाता है।
- इन्होंने दमोह शासक की पुत्री से विवाह कर गढ़मंडला की स्थापना की ।

अकबरनामा के अनुसार यादव राय के बाद **खरजी, गोरक्षदास, सुखनदास, अर्जुनदास, व संग्रामशाह** क्रमशः शासक हुए।

अर्जुनदास

- गढ़मंडला के गोंड वंश के शासक **(1506-1510 ईस्वी)**
- इसी के समय **गुरू नानक ने गढ़ा की यात्रा** की जिसकी जानकारी हमें सिख ग्रंथ **सूरजप्रकाश** से प्राप्त होती है।
- इन्होंने अपने छोटे पुत्र **जोगीदास** को उत्तराधिकारी बनाया फलतः बड़े पुत्र **आम्हणदास** ने विद्रोह किया एवं अपने पिता **अर्जुन दास** की हत्या कर दी एवं शासक बन गया जिसकी जानकारी हमें **हर्रका व दमोह के 2 लेखों** से प्राप्त होती है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

संग्रामशाह

- **मूल नाम** = अमनदास/आम्हणदास (1510–1543)
- **उपाधि** = गुजरात के सुल्तान **बहादुरशाह** ने रायसेन विजय में सहायता देने के कारण अमरदास को संग्राम शाह की उपाधि दी।
- **पत्नी** = सुमति, पद्मावती
- **पुत्र** = दूसरी पत्नी पद्मावती से दो पुत्रों **दलपत शाह एवं चंद्रशाह** का जन्म हुआ।
- **सिक्के** = इसने सोने, चांदी, तांबे के सिक्के जारी किए जिन पर तेलुगु भाषा एवं देवनागरी लिपि का अंकन मिलता है सोने के सिक्कों पर इसे **पुलुत्यवंशीय** कहा गया है।

उपलब्धियां

- बावन गढ़ों तक साम्राज्य विस्तार कर **बावनगढ़ाधिपति** की उपाधि धारण कीं
- सुरक्षात्मक दृष्टि से 52 गढ़ों का निर्माण कराया।
- संग्रामपुर शाह नामक नगर बसाया।
- गढ़ा में संग्रामशाह सरोवर, मदन महल का निर्माण कराया।
- बाजना मठ का निर्माण कराया।
- स्वयं विद्वान शासक आपने **रसरत्नमाला** नामक ग्रंथ की रचना की।
- प्रसिद्ध विद्वान **दामोदर ठाकुर** को संरक्षण दिया जिन्होंने **संग्रामशाही विवेक व दिव्यनिर्णय** जैसे ग्रंथों की रचना की।

दलपतिशाह

- **परिचय** = संग्राम शाह के उत्तराधिकारी एवं पुत्र (1543-1550)
- **शासनकाल** = राजधानी गढ़ा से **सिंगौरगढ़** स्थानांतरित की।
- **विवाह** = 1542 में इनका विवाह कीरत सिंह की पुत्री **दुर्गावती** से हुआ।
- **उपलब्धियाँ**
  - आधारसिंह नामक कायस्थ को इन्होंने अपना प्रधानमंत्री बनाया।
  - **केशव लौगाक्षी** नामक विद्वान को संरक्षण दिया।
  - **तत्वचिंतामणि** के लेखक **महेश ठाकुर** को संरक्षण दिया।
  - धर्मसहिष्णु शासक के रूप में **मुस्लिम संत कपूर बाबा को सम्मान** दिया।

नोट = **दलपत शाह** की मृत्यु के बाद उनका अल्पवयस्क पुत्र **वीरनारायण** शासक बना एवं संरक्षिका के तौर पर राज्य की समस्त शासन शक्तियों का प्रयोग **दुर्गावती** ने किया।

दुर्गावती

- **परिचय** = दलपतशाह की पत्नि एवं गोंड राज्य की शासिका।
- **जन्म** = 1524 (कालिंजर)
- **पिता** = चंदेल शासक कीरतसिंह
- **विवाह** = 1542 में गौंड शासक दलपतिशाह से विवाह हुआ।
- **शासनकाल** = **1550 से 1564** क्योंकि दलपतषाह की असमय मृत्यु पुत्र हो गई थी और पुत्र **वीरनारायण** अल्पवयस्क था।
- **सहयोगी** = शासन संचालन में सहायता हेतु **आधारसिंह** को सेनापति, **वामन ठाकुर** को प्रधानमंत्री बनाया।
- **राजधानी** = चौरागढ़ (नरसिंहपुर)
- **सैन्य उपलब्धियाँ**
  - मियां अफगानों को हराया एवं बाद में उन्हें अपनी सेना में नौकरी प्रदान की।
  - मालवा शासक बाजबहादुर को दो बार हराया।
  - मुगलों को **नरई के युद्ध** में हराया लेकिन बाद में पराजित हुई **(1564)**।
- **सांस्कृतिक उपलब्धियाँ**
  - **महेश ठाकुर, दामोदर ठाकुर**, पोप महापात्र, नरहरी महापात्र, जैसे विद्वानों को संरक्षण दिया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

अकबर ने **आसफ खां** के नेतृत्व में गढ़ा पर सेना भेजी जहां **नरई के युद्ध** में **दुर्गावती** ने आरंभ में विजय प्राप्त की लेकिन बाद में पराजय को देखते हुए **24 जून 1564** को आत्म बलिदान कर दिया। इनकी मृत्यु के पश्चात गढ़ा पर मुगल आधिपत्य स्थापित हुआ। अकबर ने **आसफ खां** को गढ़ा का सूबेदार बनाया। बाद में आसफ खां की वापसी के बाद गढ़ा राजाओं को ही अधीनस्थ मानकर गढ़ा प्रदेश का शासन उनको सौंप दिया गया।

गोंड वंश के शासक

अर्जुनदास
↓
आम्हणदास
↓
दलपतशाह
↓
दुर्गावती
↓
चंद्रशाह
↓
मधुकरशाह (1575–1586)
↓
प्रेमशाह (1586–1627)
↓
हृदयशाह
↓
छत्रसाह (1672–1684)
↓
केषरीशाह(1684)
↓
हरिसिंह (1984-1987)
↓
पहाडसिंह
↓
नरेंद्रशाह (1687–1713)
↓
महाराजशाह (1713–1741)
↓
शिवराजशाह (1741–1749)
↓
दुर्जनशाह
↓
निजामशह (1749–1776)

चंद्रशाह

- ये **दलपतशाह के अनुज** थे जो वीरनारायण (दुर्गावती) के बाद शासक बने।
- ये **1564 से 1576** तक गढ़ा मंडला के शासक रहे।
- 1576 में इनके पुत्र **मधुकरशाह** ने इनकी हत्या कर दी।

मधुकरशाह

- ये **1576 से 1586** तक गढ़ा मंडला के शासक रहे।
- यह अपने पिता की हत्या कर गद्दी पर बैठा था।
- यह मुगल शासन के प्रति **कृतज्ञता व्यक्त करने वाला प्रथम शासक** था।
- इन्होंने **माधव बाजपेई** को अपना पुरोहित बनाया।
- इन्हीं की समय बघेलखंड में गोंड़ो का आधिपत्य स्थापित हुआ।
- **मृत्यु** = 1586

प्रेमशाह

- **शासनकाल** = 1586-1626
- **उपाधि** = **अमोदा सतीलेख** से जानकारी प्राप्त होती है कि इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी।
- **संरक्षण** = **विष्णु दीक्षित एवं गंगाधर वाजपेई** जैसे विद्वानों को संरक्षण दिया।
- **हत्या** = इसी के समय बुंदेला शासक **जुझारसिंह बुंदेला** ने चौरागढ़ पर आक्रमण कर प्रेमशाह की हत्या कर दी एवं **चौरागढ़** पर आधिपत्य कर लिया लेकिन जहांगीर के हस्तक्षेप के चलते जुझारसिंह चौरागढ़ को छोड़कर भाग गया था।

हृदयशाह

- **परिचय** = यह गोंड वंश का कला प्रेमी एवं महान शासक था।
- **राजधानी** = इसने राजधानी **रामगढ़** स्थानांतरित की क्योंकि चौरागढ़ पर बुंदेला शासकों का कब्जा हो गया जिसकी जानकारी हमें **गणेशनृपवर्णनम** व लक्ष्मीप्रसाद दीक्षित के **गजेंद्रमोक्षकाव्य** से प्राप्त होती है।

छत्रशाह

- ये हृदयशाह के ज्येष्ठ पुत्र एवं उत्तराधिकारी थे।
- इसी के समय प्रणामी समुदाय के प्रसिद्ध गुरु **महाप्रभु प्राणनाथ** का आगमन हुआ।

VIDYA ICS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

हरिसिंह

- **नरेंद्रशाह के मामा जुगराज सिंह** द्वारा षडयंत्र पूर्वक इसकी हत्या कर दी गई।

पहाड़सिंह

- हरिसिंह का पुत्र जो **नरेंद्रशाह के भय से** दक्षिण भाग गया और औरंगजेब की सेना में भर्ती हो गया।

नरेंद्रशाह

- यह **छत्रसाह का पुत्र** एवं गोंडवंशीय शासक था।
- ये आरंभ में **फतेहगढ़ के निकट** पहाड़सिंह से पराजित हुआ लेकिन बाद में इसने **केतुगांव के युद्ध** में पहाड़सिंह को मार दिया।
- उल्लेख मिलता है कि इसने अपनी **राजधानी रामगढ़ से मंडला** स्थानांतरित की।
- इसने अपने सिक्कों पर **महाकाली** का नाम अंकित करवाया।

हृदयशाह की उपलब्धियां

- महोबा से पान उगाने में सिद्धहस्त पंसारियों को बसाकर राज्य का आर्थिक आधार मजबूत किया।
- स्वयं कुशल संगीतज्ञ थे एवं संगीत पर दो ग्रंथों की रचना की
  - **हृदय प्रकाश**
  - **हृदय कौतुक**
- इसने **कमलदत्त ठाकुर, विष्णु दीक्षित एवं बैजनाथ दीक्षित** जैसे विद्वानों को संरक्षण दिया।
- इसने गढ़ा के निकट **गंगासागर तालाब** बनवाया ।
- इसी के समय रामनगर में रानी द्वारा **बघेलिन महल** एवं अधिकारी भगतराय द्वारा **सुंदरमहल** का निर्माण कराया गया।

महाराजशाह

- **शासनकाल** = 1713 से 1741
- इसी के समय गढ़ा पर मराठों का आक्रमण हुआ एवं **बालाजी बाजीराव ने मंडला** को जीता।
- अपनी पराजय से दुखी होकर महाराजशाह ने **अग्नि समाधि** ले ली।

नोट = महाराजशाह के बाद शिवराजशाह एवं दुर्जनशाह शासक हुए जिनके बारे में विशिष्ट उपलब्धि नहीं मिलती है।

निजामशाह
⬇
महीपालसिंह
⬇
नरहरिशाह
(1776-1780)
⬇
सुमेरशाह
(1780-1782)
⬇
पुनः नरहरिशाह
⬇
शंकरशाह व
रघुनाथशाह

निजामशाह

- इसी के समय **लक्ष्मीप्रसाद दीक्षित** ने **गजेंद्रमोक्षकाव्य** नामक काव्य लिखा।
- इसका पुत्र सुमेरशाह था।

महिपालसिंह

- यह निजामशाह की दासी का पुत्र था।
- इसी के समय शिवराजशाह की विधवा **विलास कुंवरि** के हस्तक्षेप से **नरहरिशाह** अगला शासक बना।

नरहरिशाह के शासक बनने से असंतुष्ट निजामशाह के पुत्र **सुमेरशाह** ने पेशवा प्रतिनिधि **विसाजी चंदोरकर** के सहयोग से गढ़ा पर आक्रमण करके सत्ता अपने हाथों में ले ली।

सुमेरशाह

- **शासनकाल** = 1780-82
- इसने **विलास कुंवरि** की हत्या करवाई।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- यह कठपुतली नवाब बनकर नहीं रहना चाहता था अतः इसने **पेशवा प्रतिनिधि विसाजी** के विरूद्ध विरोध विद्रोह किया।
- **1782** में बिसाजी ने **मानगढ़ के युद्ध** में सुमेरशाह को पराजित किया एवं दमोह के **जटाशंकर किले** में कैद करके पुनः नरहरिशाह को शासक बनाया ।

बिसाजी ने सुमेरशाह को पराजित करने के बाद नरहरिशाह को शासक बनाया ताकि वह पूर्व संधि में निर्धारित क्षतिपूर्ति राशि की बकाया राशि का भुगतान कर दे।

नरहरिशाह (पुनः शासक)

- इसके समय वास्तविक सत्ता मराठों के पास ही थी।
- इसने वास्तविक सत्ता की प्राप्ति की चाह में विद्रोह किया एवं एक युद्ध में **बिसाजी** मारे गए।
- बाद में बिसाजी के प्रतिनिधि **मोराजी** ने पहले **तेजगढ़ (दमोह)** बाद में **चौरागढ़** में नरहरिशाह को हराया एवं बंदी बनाया।
- **1789** में **खुरई के किले** के बंदीगृह में नरहरिशाह की मृत्यु हो गई।

नोट = सुमेरशाह के पुत्र शंकरशाह एवं रघुनाथशाह ने 1857 के विद्रोह में भागीदारी की थी।

गोंड़ कालीन स्थापत्य कला

- दुर्ग एवं किले
- मठ एवं मंदिर
- तालाब
- बाबडियाँ

दुर्ग एवं किले

- इस समय 52 गढों का निर्माण हुआ जिसमें प्रमुख हैं –
- **गढ़ा दुर्ग**
  - इसे मदन महल दुर्ग भी कहते हैं।
  - **अवस्थिति**= गढ़ा (जबलपुर)
  - **निर्माता** = मदनशाह
- **सिंगौरगढ़ दुर्ग**
  - यह दमोह में अवस्थित 52 गढों में से एक था।
  - **निर्माता** = संग्रामशाह
- **चौरागढ़ दुर्ग**
  - नरसिंहपुर में अवस्थित 52 गढों में से एक था।
  - **निर्माता** = संग्रामशाह
  - यह 52 गढ़ों का कोषालय था।
- **रामनगर दुर्ग**
  - जबलपुर स्थित 52 गढों में से एक था।
  - **निर्माता** = **हृदयशाह**
  - मोती महल, रानी महल, राय भगत की कोठी इसी महल में है।

प्रमुख दुर्ग

- गढा/मदनमहल दुर्ग
- सिंगौरगढ़ दुर्ग (दमोह)
- चौरागढ़ दुर्ग(नरसिंहपुर)
- रामनगर दुर्ग (जबलपुर)
- मंडला दुर्ग

अन्य प्रमुख महल

- राय महल
- रानी महल
- आमखास
- मोती महल (हृदयशाह)
- बेगम महल (इसे हृदयशाह ने अपनी पत्नी चिमनी बेगम के निवास हेतु बनवाया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

मठ एवं मंदिर

- **बाजना मठ**
  - यह जबलपुर में अवस्थित **तांत्रिक मंदिर** है।
  - इसे **बटुक भैरवनाथ मंदिर** भी कहा जाता है
- **पचमठा मंदिर**
  - यह **जबलपुर** में अवस्थित है।
  - यह **राधावल्लभ** संप्रदाय से संबंधित है।
- मठियामठ (गोपालपुर)
- कुआंगांव शिव मंदिर (कटनी)

बाबड़ियाँ

- **चौरागढ** स्थित बाबड़ी
- रामनगर स्थित बाबड़ी
- छोटा–टोला स्थित बाबड़ी

तालाब

- **संग्राम सागर**
  - जबलपुर में संग्रामशाह द्वारा निर्मित विशाल तालाब
  - तालाब के बीचों-बीच **आम खास** नामक ऐतिहासिक महल है।
- रानीताल
- गंगासागर
- आधारताल
- देवताल

गोंडकालीन साहित्य

क्र.	रचना	विद्वान
1	हृदय कौतुक	हृदयशाह (शासक)
2	रसरत्नमाला	संग्रामषाह (शासक)
3	गणेशनृपवर्णम	रूपनाथ झा
4	तत्वचिंतामणि	महेश ठाकुर
5	संग्रामशाही विवेक	दामोदर ठाकुर
6	दिव्य निर्णय	दामोदर ठाकुर
7	गजेंद्रमोक्षकाव्य	लक्ष्मीप्रसाद दीक्षित
8	रसमंजरी	भानुदत्त मिश्र
9	दुर्गावती प्रकाश	पद्मनाथ भट्टाचार्य
10	सर्वसंदशवृतान्त संग्रह	महेश ठाकुर

गोंडवाना की अन्य रियासतें

देवगढ़ का गोंड राज्य | चांदाराज्य | खेरला राज्य

देवगढ़ का गोंड राज्य

सामान्य परिचय

- गढ़ा राज्य के अतिरिक्त गोंडों की एक अन्य शाखा ने देवगढ़ पर शासन किया।
- यह राज्य पहले गढ़ा मंडला के अंतर्गत ही आता था।
- **राजधानी = हरियागढ़ (छिंदवाड़ा)**

तुलोवा

- यह देवगढ़ के गोंड राज्य का पहला शासक था।
- **राजधानी** = हरियागढ़

राजा जाटवा

- यह गढ़ा मंडला के शासक प्रेमशाह के समकालीन देवगढ़ का गोंड शासक था।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- इसका अन्य नाम **अजानबाहु जाटवशाह** था।
- इसने **धनसूर एवं रनसूर** नामक ग्वाल राजाओं की हत्या कर देवगढ़ राज्य की **पुनर्स्थापना** की।
- इसने राजधानी **हरियागढ़ से देवगढ़** स्थानांतरित की।
- इसने **देवगढ़ का किला** एवं **दशावतार मंदिर** बनवाया।

देवगढ के गोंड शासक

तुलोबा
↓
राजा जाटवा
↓
दलशाह
↓
कोकशाह प्रथम
↓
जाटवा–II
↓
कोकशाह–II
↓
दीनदारशाह
↓
महिपतशाह
↓
चादसुल्तान
↓
अकबरशाह

दलषाह

- यह अजानबाहु जाटवा का ज्येष्ठ पुत्र था।
- इसने **जुझार सिंह बुंदेला** को शाहजहां के विरुद्ध विद्रोह के बाद दक्षिण में भागने में मदद की।

कोक शाह II

- **शासनकाल** = 1680-86
- **अन्य नाम** = गोरखशाह
- औरंगजेब के सेनापति **दिलेरखां** के आक्रमण के बाद इसने औरंगजेब की आधीनता स्वीकार की।
- इसने बाद में मुस्लिम धर्म को स्वीकारा व अपना नाम **इस्लाम यार खान** रख लिया।

दींदार / दींदारशाह

- यह कोकषाह–II का छोटा पुत्र था।
- बाद में कोकशाह–II का बड़ा पुत्र **महिपतिशाह** अगला शासक बना।

महिपतिशाह

- यह गोरखाशाह / कोकशाह का बड़ा पुत्र था। **(1684–1709)**
- यह छोटे भाई दींदर के शासक बनने पर रुष्ट होकर औरंगजेब के पास चला गया।
- औरंगजेब ने इसे मुस्लिम धर्म स्वीकार करवाया एवं देवगढ़ के राजा के रूप में मान्यता दी।
- बाद में यह **बख्तबुलंद** के नाम से गद्दी पर बैठा व इसने **देवगढ़ का नाम इस्लामगढ़** रखा।

नोट = बाद में **बख्तबुलंद** ने स्वतंत्र शासक की भांति व्यवहार किया फलतः **औरंगजेब** द्वारा पुनः दींदर को यहां का शासक बना दिया गया।

चांदसुल्तान

- यह **बख्तबुलंद** का ज्येष्ठ पुत्र था। **(1709–1729)**
- इसने राजधानी **देवगढ़ से नागपुर** स्थानांतरित की।

नोट = चाँद सुल्तान के पश्चात् **अकबरशाह व बुरहानशाह** देवगढ़ के शासक बने। ये शासक अयोग्य थे व इनके समय वास्तविक शक्तियाँ रघुजी भोंसले के पास थीं।

खेरला का गोंड राज्य

चाँदा राज्य
- शासनकाल = 1200–1751
- संस्थापक = खंडाया बल्लालशाह

- **परिचय** = मध्यप्रदेश के बैतूल क्षेत्र में स्थित गोंड राज्य की शाखा।
- **शासन क्षेत्र** = बैतूल से अमरावती।
- **अन्य नाम** = खेरला राज्य को बदनूर नाम से भी जाना जाता था।
- **वर्णन** = मराठी ग्रंथ **विवेकसिंधु** में खेरला राज्य का वर्णन मिलता है।
- **प्रमुख शासक** = राजा इल, नरसिंहराय, जैतपाल
- **खेरला किला** = बैतूल

मुगलों के लगातार आक्रमण से व्यथित होकर खेरला के शासकों ने मुगलों से समझौता किया व खेरला का नाम बदलकर **महमूदाबाद** कर दिया बाद में इस क्षेत्र पर मराठों का आधिपत्य स्थापित हुआ।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

भोपाल रियासत

- यह मध्य भारत की सबसे प्रमुख व भारत की महत्वपूर्ण मुस्लिम देशी रियासत थी।
- यहां के शासक इस्लाम धर्म के अनुयायी थे।
- **भोपाल शहर**
  - मध्यप्रदेश राज्य की राजधानी जो भोपाल रियासत का केंद्र भी था।
  - यह मालवा पठार के उपजाऊ मैदान में विंध्य रेंज के उत्तर में अवस्थित है।
  - भोपाल शहर की स्थापना **राजा भोज** ने की जिसे **भोजपाल/भू–पाल** के नाम से जाना गया।

भोपाल रियासत पृष्ठभूमि

- मुगलकाल में भोपाल पर **मुगलों** का आधिपत्य था और अकबर के **15 सूबों** में मालवा भी एक सूबा था और भोपाल, **मालवा सूबे** के अंतर्गत ही आता था।
- औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके सैन्य अधिकारी **दोस्त मोहम्मद खान (अफगानी मूल)** ने इस क्षेत्र में भोपाल रियासत की स्थापना की (**1723**)

दोस्त मोहम्मद खान

- **परिचय** = यह अफगानी मूल का महत्वाकांक्षी व्यक्ति था।
- **शासनकाल** = 1723 से 1726
- **स्थापना** = आरंभ में यह मुगल सेना से जुड़ा लेकिन बाद में इसने भोपाल में स्वतंत्र मुस्लिम राज्य की स्थापना की **(1723)**
- इसने भोपाल रियासत के **संस्थापक के रूप में निम्न कार्य** किए –
  - इसने 1704 में ग्वालियर के निकट **तर्जीवेग** को हराया।
  - इसने भेलसा के **मोहम्मद फारुख** को हराया।
  - महालपुर, ग्यारसपुर, अंबापानी, सांची, इच्छावर, सीहोर पर कब्जा किया।
  - **रानी कमलापति** के सहयोग से चैनपुर बाड़ी पर विजय।
  - **बेरसिया** पर कब्जा किया।
- **स्थापत्य योगदान**
  - भोपाल में **बड़ी झील** के निकट **फतेहगढ़ किला** बनवाया।
  - भोपाल को गढ़ी के रूप में तब्दील किया।
  - **ढ़ाई सीढ़ी मस्जिद** का निर्माण (भोपाल)

भोपाल राज्य की स्थापना के बाद इसने जगदीशपुर का नाम इस्लामनगर कर उसे अपनी राजधानी बनाया लेकिन बाद में फतेहगढ़ को अपनी राजधानी बनाया।

दोस्त मोहम्मद खान की मृत्यु के बाद उसका छोटा पुत्र **सुल्तान मोहम्मद खान** अमीरों के सहयोग से गद्दी पर बैठा क्योंकि बड़ा पुत्र **1723** के बाद से एक संधि के तहत निजाम की सेवा में था लेकिन बाद में निजाम ने दोस्त मोहम्मद खान के बड़े पुत्र **यार मोहम्मद खान** को नवाब की उपाधि देकर सेना सहित भोपाल भेजा जहां आकर उसने मोहम्मद खान को गद्दी से हटाकर शासन संभाला।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

यार मोहम्मद खां

- यह दोस्त मोहम्मद खां का बड़ा पुत्र था।
- इसने निजाम की सेवा से आकर शासन संभाला एवं इस्लाम नगर को अपनी राजधाानी बनाया।
- इसका **इस्लामनगर को भोपाल की राजधानी बनाया।**
- मराठों के साथ इसका निरंतर संघर्ष बना रहा इसी क्रम में मराठों को रोकने निजाम भोपाल आए एवं **भोपाल युद्ध** हुआ।

भोपाल युद्ध

- **1737** में मराठाओं व निजामों के मध्य यह संघर्ष हुआ।
- मराठा विजयी रहे एवं निजाम पराजित हुए।
- दोनों पक्षों के मध्य **दौरायसराय की संधि** हुई।

नवाब फैज मोहम्मद खान

- **परिचय** = यार मोहम्मद खां का सबसे बड़ा पुत्र एवं उत्तराधिकारी ।
- **शासनकाल** = 1742 –1777
- **उपनाम** = सूफी नवाब, क्योंकि यह धार्मिक प्रवृत्ति का था।
- **प्रभाव** = आरंभ में अल्पवयस्क व धार्मिक प्रवृत्ति का होने के कारण यार मोहम्मद की विधवा **मामोला बीबी** का इस पर अत्यधिक प्रभाव था।
- इसी के समय मराठा आक्रमण के चलते **सीहोर व सुजालपुर** मराठों के आधिपत्य में चले गए।
- इसका पहला दीवान **विजयराम** था बाद में इसने **घासीराम** को अपना दीवान बनाया।
- इसके दीवान **घासीराम** ने गौ हत्या कर प्रतिबंध लगाया।
- इसने चाचा सुल्तान मुहम्मद खान को **ईदगाह मैदान युद्ध** में हराया **(1742)**।

नोट = ईदगाह मैदान युद्ध उत्तराधिकार के लिए हुआ संघर्ष था। इसमें सुल्तान मोहम्मद खान की पराजय के बाद मामोला बीबी के कहने पर फैज मोहम्मद खान ने उसे (चाचा) राहतगढ़ की जागीर प्रदान की।

नवाब हयात मोहम्मद खान

- ये नवाब फैज मोहम्मद खान के भाई थे **(1778-1808)**
- इनका **सालेहा बेगम** से उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ।
- इसी के समय अव्यवस्था का लाभ उठाकर **शरीफ खां** ने विद्रोह किया लेकिन **फंदा के युद्ध** में नवाब की सेना ने शरीफ खां को हरा दिया।
- **फतेहगढ़ किले** की मरम्मत करवाई।

नवाब गौस मोहम्मद खान

- **शासनकाल** = 1808 से 1827
- वजीर के पद का सृजन कर उस पर **मोहम्मद खां** को नियुक्त किया।
- इसने मामोला बीबी के कहने पर **दीवान छोटे खां** को अपना प्रधानमंत्री बनाया।
- मोहम्मद खान ने अपने पुत्र **नजर मोहम्मद** का विवाह गौस मोहम्मद की पुत्री **गौहर बेगम** से कराया ताकि नजर मोहम्मद को आगे नवाब बनने में दिक्कत ना हो।
- वजीर मोहम्मद खान के कहने पर नवाब गौस मोहम्मद **रायसेन** चले गए एवं इनके समय में भोपाल में 3 व्यक्तियों ने क्रमशः शासन किया।
  - **वजीर मोहम्मद खान (1808 – 1816)**
  - **नजर मोहम्मद खान (1816 –1819)**
  - **कुदसिया बेगम (1819 –1837)**

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

नजर मोहम्मद खान

- **वजीर मोहम्मद खां** का पुत्र जिसका विवाह **गौहर बेगम/कुदसिया बेगम** से हुआ था।
- इसने सुरक्षात्मक दृष्टि से **फरवरी 1818** में अंग्रेजों के साथ **रायसेन की संधि** की जो मूलतः एक सुरक्षा संधि थी।
- यह निसंतान थे अतः अगले शासक इनके भतीजे बने।
- बड़ा भतीजा **मुनीर मोहम्मद** अल्प समय के लिए शासक बना जबकि छोटे भतीजे **जहांगीर मोहम्मद खान** ने **1827 से 1844** तक शासन किया।

नोट 1819 में नजर मोहम्मद खान की असमय मृत्यु के बाद भोपाल के **पोलिटिकल एजेंट हेनले** ने कुदसिया बेगम को रियासत की संपूर्ण शक्तियां सौंप दी थी।

कुदसिया बेगम

- **परिचय** = नवाब गौस मोहम्मद की पुत्री एवं नजर मोहम्मद खां की पत्नी।
- **मूल नाम** = गौहर खान
- **कार्य**
  - पर्दा प्रथा त्याग कर शासन संचालन किया।
  - भोपाल में जल प्रबंधन की बेहतरी हेतु जर्मन इंजीनियर **डेविस कुरु** को नियुक्त किया।
  - **गौहर महल** एवं **जामा मस्जिद** का निर्माण कराया।
  - भोपाल के हज यात्रियों हेतु मदीना में यात्रा ग्रह बनवाए
- **अंतिम समय**
  - इन्होंने अपनी पुत्री **सिकंदरा जहां** का विवाह **जहांगीर मोहम्मद खान** से किया लेकिन बाद में कुदसिया बेगम ने जहांगीर मोहम्मद खान के साथ विवाद के चलते **1837** में **राजनीतिक संन्यास** ले लिया।

जहांगीर मोहम्मद खान

- **परिचय** = नजर मोहम्मद खान का भतीजा एवं दामाद।
- **शासनकाल** = 1827-1844
- इन्होंने **1835** में **सीहोर हाईस्कूल** की स्थापना की जो **भोपाल का सबसे पुराना विद्यालय** है।
- **बुंदेला विद्रोह** के समय ये ब्रिटिशर्स के समर्थक रहे।
- **मृत्यु** = 1844

- जहांगीर मोहम्मद ने अपनी मृत्यु काल में अपनी रखैल के पुत्र **दस्तगीर** को नवाब बनाने की बात कही लेकिन ब्रिटिशर्स ने **शाहजहां बेगम** की गद्दी का वारिस चुना।
- **1844-1847** तक शाहजहां बेगम नवाब बनी रही लेकिन अल्पायु के कारण उनको पद से हटाकर **सिकंदर बेगम** को नवाब बनाया गया।

भोपाल के शासक

दोस्त मोहम्मद खान
⇩
यार मोहम्मद खान
⇩
नवाब फैज मोहम्मद खान
⇩
हयात मोहम्मद खान
⇩
गौस मोहम्मद खान
⇩
वजीर मोहम्मद खान
⇩
नजर मोहम्मद खान
⇩
कुदसिया बेगम
⇩
जहांगीर मोहम्मद खान
⇩
नवाब सिकंदर बेगम
⇩
सिकंदर बेगम
⇩
नबाब शाहजहां बेगम
⇩
नवाब सुल्तानजहां
⇩
नवाब हमीदुल्लाह खां

जामा मस्जिद

- भोपाल में लाल पत्थर से निर्मित।
- चारबाग पद्धति पर आधारित।
- फ्रेंच यात्री **रूजवेल्ट** इसकी प्रशंसा करता है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

नवाब सिकंदर बेगम

- **परिचय** = कुदसिया बेगम की पुत्री एवं भोपाल रियासत की शासिका।
- **शासनकाल** = 1847-1868
- **विशेष** = अलेक्जेंडर कनिंघम ने इन्हें **भोपाल रियासत का वास्तविक संस्थापक** माना है।
- **सम्मान** = **1857** के विद्रोह के समय ब्रिटिशर्स को इन्होंने पूर्ण सहायता दी फलतः जबलपुर में आयोजित भव्य दरबार में इन्हें **कैनिंग** ने **बैरसिया परगना** प्रदान किया।
- **1864** में हज यात्रा की।
- **उपलब्धियां**
  - प्रशासनिक नियमों को लिपिबद्ध कराया।
  - भोपाल में निजीकोष व टकसाल की स्थापना की।
  - आधुनिक न्यायालयों की स्थापना कर न्यायिक सुदृढीकरण।
  - बुद्धिजीवी कुलीन वर्ग **मजलिस–ए–शूरा** की स्थापना की।
  - सीमा शुल्क कार्यालय की स्थापना की।
  - रेगुलर स्कूल की स्थापना की।
  - **लाला किशनराम** को न्याय एवं राजस्व विभाग का मंत्री बनाया
  - भोपाल में **सिकंदरी प्रिंटिंग प्रेस** की स्थापना की

इनके शासनकाल में भोपाल रियासत में अभूतपूर्व प्रगति हुई साथ ही आर्थिक एवं प्रशासनिक सुधारों के कारण रियासत का विस्तार एवं सुदृढीकरण भी हुआ। अतः इनके काल को **भोपाल रियासत का स्वर्ण काल** कहा जाता है।

नवाब सिकंदर जहां के स्थापत्य कार्य

- मोती मस्जिद का निर्माण
- मोती महल का निर्माण
- शौकत महल का निर्माण

नवाब शाहजहां बेगम

- **परिचय** = सिकंदर बेगम की पुत्री एवं भोपाल रियासत की शासिका।
- **शासनकाल**
  - 1844-1847 (प्रथम बार)
  - 1868-1901 (द्वितीय बार)
- आरंभ में अल्पवयस्क (7 वर्ष) होने के कारण **1847 से 1868** तक सिकंदर जहां बेगम ने सत्ता संभाली।
- **प्रथम विवाह** = बाकी मोहम्मद खान (1855 में मृत्यु)
- **द्वितीय विवाह** = सैयद सिद्दकी हसन (मौलवी)
- **सुधार कार्य**
  - **सिंह–ए–कहोरी** नामक विभाग बनवाया जो भोपाल के आसपास के क्षेत्रों में आवश्यकता पड़ने पर अनाज वितरित करता था।
  - **शाहजहांनी घाट** एवं **शाहजहांनी पुल** का निर्माण करवाया।
  - **शाहजहांनी सिक्का** चलाया।
  - **शाहजहांनी प्रिंटिंग प्रेस** की स्थापना।
  - **विक्टोरिया स्कूल एवं मदरसा–ए–बिलिकिसिया** की स्थापना की।
  - पुरुषों हेतु **प्रिंस ऑफ वेल्स** जबकि महिलाओं हेतु **लैंसडाउन** नाम से आधुनिक अस्पताल बनवाऐ।
  - भोपाल रियासत का **मानचित्रण** कराया।
  - **तान्जीमान–ए–षाहजहांनी** नाम से न्यायिक विभाग स्थापित किया।
  - **ताज-उल मस्जिद** एवं **लाल कोठी भवन** का निर्माण कराया।
  - **गौहर–ए–इकबाल** नामक उर्दू ग्रंथ लिखा।

लाल कोठी महल

यह महल भोपाल में पोलिटिकल एजेंट के लिए बनवाया था वर्तमान में यह **मध्यप्रदेश का राजभवन** है।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

नवाब सुल्तानजहां बेगम

- **परिचय** = शाहजहां बेगम की पुत्री एवं भोपाल रियासत की शासिका।
- **शासनकाल** = 1901–1926
- **अन्य नाम** = कैखुसरो जहां बेगम, सरकार अम्मा
- **विशेष** = इनके समय से ही **भोपाल रियासत में आधुनिक युग का प्रारंभ** माना जाता है।
- **सुधार कार्य**
  - **दफ्तर–ए–नंजीर** नामक लेखा–जोखा विभाग की स्थापना की।
  - सैनिकों हेतु सैन्य वर्दी "**सुखवर्दी**" को अनिवार्य किया।
  - स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए **यूनानी चिकित्सालय** की स्थापना की।
- **शैक्षणिक विकास**
  - आप अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की प्रथम चांसलर थीं।
  - हमीदिया पुस्तकालय का निर्माण कराया।
  - **सुल्तानिया कन्या विद्यालय** की स्थापना की।
- **औद्योगिक विकास**
  - भोपाल में आटा चक्की मिल एवं सूती कपड़ा मिल की स्थापना की।
  - इच्छावर में शक्कर कारखाना बनवाया।

प्रमुख घटनाक्रम

- 1904 में मक्का की यात्रा की।
- 1909 में वायसराय मिंटो का भोपाल आगमन।
- 1911 के दिल्ली दरबार में भागीदारी।
- 1912 में लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय भोपाल आए।

शैक्षणिक विकास के कारण ही इनके समय भोपाल को **बगदाद–उल–हिंद** कहा जाता है।

नवाब हमीदुउल्लाह खान

- **परिचय** = बेगम सुल्तान जहां के पुत्र, उत्तराधिकारी एवं पोलो के अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी ।
- **शासनकाल** = 1926-1949
- बेगम ने इन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाया एवं **1926** में इनके पक्ष में गद्दी त्याग दी।
- इनके समय की **प्रमुख घटनाएं निम्न** हैं –
  - ये चैम्बर ऑफ प्रिंस की स्थाई समिति के सदस्य बने।
  - मिंटो हॉल में **हमीदिया आर्ट एंड कॉमर्स इंटर कॉलेज** की स्थापना की।
  - **1938** में **भोपाल प्रजामंडल** का उदय इन्हीं के समय हुआ।
  - भोपाल रियासत का भारत संघ में विलय इन्हीं के समय हुआ। **(1 जून 1949)**

भोपाल रियासत का भारत संघ में विलय

- भोपाल के नवाब हमीदुल्लाह खां ने स्वतंत्र रहने का निर्णय किया। भोपाल का नवाब मुस्लिम था जबकि भोपाल रियासत की बहुसंख्यक जनसंख्या हिंदू थी। इसी क्रम में भोपाल के विलय को लेकर आंदोलन शुरू हुआ (रायसेन के बरेली गांव से)

⬇

- सरकार ने पुलिस बल, लाठी चार्ज कर आंदोलन को दबाने का प्रयास किया। फलतः आंदोलन उग्र हुआ।

⬇

- सरदार पटेल ने वी. पी. मेनन को स्थिति पर काबू करने के लिए भेजा।

⬇

- वी. पी. मेनन ने भोपाल के नवाब पर दबाव बनाकर भोपाल के भारत संघ में विलय की बात की।

⬇

- नवाब ने अपनी सहमति दी एवं भोपाल रियासत का भारत संघ में विलय हुआ(**1 जून 1949**)।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

भोपाल रियासत में स्थापत्य

दोस्त मोहम्मद खां के समय से शुरू हुई भोपाल स्थापत्य कला बेगमों के काल में अपने स्वर्णिम शिखर पर पहुंची। इसके प्रमुख उदाहरण निम्न है –

क्रमांक	उदाहरण	निर्माता
1	फतेहगढ किला	दोस्त मोहम्मद खान
2	ढाई सीढी मस्जिद(भोपाल की प्रथम मस्जिद)	दोस्त मोहम्मद खान
3	जामा मस्जिद	कुदसिया बेगम
4	गौहर महल	कुदसिया बेगम
5	मोती मस्जिद	सिकंदरजहाँ बेगम
6	मोती महल	सिकंदरजहाँ बेगम
7	शौकत महल	सिकंदरजहाँ बेगम
8	नूरबाग मस्जिद	जहाँगीर मोहम्मद
9	जहांगीराबाद	जहाँगीर मोहम्मद
10	ताज–उल–मस्जिद	शाहजहाँ बेगम
11	लाल कोठी महल	शाहजहाँ बेगम
12	शाहजहांनी पुल	शाहजहाँ बेगम
13	भोपाल का ताजमहल	शाहजहाँ बेगम
14	सोफिया कॉलेज (कैषर–ए–सूल्तानी महल)	सुल्तान जहाँ बेगम
15	अहमदाबाद महल	सुल्तान जहाँ बेगम
16	नूर–उस–सबा महल	सुल्तान जहाँ बेगम
17	किंग एडवर्ड म्यूजियम	सुल्तान जहाँ बेगम

भोपाल रियासत में साहित्य

- इस काल में साहित्य विशेषतः उर्दू साहित्य का पर्याप्त विकास हुआ जैसे –
- **जहांगीर मोहम्मद के कविता संग्रह**
  - दीवान ए इल्हा
  - ताज–उल–कमाल
  - दीवान–ए–शिरीन
  - सिद्दीकी उल बयान
- **शाहजहां बेगम** = ताज–उल–इकबाल, गौहर–ए– इकबाल
- **सुल्तान जहां बेगम** = हयात–ए–बाकी, हयात–ए–कुर्सी

भोपाल रियासत अन्य तथ्य

- **वकील–ए–रियासत** भोपाल रियासत में एक जनकल्याण विभाग था।
- निम्न व्यक्तियों ने 1857 की क्रांति में भोपाल रियासत से भागीदारी की

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **आदिल मोहम्मद खान**
- **फाजिल मोहम्मद खान**
- **अमानत खान**
- **आमिल खां**
- **महावीर एवं वलीशाह**
- **शुजात खां**

- फौलाद खां गोंड जनजाति से संबंधित कूटनीतिज्ञ थे जिन्हें हयात मोहम्मद खान ने अपना प्रधानमंत्री बनाया था।

परवीन बाजार

- भोपाल में शाहजहां बेगम द्वारा महिलाओं हेतु निर्मित बाजार
- यह मूलतः मखमल व चिकने कपड़ों का बाजार था।

****

VIDYA ICS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

होल्कर रियासत

सामान्य परिचय | पृष्ठभूमि | प्रमुख शासक

सामान्य परिचय

- **परिचय** = यह धनगर मूल का मराठा राजवंश था।
- **संस्थापक** = मल्हारराव होल्कर
- **नामकरण** = पूना के निकट होलगांव के निवासी अतः नाम होल्कर हुआ।
- **प्रमुख शासक** = मालेराव, अहिल्याबाई, मल्हारराव, तुकोजीराव, महत्वपूर्ण शासक हुए।
- **विलय** = 1 जनवरी 1950 को विलय पत्र के जरिए भारतीय संघ में विलय।

1561-62 से मराठों के मालवा पर आधिपत्य तक यह क्षेत्र मुगलों के पूर्ण नियंत्रण में था।

पृष्ठभूमि

1720 से 1740 के मध्य **पेशवा बाजीराव प्रथम** के समय उनकी विस्तारवादी सोच एवं चौथ वसूली की लालसा के कारण मराठों की मालवा में रुचि बढ़ी एवं मालवा में मराठों की सुव्यवस्थित सत्ता की स्थापना संभव हुई।

- **फरवरी 1723** में पेशवा बाजीराव प्रथम ने **असीरगढ़ के मार्ग** से मालवा में प्रवेश किया। बाजीराव प्रथम के अनेक सहयोगी मराठा सरदारों में **मल्हार राव होल्कर** भी शामिल थे।
- **मई 1723** में पेशवा ने भोपाल के **दोस्त मोहम्मद खान** को हराया।
- **दिसंबर 1728** में बुंदेलखंड में छत्रसाल के सहयोग से पेशवा बाजीराव ने मुगल सेनापति **मोहम्मद खां बंगश** को हराया।
- **1724** में मराठों ने **सारंगपुर का युद्ध** जीता।
- **1728** में **अमझेरा युद्ध** में चिमनजी अप्पा, मल्हारराव होल्कर एवं रानोजी सिंधिया ने मिलकर **दया बहादुर व गिरधर बहादुर** को हराया। विजय उपरांत मालवा पर मराठों के नियंत्रण की नींव पड़ी एवं बाजीराव प्रथम द्वारा **होल्कर, सिंधिया व पवारों** को मराठा क्षेत्रों में सनदें प्राप्त की।
- **1731 में तिरला का युद्ध** हुआ जिसमें मराठा शक्ति के सामने दयाबहादुर मारा गया व मालवा पर मराठाओं की प्रभुसत्ता स्थापित हुई।

सारंगपुर युद्ध

- **1724** में मुगलों और मराठों के मध्य यह युद्ध हुआ।
- **मल्हारराव होलकर** व **चिमन जी अप्पा** ने गिरधर बहादुर, (मुगल सूबेदार) को हराया।

- **जुलाई 1732** में पेशवा बाजीराव ने औपचारिक दस्तावेज के द्वारा होल्कर,सिंधिया, पवार, तुकोजीराव जीवाजीराव, के मध्य परगनों का विभाजन किया फलतः मालवा में **5 मराठा राज्यों की नींव** पड़ी।

होल्कर वंश (इंदौर) | सिंधिया वंश (उज्जैन, | आनंदराव पंवार (ग्वालियर) | तुकोजीराव पंवार (देवास बडी पांती) | जीवाजीराव पंवार (देवास छोटी पांती)

VIDYA IAS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

मल्हारराव होलकर

- **परिचय** = मराठा सरदार व योग्य सेनापति जो होल्कर रियासत के संस्थापक थे। (1731-1766)
- **पिता** = खांडू जी (होलगांव के सहायक पटेल)
- **नौकरी** = पिता की मृत्योपरांत आरंभ में खानदेष के सूबेदार भोजराज के यहां नौकरी की बाद में मराठा सेना में भर्ती हुए।
- **पत्नियां** = गौतमीबाई, द्वारकाबाई, बानाबाई व हरकू बाई ।
- **पुत्र** = खांडेराव होल्कर
- **पुत्रवधू** = अहिल्याबाई होल्कर
- **पौत्र** = मालेराव होल्कर
- **प्रमुख युद्ध में भागीदारी**
  - सारंगपुर युद्ध **(1724)**
  - अमझेरा युद्ध **(1728)**
  - तिरला युद्ध **(1731)**
  - **1731** में बाजीराव प्रथम के दिल्ली आक्रमण में सहयोग दिया।
  - **1737** के भोपाल के युद्ध में भागीदारी की।
  - **1752** में निजाम के साथ **भालमी मुकाम का युद्ध** लड़ा।
  - **1761** में पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठों की तरफ से भागीदारी की लेकिन सदाशिवराव भाऊ ने इनकी रणनीतियों को अनदेखा किया फलतः ये युद्ध अलग हो गये।
  - **1764** में नबाव शुजाउद्दौला को अंग्रेजों के विरुद्ध सहायता दी ।
- **अन्य तथ्य**
  - **मल्हारगंज** के संस्थापक
  - इंदौर में **राजवाड़ा** का निर्माण कराया
  - **निधन** = 20 मई 1766
  - **समाधि** = आलमपुर (भिंड)

भोपाल युद्ध के उपरांत **दौराय सराय की संधि** हुई एवं नर्मदा चंबल क्षेत्र पर मराठों का आधिपत्य स्थापित हुआ।

खांडेराव

- ये मल्हारराव होल्कर के पुत्र थे।
- **विवाह** = अहिल्याबाई होल्कर से
- **1754** में जाट नेता सूरजमल के विरूद्ध अभियान किया एवं कुंभेर दुर्ग का घेरा डाला।
- इस घेरे के दौरान ही खांडेराव की मृत्यु हो गयी।

मालेराव होल्कर

- **परिचय** = अहिल्याबाई का पुत्र एवं होल्कर वंश का दूसरा शासक।
- **शासनकाल** = 1766–67
- **संरक्षिका** = शासक बनने के समय ये अल्पायु थे अतः अहिल्याबाई ने संरक्षिका की भूमिका अदा की।
- **मृत्यु** = अप्रैल 1767 में मस्तिष्क ज्वर के कारण।
- **उत्तराधिकारी** = अहिल्याबाई होल्कर

अहिल्याबाई होल्कर

- **परिचय** = मल्हारराव होल्कर की पत्नि एवं होल्कर वंश की महान एवं कल्याणकारी शासिका।
- **जन्म** = 31 मई 1725
- **जन्मस्थान** = चौड़ी गांव अहमदनगर जिला (महाराष्ट्र)
- **विवाह** = खांडेराव होल्कर से हुआ।
- **संतान** = मालेराव होल्कर **(पुत्र)** एवं मुक्ताबाई **(पुत्री)**
- **राज्याभिषेक** = 1754 में पति, 1766 में ससुर व 1767 में पुत्र की मृत्यु के बाद शासन संभाला व अपनी राजधानी **महेश्वर** बनाई।
- **जनकल्याणकारी कार्य**
  - कुओं, बावड़ी, सरायों, स्कूल, अस्पतालों आदि का निर्माण कराया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- महेश्वर साड़ी उद्योग की संस्थापक।
- ये छत्रीबाग में जनसुनवाई किया करती थीं।
- निष्पक्ष न्याय, दान दक्षिणा जैसे कार्य किये।

अहिल्याबाई के सम्मान में निम्न कार्य हुए हैं
- इंदौर एयरपोर्ट का नाम
- डीएवीवी विश्वविद्यालय
- अहिल्याबाई पुरस्कार
- अहिल्या उत्सव

- **स्थापत्य योगदान**
  - **सोमनाथ मंदिर (गुजरात)** का जीर्णोद्धार कराया।
  - बनारस में **अन्नपूर्णा मंदिर व मणिकर्णिका घाट** का निर्माण कराया।
  - काशी में **विश्वनाथ मंदिर/काशी विश्वेश्वर मंदिर** का जीर्णोद्धार कराया।
  - **गया** में **अष्टपदी मंदिर** का निर्माण कराया।
  - **महेश्वर में किला व घाट** का निर्माण कराया।
- **तुकोजीराव होल्कर** को अपना **सेनापति** बनाया।
- **मृत्यु** = 13 अगस्त 1995

इनका काल **गुड गवर्नेंस का काल** था **डॉ. हीरालाल शर्मा** ने इन्हें श्रेष्ठ व आदर्श शासिका बताते हुए कहा है कि प्रजा हेतु सच्चे अर्थों में राम राज्य की स्थापना अहिल्याबाई होल्कर द्वारा की गई।

तुकोजीराव होल्कर

- **परिचय** = मल्हार राव होल्कर के दत्तक पुत्र एवं अहिल्याबाई होल्कर के सेनापति।
- **कार्यकाल** = 1795-97
- **पत्नियाँ** = कृष्णाबाई होल्कर + तुलसाबाई होल्कर
- **राजधानी** = इन्होंने अपनी राजधानी **महेश्वर से इंदौर** स्थानांतरित की
- **सैन्य संगठन** = इन्होनें यूरोपीय तर्ज पर सेना का आधुनिकीकरण किया ।
- **प्रमुख युद्ध**
  - प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध के दौरान **बड़गांव के युद्ध (1779)** में इसने **कर्नल गोडार्ड** को पीछे हटने पर मजबूर किया।
  - **नाना फड़णवीस** के साथ मिलकर **टीपू** पर चढ़ाई कर विजय प्राप्त की। (**1785**)
  - **1794** में निजाम ने पेशवा पर आक्रमण किया लेकिन पेशवा ने तुकोजीराव होल्कर के सहयोग से निजाम को हराया।
  - इसने दूरदर्शिता के अभाव में **महादजी शिंदे से युद्ध** किया जिसमें यह बुरी तरह पराजित हुआ।
- **मृत्यु** = 1797 में मृत्यु
- तुकोजीराव के पश्चात् **काशीराव होल्कर** शासक बने उसके बाद **यशवंतराव होल्कर** ने गद्दी संभाली।

काशीराव होलकर
- तुकोजीराव होल्कर के पुत्र
- शासनकाल = 1797-99
- यह एक अयोग्य व्यक्ति था लेकिन यह **पेशवा व दौलतराव सिंधिया** के सहयोग से शासक बना।
- **यशवंतराव होल्कर** ने इसे गद्दी से उतार दिया।

यशवंत राव होलकर

- **परिचय** = ये तुकोजीराव होल्कर के पुत्र, योग्य सेनापति व गोरिल्ला युद्ध पद्धति के अच्छे जानकार थे।
- **शासनकाल** = 1799-1811
- **राजधानी** = इन्होंने राजधानी **इंदौर से भानपुरा** स्थानांतरित की।
- **सैन्य छावनी** = हिंगलाजगढ़ किले को अपनी सैन्य छावनी बनाया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **कसरावद युद्ध**
  - 1799 में यशवंतराव होल्कर ने इस युद्ध में **काशीराव होल्कर** को हराया एवं उज्जैन पर यशवंतराव होल्कर का कब्जा हुआ।
- **सिंधियाओं से संबंध**
  - इसी के समय से होल्कर व सिंधियाओं के संबंध तनावपूर्ण हुए।
  - इसी क्रम में **1801-1802** में **यशवंतराव होल्कर एवं दौलतराव सिंधिया के मध्य उज्जैन की लड़ाई** हुई जिसमें सिंधिया पराजित हुए।
- **पेशवा से संबंध**
  - इसके संबंध पेशवा से भी बिगड़े इसी क्रम में **हादसपुर युद्ध (1801)** में यशवंतराव होल्कर ने पेशवा व सिंधिया को हराया।
  - पेशवा भागकर बेसिन पहुंच गए एवं गद्दी प्राप्त करने के लालच में अंग्रेजों से **बेसिन की संधि की (1802)**

बेसीन की अपमानजनक सहायक संधि के चलते अंग्रेजों व मराठों के मध्य **द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-1805)** हुआ व मराठा पराजित हुए व मराठा सरदारों के साथ अलग–अलग संधियां हुईं जिसमें होल्करों के साथ **राजपुरघाट की संधि** हुई। **(24 दिसंबर 1805)**

↓

- यशवंतराव की बढ़ती शक्ति से ब्रिटिशर्स चिंतित हो उठे एवं अंग्रेजों ने यशवंतराव पर आक्रमण की योजना बनाई। इसी क्रम में बुंदेलखंड क्षेत्र में **कुंच का युद्ध हुआ (1803-1805)।** यशवंत राव होल्कर ने **कर्नल कॉकेट** के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना को पराजित किया।

↓

- इस विजय से यशवंतराव के हौसले बुलंद हुए और वे दिल्ली की ओर चल पड़े एवं शाह आलम द्वितीय को ब्रिटिश कैद से मुक्त कराने का निर्णय लिया।

शाहआलम –II ने **यशवंतराव होल्कर** की बहादुरी से प्रेरित होकर इनको **राजराजेश्वर अलीजा बहादुर** की उपाधि प्रदान की।

↓

- ब्रिटिशर्स से सतत संघर्ष किया लेकिन अपेक्षित सफलता के अभाव में इन्होंने ब्रिटिश से संधि कर ली। (**राजपुरघाट संधि 1805**)
- **स्थापत्य कार्य**
  - महेश्वर में मां **अहिल्या मंदिर** व **विठोजी होल्कर की छतरी** का निर्माण कराया।
  - महेश्वर में ही **खांडेराव होल्कर व काशीराव होल्कर की पत्नी लक्ष्मी बाई** की छत्री बनवाई।
  - हिंगलाजगढ़ किले का जीर्णोद्धार कराया।

- इतिहासकार **एन.एस. इनामदार** ने यशवंत राव होल्कर को "**मध्य भारत का नेपोलियन**" कहा है।
- **1804** में सिंधिया ने यशवंत राव होल्कर के भय से अंग्रेजों के साथ **बुरहानपुर की संधि** की।
- ये एक मात्र ऐसे शासक थे जिन्होंने अंग्रेजों के साथ अपनी शर्तों पर संधि की।
- बीमारी एवं अवसादग्रस्त के चलते **1811** में यशवंतराव की मृत्यु हो गई।

मल्हारराव होल्कर-III

- **परिचय** = यशवंतराव होल्कर + कृष्णाबाई होल्कर का पुत्र एवं उत्तराधिकारी।
- **शासनकाल** = 1811-1833
- **संरक्षिका** = आरंभ में अल्पायु होने के कारण **तुलसा बाई** ने संरक्षिका के तौर पर मुख्य शासक की भूमिका निभाई।
- **राजधानी** = राजधानी **भानपुरा से इंदौर** स्थानांतरित की।
- **उत्तराधिकारी** = मार्तंडराव होल्कर
- इंदौर में **पुराना महल व पंढरीनाथ** मंदिर का निर्माण कराया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- महू में ब्रिटिश छावनी का निर्माण इनके समय ही हुआ।
- **महीदपुर का युद्ध**
  - इन्हीं के समय तृतीय आंग्ल–मराठा युद्ध के दौरान यह युद्ध हुआ।
  - **कब** = दिस-1817
  - इस युद्ध में अब्दुल गफ्फार के धोखे से होल्कर सेना पराजित हुई।
  - अंग्रेजों ने मल्हार राव होल्कर के साथ **मंदसौर की संधि की (1818)**

↓

- होल्कर राज्य ब्रिटिश संरक्षण में चला गया एवं देसी रियासत के रूप में होल्कर रियासत का उदय हुआ।

नोट = 1833 से 1844 तक क्रमशः मार्तंड होल्कर, हरिराव होल्कर एवं खांडेराव होल्कर तृतीय शासक बने। (अयोग्य शासक)

तुलसाबाई

मल्हारराव तृतीय की माता एवं संरक्षिका। इनके विरुद्ध दरबारी षड्यंत्र चल रहे थे अतः उन्होंने **धरमकुंवर एवं बलराम सेठ** को मृत्यु दंड देते हुए **तात्या जोग** को अपना प्रधानमंत्री बनाया लेकिन धरमकुंवर और बलराम के सहयोगी **गफ्फूर खान पिंडारी** ने अंग्रेजों के सहयोग से तुलसी बाई की हत्या कर दी।

भीमा भाई

- यशवंतराव होल्कर की पुत्री एवं मल्हारराव तृतीय की बहन जिन्होंने महीदपुर युद्ध में भागीदारी की।
- मंदसौर संधि की शर्तों का उल्लंघन कर अंग्रेजों से संघर्ष किया।
- इनका मुख्य संघर्ष कैप्टन हंट से हुआ।
- इन्हें लक्ष्मीबाई का पूर्वगामी भी माना जाता है।

तुकोजीराव होल्कर-II

- **अन्य नाम** = जसवंत होल्कर
- **शासनकाल** = 1844-86
- **दीवान** = इन्होंने **टी माधवराव** को इंदौर का दीवान बनाया।
- **राजनीतिक घटनाएं**
  - **1876** में **प्रिंस ऑफ वेल्स** की इंदौर यात्रा
  - **1877** में **दिल्ली दरबार** में उपस्थिति
  - **1857** का विद्रोह इन्हीं के समय हुआ था।
  - **बड़ौदा रियासत** के उत्तराधिकार संघर्ष को सुलझाने में मदद की।
- **सुधार कार्य**
  - **1875** में **इंदौर खंडवा रेल लाइन** का विकास इन्हीं के समय हुआ।
  - **जंगल खाता विभाग** व राजस्व वसूली हेतु प्रथक **सायर विभाग** की स्थापना की।
  - **1867** में **स्टेट कपड़ा मिल** की स्थापना की।
  - इंदौर को **औद्योगिक राजधानी** बनाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।
- **1857 के विद्रोह में भूमिका**

इनके शासनकाल को आर्थिक सुधारों का काल कहा जाता है उन्होंने **टी. माधवराव** को दीवान बनाकर आर्थिक सुधारों को प्रभावी बनाया।

↓

- ब्रिटिशर्स को प्रत्यक्ष सहयोग
- इंदौर में कर्नल ड्यूरेंड की सहायता
- धार में कर्नल हैंचिसन की सहायता

- क्रांतिकारियों को अप्रत्यक्ष सहयोग
- सेनापति सआदत खां को सैन्य सहायता दी।
- सआदत खां की संपत्ति व मां की रक्षा का वादा किया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

शिवाजीराव होल्कर

- तुकोजीराव होल्कर द्वितीय का पुत्र **(1886–1930)**
- इन्होने **आर. रघुनाथराव** को अपना प्रधानमंत्री बनाया।
- **शैक्षणिक विकास**
  - इंदौर में **तकनीकी संस्थान** की स्थापना **(1889)**
  - इंदौर में **होल्कर कॉलेज** की स्थापना **(1891)**
  - वेधषाला के रूप में संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना।
- **स्थापत्य विकास**
  - लाल बाग महल
  - दरियाब महल
  - शिवविलास महल
  - सुखमहल

चिकित्सा की दृष्टि से तुकोजीराव अस्पताल की स्थापना की।

मालाबार हिल हत्याकांड

- यह मुंबई की घटना है।
- एक नर्तकी एवं उसके प्रेमी की हत्या का आरोप तुकोजीराव होल्कर पर लगा।
- आरोप के पश्चात् इन्होंने अपना पद को त्याग दिया।
- अगले शासक यशवंतराव होल्कर द्वितीय बने।

तुकोजीराव होल्कर तृतीय

- शिवाजीराव होल्कर के पुत्र **(1903–1926)**
- इंदौर में **हुकुमचंद मिल** की स्थापना की।
- **अहिल्या आश्रम विद्यालय** व **चंद्रावती महिला विद्यालय** की स्थापना की।
- इंदौर में **टाउन हॉल** बनवाया जिसका उद्घाटन **जॉर्ज पंचम** ने किया।
- **1923** में **नवरत्न मंदिर** का निर्माण कराया जो वर्तमान में **केंद्रीय संग्रहालय** के नाम से जाना जाता है।
- पिपल्या में **कृषि अनुसंधान केंद्र** खोला जहां वैज्ञानिक शिक्षा दी जाती थी।
- क्षय रोगियों के इलाज हेतु **सैनिटोरियम** की स्थापना की।
- इनके बाद शासक **यशवंतराव द्वितीय** शासक बने।

यशवंतराव होल्कर -II

- **परिचय** = तुकोजीराव होल्कर-III के पुत्र एवं होल्कर वंश के शासक।
- **शासनकाल** = 1926–1948
- इन्हें "**आधुनिक इंदौर का निर्माता**" कहा जाता है क्योंकि –
  - 1935 में इंदौर हवाई अड्डे का निर्माण कराया।
  - एम. वाय हॉस्पिटल का निर्माण कराया।
  - यशवंत सागर जलाशय का निर्माण कराया।
  - क्रिकेट टीम का निर्माण किया।

भारत की स्वतंत्रता और रियासतों के एकीकरण के समय यशवंत राव होल्कर तृतीय शासक थे इन्हीं के हस्ताक्षर के बाद ही **1 जनवरी 1950** को इंदौर रियासत का भारत संघ में विलय हुआ।

****

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

सिंधिया रियासत

सामान्य परिचय

- **परिचय** = यह कुनवी मूल का एक मराठा हिंदू राजवंश था।
- **अवस्थिति** = यह मध्यप्रदेश के उत्तर में ग्वालियर एवं आस–पास के क्षेत्रों में अवस्थित भारत की बड़ी रियासतों में से एक थी ।
- **संस्थापक** = रानोजी सिंधिया
- **राजधानी** = उज्जैन (प्रारंभिक) बाद में ग्वालियर
- **शासनकाल** = 1731-1948
- **भाषा** = बुंदेली, हिंदी, मराठी, संस्कृत

रानोजी सिंधिया

- **संस्थापक** = सिंधिया वंश के संस्थापक (1731-45)
- **जन्म स्थान** = कान्हेरगढ़ गांव (सतारा)
- अल्पायु में ही इनको पेशवा **बालाजी विश्वनाथ** का सानिध्य प्राप्त हुआ।
- **1728 में अमझेरा के युद्ध** में इन्होंने संयुक्त मराठा सेना के साथ मिलकर **दयाबहादुर व गिरधरबहादुर** को पराजित किया।
- इस युद्ध के बाद सिंधिया को मालवा के उत्तर पूर्वी क्षेत्र से कर वसूलने का अधिकार प्राप्त हुआ।
- **1732** में इनको उज्जैन, शाजापुर, शुजालपुर के क्षेत्र प्राप्त हुए।
- बाद में इन्होंने **उज्जैन** को अपना केंद्र बनाकर शासन कार्य आरंभ किया।
- **अन्य कार्य**
  - महाकाल मंदिर का जीर्णोद्धार कराया।
  - सिहस्थ कुंभ मेले का आयोजन पुनः आरंभ किया ।
  - बाजीराव प्रथम को दिल्ली आक्रमण में मदद की ।

इनके पांच पुत्र थे।

वैध पुत्र
- जयाप्पाराजे सिंधिया
- दत्ताजी सिंधिया
- जोतिबा

अवैध पुत्र
- महादजी एवं
- तुकाजी सिंधिया

जयप्पाराजे सिंधिया

- राणोजी सिंधिया के पुत्र (**1745-55**)
- **अन्य नाम** = जयाजीराव सिंधिया
- मारवाड़ शासक महाराज **विजय सिंह** द्वारा **जुलाई 1755** को इनकी हत्या कर दी गई।
- इनका पुत्र **जनकोजी सिंधिया** अगला शासक बना।

जनकोजी सिंधिया

- ये जयप्पाराजे सिंधिया के पुत्र थे।
- **शासनकाल** = 1755-61
  - दत्ताजी के संरक्षण में = 1755-1760
  - स्वतंत्र शासन = 1760-1761

दत्ता जी सिंधिया

- ये रानोजी सिंधिया के पुत्र थे।
- इन्होंने **1755 से 1760** के मध्य जनकोजी सिंधिया के संरक्षक के तौर पर कार्य किया।
- अपने भाई जयप्पाराजे के कातिल नागौर के शासक विजय सिंह को पराजित कर उससे **आगरा व अजमेर** जीते।
- **1760** में **शुक्रताल के युद्ध** में **नजीब खान** द्वारा इनकी हत्या कर दी गई ।

VIDYA ICS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- पानीपत के तृतीय युद्ध में मृत्यु हो गई।

नोट = जनकोजी की मृत्यु के बाद 2 साल राजगद्दी खाली रही। **1763-64** के मध्य **कादरजी राव सिंधिया** व **1764 से 1768** के मध्य **मानजीराव सिंधिया** शासक बने। इसके बाद अगले शासक **महादजी सिंधिया** बने।

महादजी सिंधिया

- **परिचय** = राणोजी सिंधिया के पुत्र जो सिंधिया वंश के महान शासकों में एक थे।
- **शासनकाल** = 1768-94 (ये 1761 से 1768 तक उत्तराधिकार युद्ध में व्यस्त रहे)
- **विशेष** = इन्हें **सिंधिया वंश का वास्तविक संस्थापक** माना जाता है।
- **अन्य नाम** = माधवराव प्रथम, द्वितीय षिवाजी।
- **राजनीतिक घटनाक्रम**
  - इन्होंने तृतीय पानीपत युद्ध में भागीदारी की। घायल होने पर **शनेखां** नामक भिष्ती ने इनकी जान बचाई।
  - इन्होंने **1765** में गोहद के **जाट राजा लोकेंद्र सिंह** को हराकर ग्वालियर दुर्ग जीता।
  - मुगल बादशाह **शाहआलम-II** के सहायता मांगने पर **1772** में महादजी ने इलाहाबाद से दिल्ली लाकर शाह आलम–II को शासक बनाया। बाद में **1788** पुनः को दिल्ली का शासक बनाया। बाद में **शाहआलम–II ने महादजी** को **नायाब वकील** की उपाधि दी।
  - **1793** में होल्कर शासक **तुकोजीराव एवं महादजी सिंधिया** के मध्य **लाखेरी का युद्ध** हुआ जिसमें महादजी विजयी रहे यह महादजी सिंधिया की अंतिम विजय थी। इस युद्ध से महादजी अत्यंत दुःखी हुए व इसे विजय दिवस के बजाय **"शोक दिवस की संज्ञा"** दी।

दिल्ली संकट

- शाहआलम–II के समय की घटना।
- 1784 में आगरा के किले के रक्षक मोहम्मद बेग ने विद्रोह किया।
- 1787 में महादजी द्वारा इसका दमन कर दोआब, आगरा, अलीगढ़ के क्षेत्रों पर आधिपत्य किया।

1788 में **गुलाम कादिर** ने शाहआलम–II को अपदस्थ किया लेकिन महादजी सिंधिया ने शाहआलम–II को पुनः शासक बनाया। इस घटना को **गुलाम कादिर** का विद्रोह कहा जाता है।

- **अन्य तथ्य**
  - फ्रांसीसी अधिकारी **डी–वाउने** के नेतृत्व में यूरोपीय पद्धति पर सेना का गठन किया।
  - बुरहानपुर में **राजराजेश्वर मंदिर** बनवाया।
  - ग्वालियर किले में जीर्णोद्धार का कार्य कराया।
  - **1794** पूना के निकट **वनवाड़ी** नामक स्थान पर इनकी मृत्यु हो गयी।

दौलतराव सिंधिया

- ये महादजी सिंधिया के भतीजे **आनंदराव के पुत्र** थे।
- ये महादजी सिंधिया के बाद सिंधिया वंश के शासक बने।
- **शासनकाल** = 1794-1827
- **राजनीतिक घटनाक्रम**
  - मार्च **1794** में **कुडरला के युद्ध** निजाम को हराया।
  - **1801** में **उज्जैन की लड़ाई** में यशवंतराव होल्कर से पराजित हुए ।
  - **1802** में **हादसपुर के युद्ध** में होल्कर शासक द्वारा पराजित हुए।
  - द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध में ब्रिटिशर्स द्वारा पराजय एवं **सुर्जीअर्जन गांव की संधि** की।
  - **1804** में अंग्रेजों के साथ **बुरहानपुर की संधि** की।
  - **1810** में **उज्जैन से ग्वालियर** राजधानी परिवर्तन की।
- **अन्य तथ्य**
  - **लश्कर नगर** (ग्वालियर) की स्थापना की।
  - ग्वालियर में **फूलबाग व मोती महल** का निर्माण कराया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- ग्वालियर में **महाराजवाड़ा** का निर्माण कराया।
- हिंदी के महान **कवि पद्माकर** को राजकीय संरक्षण प्रदान किया

- **प्रमुख संधियां**

क्रमांक	संधि	वर्ष	अन्य तथ्य
1	सुर्जी अर्जनगांव की संधि	दिसंबर 1803	• दौलतराव सिंधिया व अंग्रेजों के मध्य सम्पन्न। • **कारण** = द्वितीय आंग्ल.मराठा युद्ध में सिंधियाओं की पराजय • सिंधिया दरबार में ब्रिटिश रेजीडेंसी रखी गई।
2	बुरहानपुर की संधि	फरवरी 1804	• दौलतराव सिंधिया व अंग्रेजों के मध्य सम्पन्न। • कारण = दौलतराव को यशवंतराव के आक्रमण का भय • सिंधिया को युद्ध की नीति में ब्रिटिशर्स मदद करेंगे।
3	ग्वालियर की संधि	नवंबर 1817	• दौलतराव सिंधिया व अंग्रेजों के मध्य सम्पन्न। • कारण = तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध में सिंधिया की पराजय • दोनों पक्षों द्वारा पिंडारी दमन हेतु समझौता किया गया।

जनकोजी सिंधिया

- **मूल नाम** = मुकुटराव शिंदे
- **शासनकाल**
  - 1827-32 = बैजाबाई के संरक्षण में
  - 1842-43 = स्वायत्त शासन
- दौलतराव की पत्नी बैजाबाई ने इन्हें गोद लेकर जनकोजी राव के नाम से **जून 1827** में शासक बनाया।
- अल्प वयस्क होने के कारण बैजाबाई ने संरक्षिका के तौर पर काम किया।
- बाद में बैजाबाई के बढ़ते प्रभाव के चलते जनकोजी ने **विलियम बेंटिक** से सहायता मांगी एवं इसी क्रम में अंग्रेजों ने बैजाबाई को उज्जैन भेजकर संपूर्ण शक्तियां जनकोजी राव को सौंप दी।
- **1843** में मृत्यु के बाद जयाजीराव सिंधिया अगला शासक बना।

बैजाबाई सिंधिया

- ये दौलतराव सिंधिया की पत्नी थीं।
- इन्होंने जनकोजी राव सिंधिया की संरक्षिका के तौर पर कार्य किया।
- **कर्नल स्लीमैन** व **मैक्लाइड** के सहयोग से **ठगी प्रथा पर रोक** लगाई।
- बनारस में गंगा किनारे **सिंधिया घाट** बनवाया एवं ग्वालियर में बैजाताल का निर्माण कराया।
- बाद में अंग्रेजों ने इन्हें जनकोजी राव -II के संरक्षण से हटाकर उज्जैन भेज दिया।
- **1832 से 1897** तक ये ग्वालियर से बाहर रहीं।
- 1857 की क्रांति के समय इनका ग्वालियर वापस आगमन हुआ। एवं इन्होंने ब्रिटिश विरोधी नीति अपनाकर क्रांतिकारियों को सहयोग दिया।
- **1863** में मृत्यु।

जयाजीराव सिंधिया

- **परिचय** = ये जनकोजीराव-II सिंधिया के दत्तक पुत्र थे।
- **शासनकाल** = 1843-86
- **मूल नाम** = भागीरथ शिंदे
- **संरक्षण** = आरंभ में अल्पायु होने के कारण पहले **कृष्णराव** बाद में **ताराबाई** के अधीन शासन संचालन किया
- **1851** में दिनकर राव को अपना दीवाना बनाया
- **1857** का विद्रोह इन्हीं के समय हुआ था।

- **सांस्कृतिक उपलब्धियाँ**
  - ग्वालियर में इनके द्वारा निर्मित स्थापत्य आज भी आकर्षण का केंद्र है जैसे– **जय विलास पैलेस, जलविहार, कंपू कोठी, राजमहल तालाब, गोरखी द्वार।**
  - शास्त्रीय संगीत में **ग्वालियर घराने** का विकास इन्हीं के समय हुआ।
  - तबला वादक **जोराव सिंह** इन्हीं के दरबार में थे।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **1857 की क्रांति में भूमिका**
  - **प्रत्यक्ष सहयोग** = ब्रिटिशर्स को
  - **अप्रत्यक्ष सहयोग** = क्रांतिकारियों को क्योंकि अपने मंत्री **दिनकर राव** के कहने पर ये अपना कोषालय ग्वालियर में ही छोड़कर आगरा चले गए थे।

अमरचंद वांठिया

- ये ग्वालियर महाराज के कोषाध्यक्ष थे।
- 1857 के विद्रोह के दौरान कोषागार की चाबी लक्ष्मीबाई को दी।
- ब्रिटिशर्स द्वारा इनको फांसी की सजा दे दी गई।

ताराबाई

- जनकोजी राव की पत्नी जिन्होंने **भागीरथ राव की संरक्षिका** के तौर पर कार्य किया ।

जय विलास पैलेस

- ग्वालियर अवस्थित सुंदर महल जो पाश्चात्य शैली में बना है।
- **निर्माता** = जयाजीराव सिंधिया
- **वास्तकार** = सर माइकल फिलोस

माधवराव सिंधिया II

- **जन्म** = 1876 (ग्वालियर)
- **पिता** = जयाजीराव सिंधिया
- **माता** = जीजाबाई
- **शासनकाल** = **1886-1925**
  - कौंसिल ऑफ रेसीडेंसी के अधीन शासन = 1886-1894
  - स्वायत्त रूप से शासन = 1894-1925
- केंद्रीय प्रशासन को गतिशीलता प्रदान करने के उद्देश्य से **गवर्नमेंट ऑफ ग्वालियर** की स्थापना की।
- प्रशासन को पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से 2 प्रतिनिधि संस्थाओं का गठन किया
  - **मजलिस–ए–आम**
  - **मजलिस–ए–खास**
- **स्थापत्य योगदान**
  - 1911 में शिवपुरी में **जॉर्ज पंचम** के स्वागत हेतु **जॉर्ज कैसल** भवन बनवाया।
  - **माधव विलास पैलेस** का निर्माण कराया।
  - शिवपुरी को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया।
- **शैक्षणिक विकास**
  - **1897** में ग्वालियर किले के अंदर सरदार स्कूल के नाम से **सिंधिया स्कूल** बनवाया।
  - **विक्टोरिया कॉलेज** की स्थापना की जिसे वर्तमान में महारानी लक्ष्मीबाई कॉलेज के नाम से जाना जाता है।
- **अन्य तथ्य**
  - प्रथक सिंचाई विभाग की स्थापना की एवं **सिडनी प्रेस्टन** की अध्यक्षता में सिंचाई सुविधाओं का व्यापक सर्वेक्षण कराया।
  - **हरसी, तिघरा एवं ककैटो बांध** का निर्माण कराया।
  - राज्य की तरफ से मुहर्रम मनाने की प्रथा आरंभ की
  - **1904** में **ग्वालियर-श्योपुर-नैरोगेज ट्रेन** का परिचालन आरंभ कराया।
  - **जयाजीराव कॉटन मिल** एवं **बानमोर में सीमेंट फैक्ट्री** की स्थापना की।
  - रेलवे उपकरण के निर्माण हेतु **ग्वालियर इंजीनियरिंग वर्क्स** की स्थापना की।

नोट = जून 1925 में पेरिस में इनकी मृत्यु हो गई

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

जीवाजीराव सिंधिया II

- **परिचय** = सिंधिया राजवंश के अंतिम शासकक (1925-1948)
- **शासनकाल** = **1925 -1948**
  - **1925-1936** (अल्पायु होने के कारण **कौंसिल ऑफ रेसीडेंसी** (**महारानी चिनुकराजे**) के संरक्षण में शासन किया।)
  - **1936-48** (स्वायत्त शासक के रूप में शासन)
- **विवाह** = लेखा दिव्येश्वरी से
- **विलय** = भारत संघ में ग्वालियर रियासत का विलय इन्हीं के समय हुआ (**15 जून 1948**)
- ये मध्यभारत के **पहले राजप्रमुख** बने।
- **1946** में ग्वालियर में **गजराराजे मेडिकल कॉलेज** की स्थापना इन्हीं के समय हुई।
- ग्वालियर में **माधव इंजीनियरिंग कॉलेज** व **कमलाराजे कन्या महाविद्यालय** की स्थापना की।
- सिंधिया स्कूल का आधुनिकीकरण कराया।
- ग्वालियर में शारीरिक शिक्षण संस्थान की स्थापना (**1957**)

पुत्री

- पद्माराजे सिंधिया
- उषाराजे सिंधिया
- विजयाराजे सिंधिया
- यशोधराराजे सिंधिया

पुत्र

- माधवराव सिंधिया जिनके पुत्र ज्योतिरादित्य सिंधिया हैं।

****

VIDYA IAS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

आधुनिक भारत का इतिहास (मध्यप्रदेश के संदर्भ में)

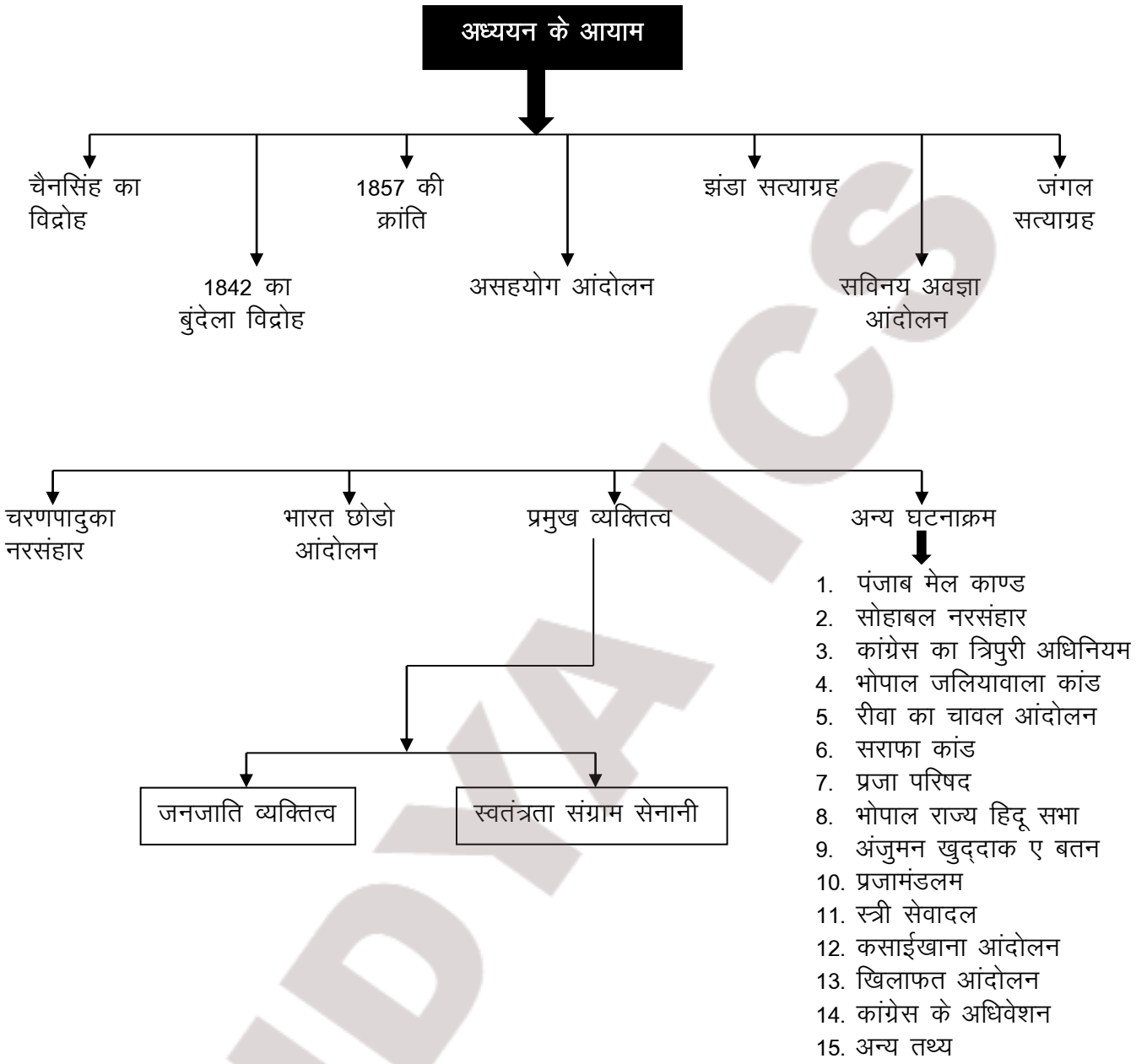

चैनसिंह का विद्रोह

- ये **नरसिंहगढ़ रियासत (राजगढ़)** के राजकुमार थे।
- **उपनाम**
  - मध्यप्रदेश के प्रथम शहीद
  - मध्यप्रदेश के मंगल पांडे
- इन्होंने पॉलिटिकल एजेंट **मैडॉक** की अवज्ञा कर ब्रिटिशर्स के साथ संघर्ष किया।
- अपने अंगरक्षक **हिम्मत खां व बहादुर खां** के साथ मिलकर **सीहोर** में **मैडॉक** के साथ युद्ध किया।
- सीहोर के दशहरा मैदान में **24 जून 1824** को शहीद।
- **छतरी** = दशहरा मैदान (सीहोर)

VIDYA ICS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

1842 का बुंदेला विद्रोह

परिचय | कारण | योजना | नेतृत्वकर्ता | दमन | परिणाम | महत्व

परिचय

- सागर, दमोह, नरसिंहपुर के आस–पास के क्षेत्रों में **8 अप्रैल 1842** को यह विद्रोह हुआ।
- इस विद्रोह को "**1857 के विद्रोह का पूर्वगामी**" भी कहा जाता है।

कारण

- करों की दर का बढ़ाया जाना व उसकी जबरन बसूली।
- शासकों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप।
- भ्रष्टाचार एवं कुनीति।
- भारतीयों को लाइसेंसी हथियार लेकर चलने पर रोक लगाना।
- **तात्कालिक कारण** = **गुढ़ा नरेश विक्रमजीत** के दरबार से **झुकनिया** नामक नर्तकी को ब्रिटिशर्स द्वारा उठा ले जाना।

योजना

- योजना निर्माण में 2 घटनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
  - राजा पारीक्षित द्वारा बुलाई गयी बैठक।
  - चरखारी में **बुढ़वा मंगल मेले** का आयोजन।

प्रसार एवं नेतृत्वकर्ता

- मधुकरशाह, गणेशश्जू एवं जवाहर सिंह बुंदेला ने **8 अप्रैल 1842** को बुंदेला विद्रोह की शुरूआत की।
- शीघ्र ही यह विद्रोह अनेक क्षेत्रों में फैल गया जहां अलग–अलग नायकों द्वारा इसे नेतृत्व प्रदान किया गया जैसे –

क्रमांक	नेतृत्वकर्ता	क्षेत्र
1.	मधुकरशाह	नरहुत/नरहट के राजा
2.	गणेशजू	नरहुत के राजा/मधुकरशाह के छोटे भाई
3.	जवाहर बुंदेला	चंद्रपुर
4.	राजा पारीक्षित	जैतपुरा
5.	हिरदेशशाह	हीरापुर
6.	विक्रमजीतसिंह	गुढ़ा
7.	मोर प्रहलाद	चंदेरी
8.	बखत सिंह	चिरगांव
9.	ढिल्लनशाह	मदनपुरा

दमन

- ब्रिटिशर्स द्वारा फूट डालो राज करो नीति के तहत इस विद्रोह का क्रूरतापूर्ण दमन किया जैसे –
  - शाहगढ के **बखतबली** ने मदनपुरा के गोंड शासक **ढिल्लनशाह** को पकडवाया।
  - **जून 1843** में **जवाहरसिंह बुंदेला** ने हैमिल्टन के समक्ष आत्मसमर्पण किया।
  - **दिसंबर 1843 में गणेष जू–द्वारा आत्मसमर्पण।**
  - **बखतबली ने हिरदेशशाह** को पकड़कर हैमिल्टन को सौंपा।
  - चरखारी के **रतनसिंह** ने जैतपुरा के **राजा पारीक्षित** को पकड़वाया।

नायकों के पृथक हो जाने से यह विद्रोह कमजोर हो गया।

परिणाम

- लगान में 10 प्रतिशत की छूट मिली।
- अत्याचारी अधिकारियों का तबादला हुआ एवं नये अधिकारियों की नियुक्ति।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

महत्व

- भले ही यह विद्रोह असफल रहा हो लेकिन इसने **1857 की क्रांति का आधार** तैयार कर दिया।

1857 की क्रांति

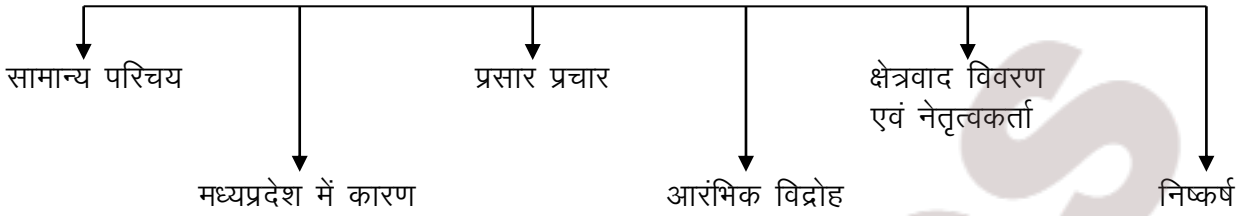

सामान्य परिचय

- **मई 1857** को मेरठ सैन्य छावनी से शुरू हुए इस महान विप्लव ने संपूर्ण उत्तरी भारत सहित मध्यप्रदेश में भी जनमानस को उद्वेलित किया।

मध्यप्रदेश में कारण

- अंग्रेजों के अत्याचार
- शोषणकारी आर्थिक नीतियाँ
- शोषण एवं कुनीति
- भ्रष्टाचार
- निजी मामलों में ब्रिटिशर्स का हस्तक्षेप।

प्रसार–प्रचार

- नाना साहब एवं तात्या टोपे ने कमल का फूल एवं रोटी लेकर मध्यप्रदेश के जनमानस को भी इस आंदोलन में भागीदारी हेतु प्रेरित किया।

मध्यप्रदेश में आरंभिक विद्रोह

- **प्रथम घटना**
  - मध्यप्रदेश में **नीमच सैन्य छावनी** से 1857 के विद्रोह की शुरूआत हुई।
  - कब = **3 जून 1857 को**
  - **कर्नल सी.बी. सोबर्स** द्वारा इसका दमन किया गया एवं **नीमच व नीम्बहेडा** पर पुनः ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित हुआ ।
- **द्वितीय घटना**
  - मध्यप्रदेश में 1857 की क्रांति की दूसरी ज्वाला **ग्वालियर सैन्य छावनी** में विद्रोह के साथ फूटी।
  - कब = **14 जून 1857 को**
  - इसी समय सिंधिया शासक जयाजीराव ने अपने परिवार को आगरा भेजा।
- **तृतीय घटना**
  - मध्यप्रदेश में 1857 की तीसरी ज्वाला **शिवपुरी में विद्रोह** के साथ फूटी।
  - कब = **20 जून 1857 को।**

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

मध्यप्रदेश में नेतृत्वकर्ता

सआदत खां

- ये होल्कर सेना के मुख्य तोपची थे।
- इन्होने **भागीरथ सिलावट** के साथ मिलकर **1 जुलाई 1857** को **इंदौर रेसीडेंसी** में विद्रोह किया।
- **1874 में बांसबाडा** से इनको गिरफ्तार कर **1 अक्टूबर 1874** को फांसी दे दी गई।
- मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग के सामने इनकी समाधि है।

शंकरशाह एवं रघुनाथशाह

- ये आपस में पिता-पुत्र थे।
- इन्होंने **महाकौषल क्षेत्र में 1857 की क्रांति** को नेतृत्व प्रदान किया।
- इन्होंने **पाटन एवं बरगी के युद्ध** में ब्रिटिशर्स से संघर्ष किया।
- ब्रिटिशर्स द्वारा गिरफ्तार कर **18 सितंबर 1858** को तोप के मुंह बांधकर उडा दिया।

बखतबली

- इन्होंने **शाहगढ़ क्षेत्र (सागर)** में 1857 की क्रांति का नेतृत्व किया।
- इन्होंने अपने सेनापति **बौधन दौआ** के साथ मिलकर ब्रिटिशर्स को कड़ी टक्कर दी।

मर्दनसिंह

- इन्होंने **बानपुरा** क्षेत्र में क्रांति को नेतृत्व प्रदान कर ब्रिटिशर्स को चुनौती दी।

टांट्या भील

- निमाड़ क्षेत्र में गुरिल्ला पद्धति के जरिये ब्रिटिशर्स से सतत संघर्ष किया।
- **1889** में इनको फांसी दे दी गई।

भीमा नायक

- इन्होंने बडवानी क्षेत्र के **सेंधवा** में 1857 की क्रांति का नेतृत्व किया।
- **ख्वाजा नायक** के साथ मिलकर ब्रिटिशर्स से सतत संघर्ष किया।
- **पनसेमल डकैती कांड व अंबापानी युद्ध** में ब्रिटिशर्स के विरूद्ध नेतृत्व किया।
- **29 दिसंबर 1876** को मृत्यु।

ख्वाजा नायक

- इन्होंने **निमाड़ क्षेत्र** में 1857 की क्रांति का नेतृत्व किया।
- भीमा नायक के साथ मिलकर अंग्रेजों का चुनौती दी।
- **पनसेमल डकैती कांड व अंबापानी युद्ध** में भागीदारी की।

अबंतीवाई

- **रामगढ़ क्षेत्र जबलपुर** में 1857 की क्रांति का नेतृत्व किया।
- गिरधारी बाई ने इनका सहयोग दिया था।
- **योगदान**
  - खेरी का युद्ध (**नवंबर 1857**)
  - देवहारगढ़ संघर्ष (**मार्च 1858**)
- **20 मार्च 1858** को अपनी हार को देखते हुए अपने प्राणों की आहुति दी।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

ठाकुर सरजू प्रसाद

- इन्होंने **विजयराघवगढ क्षेत्र (कटनी)** में 1857 की क्रांति का नेतृत्व किया।

फाजिल मोहम्मद खान

- ये भोपाल की **गढ़ा अंबापानी** के जागीरदार थे।
- इन्होंने अपने भाई **आदिल मोहम्मद खां** के साथ मिलकर ब्रिटिशर्स से संघर्ष किया।
- **बम्होरी युद्ध**
  - अक्टूबर 1857 को यह युद्ध हुआ था।
  - यह युद्ध ब्रिटिशर्स एवं फाजिल मोहम्मद खान की सेना के मध्य हुआ।
  - इस युद्ध में फाजिल मोहम्मद के सेनापति **भीकमसिंह** मारे गए।
- बाद में इनको गिरफ्तार कर फांसी की सजा दी गई।

लक्ष्मीबाई

- इन्होंने झांसी, काल्पी, ग्वालियर क्षेत्र में 1857 की क्रांति का नेतृत्व किया।
- **ह्यूरोज** के साथ संघर्ष करते हुए **18 जून 1858** को शहीद।

झलकारी बाई

- इन्होंने रानी लक्ष्मीबाई के साथ संघर्ष में सहयोग किया।

अमरचंद बांठिया

- ये सिंधिया राजवंश के खजांची थे।
- रानी के ग्वालियर आगमन पर इन्होंने रानी को राजकोष सौंपा।
- बाद में ब्रिटिशर्स द्वारा गिरफ्तार कर इनको फांसी दे दी गई।

तात्या टोपे

- ये 1857 की क्रांति के मुख्य नेतृत्वकर्ता थे।
- शिवपुरी को केन्द्र बनाकर **गुरिल्ला पद्धति** के जरिये ब्रिटिशर्स को परेषान किया।
- **मानसिंह** की गद्दारी के कारण गिरफ्तार हुए।
- **18 अप्रैल 1859** को **शिवपुरी** में जनसमूह के समक्ष इनको फांसी दे दी गई।

ठाकुर रणमत सिंह

- ये सतना के मनकहरी गांव में जन्मे स्वतंत्रता सेनानी थे।
- चित्रकूट, नागौद, नौगांव क्षेत्र में ब्रिटिशर्स के विरूद्ध क्रांति का नेतृत्व किया।
- इन्होंने **मेजर कैलीन** की हत्या की बाद में इनको फांसी दे दी गई।

अन्य नेतृत्वकर्ता

- मुराद अली खान = महू छावनी
- राजा बख्तावर सिंह = अमझेरा (धार)
- ठाकुर दौलत सिंह = होषंगाबाद
- देशपत बुंदेला = छतरपुर
- शेख रमजान = सागर
- दौलत कछवाहा = दमोह
- शुजात खां = भोपाल
- बहादुर व देवीसिंह = मंडला
- सुरेन्द्र भाई = संबलपुर
- झलकारी बाई = ग्वालियर
- किशोरसिंह =हिण्डोरिया दमोह
- सरदार खान = इंदौर
- विजयसिंह लोधी = रामगढ़
- दलगंजन सिंह =बरौंदा (शहडोल)
- हारोल हरचंद्रराय = रीवा
- ठाकुर जगमोहन सिंह = रीवा
- दौलतसिंह =राघौगढ़ (देवास)
- रणजीतराय दीक्षित = रीवांचल
- महादेव शास्त्री = ग्वालियर
- राव खलकसिंह दौआ = सेंवढ़ा(दतिया)
- उमरावसिंह सूबेदार = भाण्डेर (दतिया)
- वारिस मोहम्मद खां = भोपाल
- दौलतसिंह कुशवाहा = दबोह (भिण्ड)
- मेहरबानसिंह लोधी =हीरापुर (नरसिंहपुर)
- गरूलसिंह =सोहागपुर (शहडोल)
- गरूड़ सिंह =सोहागपुर (शहडोल)

निष्कर्ष = यद्यपि कि यह विद्रोह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रहा लेकिन इसके परिणाम दूरगामी हुए। इससे भारतीयों में निडरता एवं आपसी एकता को बढावा मिला एवं राष्ट्रवाद का आधार तैयार हुआ।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन

इस दौरान मध्यप्रदेश में निम्न घटनाक्रम हुए

- सेंट्रल प्रोविंशियल एसोसिएशन का दूसरा अधिवेशन **जबलपुर** में संपन्न हुआ जिसकी **अध्यक्षता गंगाधरराव चिटनवीस** ने की थी।
- इसी समय सशस्त्र क्रांति के उद्देष्य से **चिदंबरम पिल्लै** के नेतृत्व में **क्रांतिकारी दल** का गठन हुआ।
- अप्रैल 1907 में **माधवराव सप्रे** द्वारा नागपुर से केसरी के हिंदी संस्करण **हिंदी केशरी** का प्रकाशन आरंभ किया। इस समाचार पत्र ने **मध्यप्रांत में स्वदशी एवं बहिष्कार आंदोलन** के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **आर.एन. मधोलकर** की अध्यक्षता में **मार्च 1907** में रायपुर में **सेंट्रल प्रोविंशियल एसो**. का तीसरा अधिवेषन आयोजित हुआ। इसमें **डॉ. हरिसिंह गौर** ने भी भागीदारी की थी।
- आगे चलकर दिल्ली दरबार का आयोजन हुआ जिसमें बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया गया फलतः यह आंदोलन भी समाप्त हो गया।

मध्यप्रदेश में होमरूल लीग आंदोलन

- बाल गंगाधर तिलक एवं ऐनी बेसेंट के नेतृत्व में यह आंदोलन शुरू हुआ।
- इसका विस्तार मध्यप्रदेश में भी था।
- **उद्देश्य** = स्वशासन की प्राप्ति
- मध्यप्रदेश में इस दौरान निम्न घटनाक्रम देखने को मिलते हैं –
  - **नवंबर 1916** में अमरावती में **डॉ. हरिसिंह गौर** की अध्यक्षता में सेंट्रल प्रोंविंस एवं बरार प्रोविंशियल एसो. की बैठक में डॉ. गौर ने अनौपचारिक रूप से स्वराज की मांग को प्रस्तावित किया।
  - **1916 में जबलपुर** में होमरूल लीग की स्थापना हुई थी।
  - मध्यप्रांत में होमरूल लीग का मुख्यालय **नागपुर** था इसके साथ ही अनेक स्थानों पर होमरूल लीग की शाखाऐं भी स्थापित हुई थीं।
  - इस समय के प्रमुख नेता निम्न थे –
    - डॉ हरिसिंह गौर
    - गंगाधर राव
    - दादा साहब खापर्डे
    - माधवराव सप्रे एवं बी.एन. मुंजा

खिलाफत आंदोलन म.प्र. के संदर्भ में

1919–20 में राष्ट्रीय स्तर पर शुरू हुए इस आंदोलन के मप्र. में निम्न घटनाक्रम है –

- मध्यप्रदेश में इस आंदोलन को **ढूंढीलाल जाटव व अब्दुल गफ्फार** ने नेतृत्व प्रदान किया।
- भोपाल में **अम्मानबाई, सैय्यद हामिद हुसैन रिजवी, शंभूदयाल** ने खिलाफत आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।
- इसी दौरान **अजमल खां** नामक एक कार्यकर्ता ने **जबलपुर नगरपालिका भवन** पर झंडा फहराया।

असहयोग आंदोलन म.प्र. के संदर्भ में

परिचय → कारण → विभिन्न क्षेत्रों में आंदोलन → निष्कर्ष

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

परिचय

- यह सत्य एवं अहिंसा के उच्च आदर्शों पर आधारित शांतिप्रिय, अहिंसावादी आंदोलन था।
- **शुरूआत** = 1 अगस्त 1920 (गांधी जी द्वारा)

कारण

- ब्रिटिशर्स द्वारा आर्थिक शोषण
- प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अंग्रेजों की वादा खिलाफी।
- रौलेट एकट का आगमन।
- हंटर कमेटी की रिपोर्ट।
- भ्रष्टाचार एवं कुनीति
- जालियावाला बाग हत्याकांड।

मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के आंदोलन

- देश के साथ–साथ मध्यप्रदेश के जनमानस ने भी गांधीजी के आह्वान पर इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया
- **केन्द्र** = नागपुर
- **प्रमुख नेता**
  - सेठ गोविंददास
  - सुंदरलाल तपस्वी
  - कैलाशनाथ काटजू
  - माखनलाल चतुर्वेदी
  - सुभद्रा कुमारी चौहान
  - कंच्छेदीलाल
  - द्वारिकाप्रसाद मिश्र
  - सुखनंदन शर्मा
  - बालकृष्ण शर्मा नवीन
  - लक्ष्मणसिंह चौहान

प्रसार

- गांधी जी ने राष्ट्रव्यापी भ्रमण के दौरान **6 जनवरी 1921** को **छिंदवाड़ा** से अपनी यात्रा को आरंभ करते हुए जनमानस से इस आंदोलन में जुड़ने के लिए आह्वान किया।
- इसके बाद महात्मा गांधी **खंडवा होते हुए जबलपुर** पहुंचे जहां इन्होने **सेठ गोविंददास** की अध्यक्षता में **गोल बाजा**र की सभा को संबोधित किया एवं निम्न बातें कहीं –
  - लोग तिलक–स्वराज फंड में दान करें।
  - विदशी वस्तुओं का बहिष्कार करें।
- जबलपुर में महिलाओं द्वारा शराबबंदी व खादी वस्त्र बनाने का प्रण लिया।
- जबलपुर में इस आंदोलन का नेतृत्व **सेठ गोविंददास** ने किया।
- **नाथूराम मोदी, लक्ष्मण सिंह चौहान** जैसे व्यक्तियों ने अपनी वकालत छोड़ दी।
- **1921** में ही रतलाम में **प्रिंस ऑफ वेल्स की रतलाम यात्रा** का विरोध किया गया। इस विरोध का नेतृत्व निम्न व्यक्तियों ने किया।
  - आर्यचंद्र जुगड़ान
  - श्रद्धानंद महाराज
  - मास्टर लाल चंद

  } इनको गिरफ्तार कर **6–6** माह की सजा हुई
- **सीहोर** में स्वामी **आत्मानंद व श्रृद्धानंद** द्वारा नेतृत्व किया गया।
- इंदौर में जिला कांग्रेस कमेटी ने जनभागीदारी को बढ़ाने का आह्वान किया।
- **शाजापुर** में **बालकृष्ण शर्मा** नवीन व उनके साथीगणों ने ब्रिटिश कानूनों की अवज्ञा कर लोगों को उत्साहवर्धन किया।
- नरसिंहगढ़ (राजगढ़) में महिलाओं द्वारा शराबबंदी, धरना प्रदर्शन, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई।
- **सितंबर 1921**
  - गांधी जी ने भोपाल की यात्रा एवं व्यापक जनभागीदारी का आह्वान किया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **अम्मानबाई, शंभूदयाल खुमान, नज्मा दद्दा, हकीम फैय्याज हुसैन, हामिद हुसैन रिजवी** आदि भोपाल क्षेत्र में मुख्य नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरे।

- **बघेलखंड क्षेत्र** में **अवधेष प्रतापसिंह, यादवेन्द्र सिंह, नर्मदा सिंह, राजभान सिंह, लाल बलदेव सिंह,** आदि लोगों ने नेतृत्व प्रदान किया।
- **बुंदेलखंड अंचल** में होमरूल केन्द्रों के जरिये असहयोग आंदोलन की गतिविधियों का संचालन किया गया।
- **सागर में राघवेन्द्र सिंह** की अध्यक्षता में प्रदेश कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई।
- ग्वालियर रियासत के ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, उज्जैन मंदसौर, में ये आंदोलन भी काफी सक्रिय रहा।
- **नीमच में नथमल चौराडिया, मूलचंद अग्रवाल** ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।
- ग्वालियर में महिलाओं द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया एवं **कमलाबाई यादव, जानकीदेवी अग्रवाल, चंपादेवी यादव** ने नेतृत्व प्रदान किया।

आंदोलन वापसी

- **5 फरवरी 1922** को चौरी–चौरा कांड के बाद महात्मा गांधी ने आंदोलन वापसी की घोषणा करते हुए इस आंदोलन को स्थगित कर दिया।

निष्कर्ष

- यद्यपि यह आंदोलन पूर्णतः सफल नहीं रहा लेकिन इसके दूरगामी परिणाम निकले व इस आंदोलन ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक नयी दिशा दी।

मध्यप्रदेश झंडा सत्याग्रह

- मध्यप्रदेश के **जबलपुर** में यह सत्याग्रह हुआ था। (**8 मार्च 1923**)
- **घटनाक्रम**
  - जबलपुर नगरपालिका में कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ था। इस खुषी से उत्साहित **प्रेमचंद्र जैन, कुषलचंद्र जैन,** ने नगरपालिका से **यूनियन जैक** उतारकर चरखायुक्त झंडा फहरा दिया। किंतु यहां के डिप्टी गवर्नर **ऑटिश** ने तिरंगे को उतरवाकर पैरों तले कुचलवा दिया। इसके विरोध में ही झंडा सत्याग्रह हुआ।
- **नेतृत्वकर्ता**
  - सुंदरलाल तपस्वी
  - नरहरि अग्रवाल
  - नाथूराम मोदी
  - लक्ष्मणसिंह चौहान
  - सुभद्रा कुमारी चौहान (पहली महिला सत्याग्रही)

  इन लोगों ने झण्डे साथ जुलूस निकाला। बाद में **सुंदरलाल तपस्वी** को गिरफ्तार कर 6 माह की सजा दी गई जबकि अन्य नेतृत्वकर्ताओं को गिरफ्तार कर बाद में छोड़ दिया गया।

- बाद में इस आंदोलन को केन्द्र **नागपुर** बना जहां **13 अप्रैल** को **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सरोजनी नायडू, पं. नेहरू, मौलाना आजाद, विट्ठल भाई पटेल, सरदार पटेल** ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।
- इसी दौरान विद्रोहियों ने प्रतिवर्ष **18 जून को झंडा दिवस** मनाने की घोषणा की।
- अंततः गोरी सरकार ने 100 स्वयंसेवकों को झंडा सहित जुलूस निकालने की अनुमति दी **(18 अगस्त 1923)**
- अनुमति मिलने के साथ ही यह आंदोलन समाप्त हो गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन मध्यप्रदेश के संदर्भ में

परिचय

- विनय के साथ अवज्ञा या अवहेलना की गांधीवादी रणनीति पर आधारित इस आंदोलन में मध्यप्रदेश के जनमानस ने व्यापक स्तर पर भागीदारी की।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

शुरूआत

- **6 अप्रैल 1930** को गांधीजी द्वारा दांडी में नमक कानून के उल्लंघन के साथ यह आंदोलन शुरू हुआ।
- **7 अप्रैल 1930** को मध्यप्रदेश में जबलपुर के निकट **बरेला** से इस आंदोलन की शुरूआत हुई।
- जबलपुर में **सेठ गोविंददास, द्वारिकाप्रसाद मिश्र, ग्याचरण त्रिवेदी, सवाईमल जैन, सुभद्राकुमारी चौहान, लक्ष्मणसिंह चौहान, पं. रविशंकर, वी.पी.मिश्र** ने नेतृत्व प्रदान किया।

घटनाक्रम

- सागर, दमोह, नरिहसंहपुर, सीहोर, कटनी, मंडला में इस आंदोलन में व्यापक जनभागीदारी देखने को मिली।
- सागर में विद्यार्थियों ने भागीदारी की।
- कटनी में वेयरहाउस पर धरना दिया गया।
- **सेठ गोविंददास** ने अपनी पुस्तक "**भारत में अंग्रेजी राज्य**" के माध्यम से अंग्रेजों के विरूद्ध जनमत तैयार किया।
- रायपुर में होने वाले **मध्यभारत प्रांतीय सम्मेलन** में हिस्सा लेने जा रहे **पं. नेहरू** की गिरफ्तारी से यह आंदोलन और तीव्र हुआ।
- इसी दौरान महात्मा गांधी ने तत्कालीन सेंट्रल प्राविन्स एवं बरार के **यवतमाल क्षेत्र में पुसंद के जंगलों** में घास काटकर ब्रिटिश कानून की अवज्ञा की एवं इसी क्रम में मध्यप्रदेश के विभिन्न भागों में जंगल सत्याग्रहों की शुरूआत हुई।

टुरिया जंगल सत्याग्रह — घोडा–ड़ोंगरी जंगल सत्याग्रह

टुरिया जंगल सत्याग्रह

- **परिचय** = गांधी जी के नमक सत्याग्रह के समर्थन में यह सत्याग्रह शुरू हुआ।
- **स्थान** = सिवनी
- **नेतृत्वकर्ता** = दुर्गाशंकर मेहता
- **घटनाक्रम**
  - **9 अक्टूबर 1930** को सिवनी के टुरिया नामक स्थान पर **मूकाप्रसाद** द्वारा चंदन के जंगलों में घास काटी गई।
  - डिप्टी कमिश्नर **सीमन** के आदेश पर गोलीबारी में **गुड्डोबाई, रैनाबाई, बेमाबाई एवं बिरजू गोंड** शहीद हुए।

घोड़ा डोंगरी जंगल सत्याग्रह

- यह सत्याग्रह बैतूल में 1930 में संपन्न हुआ।
- **गजनसिंह कोरकू** के नेतृत्व में **बंजारी ढाल** क्षेत्र में सत्याग्रह हुआ।
- विरोध को दबाने के क्रम मे **कौमा गोंड** शहीद हुए एवं **गजनसिंह** को **जम्बाड़ा जेल** में बंदी बनाया गया।
- साथियों को छुड़ाने के क्रम में **रामू गोंड, मकरू गोंड** शहीद हुए।

5 मार्च 1931 को संपन्न गांधी इरविन समझौता के बाद गांधीजी ने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भागीदारी की एवं यह आंदोलन भारत के साथ मध्यप्रदेश में भी समाप्त हो गया।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

चरण पादुका नरसंहार

- **परिचय** = इसे मध्यप्रदेश का जलियांवाला बाग हत्याकांड कहा जाता है।
- **घटना तिथि** = 14 जनवरी 1931
- **दिन** = मकर संक्रांति का दिन
- **स्थान** = छतरपुर में उर्मिल नदी के किनारे चरणपादुका नामक स्थान पर
- **घटना**
  - अंग्रेजों द्वारा राजस्व कर वृद्धि एवं जबरन उगाही के विरूद्ध लोग जमा हुए जिनका नेतृत्व **सरजू दौआ** कर रहे थे।
  - शांतिपूर्ण रूप से चल रही सभा पर **कर्नल फिशर** ने भील पल्टन से गोली चलवा दी।
- **परिणाम**
  - 21 मृत, 26 लोग घायल हुए।
  - **सुंदरलाल बरोधा, धीरू कुर्मी, रामलाल कुर्मी, धरमदास, हलकऊ अहीर** शहीद हुए।
  - घटना उपरांत सरजू दौआ को 4 साल व अन्य सत्याग्रहियों को 3 साल की सजा दी गई।

नोट = स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद चरणपादुका में बलिदान स्थल पर मुख्यमुंत्री अर्जुनसिंह के समय बाबू जगजीवन राम द्वारा स्मारक का उद्घाटन किया गया।

मध्यप्रदेश में भारत छोडो आंदोलन

परिचय

- **8 अगस्त 1942** को गांधीजी ने मुंबई में **"करो या मरो"** के नारे के साथ भारत छोडो आंदोलन की शुरूआत की।
- इस आंदोलन में भारत के अन्य क्षेत्रों की ही तरह मध्यप्रदेश के जनमानस ने व्यापक भागीदारी की
- मध्यप्रदेश में इस आंदोलन की शुरूआत **ग्वालियर रियासत के विदिशा** से हुई।

प्रमुख घटनाक्रम

जबलपुर में गतिविधियाँ

- कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में **फुहारे वाले चौक (जबलपुर)** में **9 अगस्त** को सभा रखी गयी।
- इस सभा में 1 सप्ताह तक भूख हडताल का फैसला किया गया ।
- **नेतृत्वकर्ता** = प. रविशंकर शुक्ल, सेठ गोंविंददास, द्वारिकाप्रसाद मिश्र, भगवतचरण मंडलोई।
- **11 अगस्त** को पुनः सभा का आयोजन किया गया जिस पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया।
- **14 अगस्त 1942** को जबलपुर में ही पुलिस गोलीबारी में रीवा के बालक **गुलाब सिंह** शहीद हुए।
- **परिणाम** = आंदोलन का फैलाव प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में तेजी से हुआ।

बैतूल में गतिविधियाँ

- **12 अगस्त 1942** को प्रभातपट्टन या **पट्टन बाजार** में ब्रिटिशर्स के कपड़े उतरवाकर उन्हें खादी पहनायी गयी एवं इसी क्रम में हुई पुलिस गोलीबारी में **महादेव तेली** शहीद हुए।
- **19 अगस्त 1942** को बैतूल के **घोड़ा–डोंगरी** में आदिवासियों ने बढ–चढकर हिस्सा लिया जिसका नेतृत्व **विष्णु गोंड** कर रहे थे। आंदोलनकारियों पर हुई गोलीबारी में **विरसा गोंड** शहीद हुए जबकि **जिर्रा गोंड** का निधन जेल में हुआ।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

मंडला में गतिविधि

- **मन्नूलाल मोदी एवं मथुराप्रसाद यादव** के नेतृत्व में निकाले जा रहे जुलूस पर पुलिस गोलीबारी में मैट्रिक के छात्र **उदयचंद्र जैन** शहीद हो गए। **(15 अगस्त 1942)**

मालवांचल में गतिविधियाँ

- **मालवी सरवटे, जौहरीलाल झांझरिया, इंदु पाटकर, यज्ञनारायण पौराणिक** ने स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों को आंदोलन से जोड़कर मालवा क्षेत्र में आंदोलन का नेतृत्व प्रदान किया।
- रतलाम में **मामा बालेश्वर दयाल** ने बिटिशर्स को परेषान किया।
- सागर के गढ़ाकोटा क्षेत्र में **साबूलाल जैन** द्वारा नेतृत्व किया गया।
- भोपाल में **भोपाल प्रजामंडलम** के सदस्यों जैसे – **विट्ठलदास, शाकिर अली खां एवं गोविंद प्रसाद श्रीवास्तव** ने 1942 के भारत छोडो आंदोलन में नेतृत्व प्रदान किया।
- इंदौर में **हेमू कलानी** शहीद हुए।

अन्य गतिविधियाँ

- रीवा रियासत में **प. शंभूनाथ शुक्ल** एवं उनके भतीजे **चंद्रकांत शुक्ल** ने छात्रों को एकत्रित कर आंदोलन में भागीदारी की।
- शहडोल में **छोटेलाल पटेल** द्वारा आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।
- रीवा के **लाल पदमधर सिंह** इलाहबाद में पुलिस गोलीबारी में शहीद हुए।
- विदिषा क्षेत्र में विदिषा प्रस्ताव पास हुआ जिसका समर्थन **लीलाधर जोशी, बाबूराम सहाय एवं गोपीकृष्ण विजयर्गीय** ने किया।
- विदिषा में ही 2 महिलाओं **श्रीमति मदनदेवी, जमुनादेवी** ने अंग्रेजों को चूडियाँ भेंट की।
- होषंगाबाद में **भवानी प्रसाद मिश्र** द्वारा नेतृत्व किया गया।
- **महाकौषल क्षेत्र** में **सेठ गोविंददास द्वारिका प्रसाद मिश्र, कैलाशनाथ काटजू, सुंदरलाल शर्मा सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी** ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।
- नरसिंहपुर के चिंचली में पुलिस गोलीबारी मे **मंशाराम ताम्रकार एवं गौरीबाई जोशी** शहीद।

स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश का ऐसा कोई क्षेत्र नही था जहां 1942 का भारत छोडो आंदोलन न हुआ हो।

पंजाब मेल हत्याकांड

- **कब** = 23-24 जुलाई 1931 की घटना
- **स्थान** = खंडवा रेलवे स्टेशन पर
- **मुख्य क्रांतिकारी**
  - वीर यशवंत सिंह + देवनारायण तिवारी + दलपतराव
- **घटनाक्रम**
  - दिल्ली सें मुंबई जा रही पंजाब मेल रेल में **खंडवा रेलवे स्टेशन** पर ब्रिटिश अधिकारी **हैक्सन** (हैक्सट) एवं उनके साथी **मेजर शाहन** की क्रांतिकारियों द्वारा हमला कर दिया गया। जिसमें हैक्सन मारा गया एवं मेजर शाहन घायल हुआ।
- **परिणाम**
  - क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया गया।
  - वीरयशवंत एवं देवनारायण तिवारी को जबलपुर में फांसी की सजा मिली व **दलपतराव** को कालापानी की सजा मिली।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

कांग्रेस का त्रिपुरी अधिवेशन

- यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का **52 वां** अधिवेशन था।
- **1938** में **हरिपुरा अधिवेशन** में सुभाष चंद्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष बने थे।
- **घटनाक्रम**
  - **1939** में **जबलपुर के त्रिपुरी** में आयोजित सम्मेलन में **सुभाष चंद्र बोस** पुनः उम्मीदवार थे जिनके सामने गांधी समर्थित उम्मीदवार **पट्टाभि सीतारामैय्या** थे।
  - **पट्टाभिसीतारमैय्या** को हराकर सुभाष चंद्र बोस दोबारा अध्यक्ष बने एवं पट्टाभि की हार को **गांधी ने अपनी हार बताया।**
  - बाद में गांधी एवं उनके समर्थकों के विरोध के चलते सुभाष चंद्र बोस ने **इस्तीफा** दे दिया एवं कांग्रेस के नए अध्यक्ष **राजेंद्र प्रसाद** बने।

सोहबल नरसंहार

कब = जुलाई 1938 की घटना

स्थान = सतना के वीरसिंहपुर का हिनौता गांव

कारण = ब्रिटिश क्रूरता के विरोध सभा का आयोजन

घटनाक्रम = सभा में शामिल होने जा रहे लोगों पर माजन गांव के समीप पुलिस गोलीबारी में **लालबुद्ध प्रतापसिंह, मंधीर पांडेय, रामाश्रय गौतक** शहीद हुए।

इस घटनाक्रम को **माजन गोलीकांड** भी कहा जाता है।

भोपाल जालियांवाला बाग कांड

- **कब** = 14 जनवरी 1949
- **समय** = मकर संक्रांति के दिन की घटना
- **स्थान** = भोपाल रियासत के रायसेन के **बुरास गांव** की घटना (नर्मदा किनारे)
- **कारण** = नर्मदा नदी के तट पर झंडा फहराना
- **घटनाक्रम** = भोपाल नवाबी सेना के अधिकारी **जफर अली खां** द्वारा फायरिंग करवाई गई। जिसमें **बैजनाथ गुप्ता, छोटेलाल, वीरभान सिंह, मंगल सिंह, विशाल सिंह** शहीद हुए।

रीवा का चावल आंदोलन

- **कब** = 28 फरवरी 1947
- **स्थान** = रीवा के क्षेत्र का वदवार गांव
- **कारण** = जबरन लेह्ही के विरोध में आंदोलन
- **घटनाक्रम** = विरोध कर रहे है सत्याग्रहियों पर पुलिस गोलीबारी में **त्रिभुवन नारायण तिवारी एवं भैरव प्रसाद उरमलिया** शहीद हुए।

सराफा कांड

- **कब** = 6 सितंबर 1942
- **स्थान** = सराफा बाजार (इंदौर)
- **कारण** = भारत छोड़ो आंदोलन के समर्थन में जुलूस का संचालन।
- **घटनाक्रम** = सराफा बाजार में चल रहे शांतिपूर्ण सत्याग्रह पर पुलिस गोलीबारी में **मगनलाल ओसवाल** शहीद हुए।
- **महत्त्व** = भारत छोड़ो आंदोलन उग्र हुआ

अंजुमन–खुद्दाम–ए–वतन

- 1934 में समाज सेवा के उद्देश्य से भोपाल में गठित।
- **संस्थापक** = मौलाना तरजी खां

प्रजा मंडल

- रतलाम में 1936 में गठित
- **उद्देश्य** = किसानों एवं मजदूरों को संगठित करना।

भोपाल राज्य हिंदू सभा

- 1934 भोपाल में गठन
- **उद्देश्य** = समाज सेवा
- **संस्थापक** = मास्टर लाल सिंह, उद्धव राव मेहता, जमुनाप्रसाद मुखरैया।

प्रजामंडल

- शराबबंदी, हरिजन उद्धार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने के उद्देश्य से **1934 में झाबुआ** में स्थापित।
- **1938 में भोपाल** में भी स्थापित।

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

स्त्री सेवा दल

- रतलाम कांग्रेस समिति 1920 के तहत 1931 में गठन
- **संस्थापक** = स्वामी ज्ञानानंद
- **उद्देश्य** = स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ–साथ समाज सेवा

कसाईखाना आंदोलन

- **1920** में **सागर के रतौना** में कसाईखाना की स्थापना के विरोध में संगठित।
- **माखनलाल चतुर्वेदी** द्वारा **कर्मवीर समाचार** पत्र द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया।

अन्य तथ्य

- **घुनघुटी जंगल सत्याग्रह अक्टूबर 1930 में उमरिया** में हुआ था ।
- **अगस्त 1930 को छिंदवाड़ा में जंगल सत्याग्रह** हुआ था।
- **सितंबर 1930** में बेतवा के किनारे **ओरछा जंगल सत्याग्रह लालाराम वाजपेई** के नेतृत्व में हुआ था।
- **असहयोग आंदोलन 1920** का नेतृत्व मध्यप्रदेश में **प्रभाकर डुंडीराज** ने किया था ।

मध्यप्रदेश संबंधी कांग्रेस के अधिवेशन

कोलकाता अधिवेशन (1896)

- रहीमतुल्ला सयानी की अध्यक्षता में सम्पन्न।
- मध्य भारत से **बापूराव, गंगाधर चिटनीस, अब्दुल अजीज** ने भाग लिया।

नागपुर अधिवेशन (1891)

- 1981 में आनंद चार्लू की अध्यक्षता में संपन्न।
- इस अधिवेशन में मध्य प्रांत व मालवा में शिवाजी एवं गणेश उत्सव मनाने की अनुमति मिली।

लाहौर अधिवेशन

- 1893 में दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में संपन्न।
- इसी अधिवेशन में **डॉ हरिसिंह गौर** ने भागीदारी की थी।

त्रिपुरी अधिवेशन

- 1939 में मध्यप्रदेश में आयोजित कांग्रेस का एकमात्र अधिवेशन
- **अध्यक्ष** = सुभाष चंद्र बोस

मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानी

रानी लक्ष्मीबाई

- **परिचय** = भारतीय वीरांगना एवं झांसी की रानी उपनाम से प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी।
- **जन्म** = 19 नवंबर 1828 (बनारस)
- **पिता** = मोरोपंत तांबे
- **माता** = भागीरथी बाई
- इनके बचपन का नाम **मनु/मनिकर्णिका/छबीली** था।
- इनका लालन–पालन **पेशवा बाजीराव** के यहां हुआ।
- **मित्र** = तात्या टोपे, नाना साहब (धोंधू पंत)।
- **विवाह** = झांसी के राजा **गंगाधर राव** के साथ।
- शादी के बाद इनको पुत्र की प्राप्ति हुई लेकिन शीघ्र ही पुत्र का निधन हो गया। अतः **दामोदर राव** को दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया ।
- गंगाधर राव की मृत्यु के बाद डलहौजी द्वारा झांसी पर आधिपत्य कर लिया।
- झांसी पर आधिपत्य से रानी रुष्ट हो गई एवं 1857 की क्रांति में ब्रिटिशर्स के विरूद्ध भागीदारी की।
- **शहीद** = 18 जून 1858
- **समाधि** = ग्वालियर के फूलबाग में

झलकारी बाई

- **परिचय** = लक्ष्मी बाई की अंगरक्षिका एवं सेनापति।
- **जन्म** = 22 नवंबर 1830
- **पिता** = मूलचंद कोरी
- **माता** = धनिया बाई
- **योगदान** = रानी लक्ष्मी बाई के साथ मिलकर 1857 के विद्रोह में भागीदारी की।
- **शहीद** = 18 जून 1858
- **समाधि** = ग्वालियर

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

रानी अवंती बाई लोधी

- **परिचय** = रामगढ़ की शासिका एवं रेवांचल में मुक्ति आंदोलन की सूत्राधार।
- **विशेष** = मध्य प्रदेश की प्रथम शहीद वीरांगना
- **उपनाम** = रामगढ़ की झांसी की रानी
- **जन्म** = 16 अगस्त 1831 मनखेड़ी गांव (सिवनी)
- **पिता** = जुझार सिंह लोधी
- **विवाह** = रामगढ़ (**वर्तमान में डिंडोरी**) के राजा लक्ष्मण सिंह के पुत्र **विक्रमादित्य** से
- **पुत्र** = शेरसिंह, अमानसिंह
- पति की मानसिक विक्षिप्तता एवं पुत्रों के अल्पवयस्क होने के कारण रानी स्वयं शासन कार्य करने लगी। लेकिन रामगढ़ में नियुक्त ब्रिटिश तहसीलदार **सुमित अली** रानी के कार्यों में हस्तक्षेप करता था। रानी ने सुमित अली की हत्या कर 1857 की क्रांति में भागीदारी की फलतः रानी व ब्रिटिश सेना के मध्य युद्ध हुए ।

खेरी का युद्ध

- मंडला के निकट यह संघर्ष हुआ।
- **कब** = 19 नवंबर 1857
- **कैप्टन वॉडिंगटन(वेलिंगटन)** पराजित हुआ एवं रानी द्वारा उसे क्षमादान दे दिया गया।

देवहारगढ़ युद्ध

- 20 मार्च 1858 को यह संघर्ष हुआ।
- अवंतीबाई एवं **कैप्टन वॉडिंगटन** रीवा सेना के मध्य यह संघर्ष हुआ।
- रानी ने पराजय को देखते हुए अपनी जान दे दी।

रानी गिरधारी बाई

- **परिचय** = अवंती बाई की अंगरक्षिका एवं कुशल सेनापति।
- 1857 के विद्रोह में भागीदारी की।
- **योगदान** = **खेरी एवं देवहारगढ़** युद्धो में संघर्ष किया।
- **शहीद** = 20 मार्च 1858 को

राजा परीक्षित

- **जैतपुरा के शासक** जिनके पिता **केसरीसिंह एवं** माता **भवानीदेवी** थीं।
- **1842 के बुंदेला विद्रोह** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- इन्हीं के निर्देशन में बुंदेला विद्रोह व्यूह रचना हुई एवं **राजपूत–लोधी–बुंदेला गठजोड़** बना।
- जून 1842 में **बनबाडी एवं भूरागढ़ के युद्ध** में फिरंगियों को परास्त किया।
- जैतपुरा के दीवान **गोलंदाज** व चरखारी के **रतन सिंह** के धोखे के कारण ये पकड़े गए।
- इनकी गिरफ्तारी के बाद जैतपुरा पर ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित हुआ एवं इनको 1200 रुपए पेंशन मिलने लगी।

तात्या टोपे

- 1857 क्रांति के नायक एवं नेतृत्वकर्ता।
- **जन्म** =1814 (ऐबला महाराष्ट्र)
- **मूल नाम** = आत्मारंग पांडुरंग
- लालन–पालन **पेशवा बाजीराव** के यहां मनु एवं नाना साहब के साथ हुआ।
- **1857 की क्रांति में योगदान**
  - कमल के फूल एवं रोटी के जरिए आंदोलन का प्रसार।
  - गुरिल्ला युद्ध पद्धति से ब्रिटिशर्स को सतत् परेशान किया।
- **8 अप्रैल 1859 को मानसिंह** के धोखे के चलते गिरफ्तार हुए।
- **18 अप्रैल 1859** को शिवपुरी में फांसी दे दी गई।

मधुकर शाह बुंदेला

- नरहट (नरहुत) के राजा जिन्होंने 1842 के बुंदेला विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- गणेश जू इनके छोटे भाई थे।
- सागर न्यायालय द्वारा जमीन डिक्री किए जाने के विरोध में **8 अप्रैल 1842** को अपने भाई **गणेश जू व जवाहर बुंदेला** के साथ मिलकर बुंदेला विद्रोह का आगाज किया।
- ब्रिटिशर्स ने **मर्दन सिंह** के सहयोग से इन्हें गिरफ्तार किया एवं फांसी की सजा दे दी।
- **समाधि** = गोपालगंज (सागर)

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

जवाहर सिंह बुंदेला

- **परिचय** = चंद्रपुर के राजा जिन्होंने 1842 के बुंदेला विद्रोह का आगाज किया।
- **विद्रोह क्यों** = सागर न्यायालय द्वारा जमीन की डिक्री किया जाना।
- **योगदान** = खिमलासा, खुरई, नरयावली, धामोनी, आदि क्षेत्रों में ब्रिटिशर्स को पराजित कर लूटपाट की
  = जून 1843 तक ब्रिटिश को सतत परेशान किया।
- **आत्मसमर्पण** = जून 1847 में **चाचा खेतसिंह** के कहने पर ब्रिटिश अधिकारी **हैमिल्टन** के समक्ष आत्मसमर्पण किया।

राजा हिरदेषशाह

- ये **हीरापुर (नरसिंहपुर)** के चंद्रवंशी लोधी शासक थे।
- 1842 के बुंदेला विद्रोह में **राजा पारीक्षित** के कहने पर विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया।
- अपने भाई **गजराजसिंह, दीवान ईशरीसिंह व रिश्तेदार सावंत सिंह, बहादुर सिंह** के साथ मिलकर ब्रिटिशर्स को परेशान किया व पुलिस चौकियों पर लूटपाट की।
- बाद में बखतबली के धोखे के कारण ये गिरफ्तार हुए एवं अंग्रेजों ने इन्हें फांसी दे दी।

ढिल्लनषाह/ढेलनषाह

- ये **मदनपुरा** के गोंड शासक थे जिन्होंने 1842 के बुंदेला विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- गोंड राजाओं एवं जमीदारों को विद्रोह में भागीदारी हेतु प्रेरित किया।
- **चावरपाठा** के जमींदारों के सहयोग के कारण बुंदेला विद्रोह इनके क्षेत्रों में ही सर्वाधिक सफल रहा था।
- **दिसंबर 1842 में राजा बखतबली** के धोखे के कारण **कर्नल ऐली** ने इन्हें गिरफ्तार किया व काले पानी की सजा दी।

बखत बली

- ये शाहगढ़ रियासत (सागर) के शासक थे।
- **ब्रिटिश सहयोग**
  - अंग्रेजों के साथ मित्रवत व्यवहार एवं गढ़ाकोटा क्षेत्र प्राप्ति की चाह में बुंदेला विद्रोह में ब्रिटिशर्स का साथ दिया।
  - इसी क्रम में इन्होंने हीरापुर के **हिरदेषशाह** एवं मदनपुरा के **ढिल्लनशाह** को पकड़वाया।
- **ब्रिटिश विरोधी नीति**
  - बुंदेला विद्रोह के बाद इन्हें गढ़ाकोटा क्षेत्र प्राप्त ना हो पाया इसी कारण इन्होंने ब्रिटिश विरोधी नीति अपनाई एवं 1857 के विद्रोह में अंग्रेजो के खिलाफ लड़े।
  - इसी क्रम में **जुलाई 1857** को गढ़ाकोटा पर आधिपत्य किया।
  - अपने मित्र **मर्दन सिंह** व सेनापति **बौधन दौआ** के साथ कालपी में **तात्या टोपे** से मुलाकात की।
  - जब लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर पर आधिपत्य किया तब इन्होंने उनसे भी मुलाकात की।
- **जुलाई 1858** को मिस्टर **थरेस्टन** के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।
- **मृत्यु** = सितंबर 1873

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **परिचय** = चंदेरी के राजा मोर प्रहलाद के पुत्र व बखतबली के मित्र एवं **बानपुर (ललितपुर) के शासक।**
- **ब्रिटिश सहयोग**
  - चंदेरी का इलाका प्राप्त करने के लिए बुंदेला विद्रोह में अंग्रेजों का साथ दिया।
  - इसी क्रम में जून 1844 में मधुकर शाह को पकड़वाया।
- **ब्रिटिश विरोधी नीति**
  - बुंदेला विद्रोह के बाद इन्हें चंदेरी प्राप्त ना हो सका अतः 1857 के विद्रोह में ब्रिटिश विरोध की नीति अपनाई।
  - इसी क्रम में इन्होंने **बखतबली एवं तात्या टोपे** के साथ मिलकर अंग्रेजों से संघर्ष किया।
- **जुलाई 1818** में मिस्टर थरेस्टन के समक्ष आत्मसमर्पण किया।
- **जुलाई 1879** में निधन

बौधन दौआ

- **उपनाम** = बुंदेलखंड का मंगल पांडे
- शाहगढ़ के शासक बखतबली के सेनापति एवं मुख्य सलाहकार।
- **जुलाई 1857** में गढ़ाकोटा विजय में मुख्य भूमिका निभाई।
- बौधन दौआ के सहयोग से ही बखतबलि ने **रेहली** के डिप्टी कमिश्नर **लॉसन** को हराया रेहली पर कब्जा किया।
- अपने साथी **बदनराय** के धोखे से गिरफ्तार एवं **अप्रैल 1858** में इन्हें फांसी दे दी।

मोर प्रहलाद/मोद प्रहलाद

- चंदेरी के राजा जो मर्दन सिंह (वानपुर के शासक) के पिता थे।
- इन्होंने **तालबेहट महल** का निर्माण कराया
- 1842 के बुंदेला विद्रोह में भागीदारी की।

कुंवरचैन सिंह

- **परिचय** = ये नरसिंहगढ़ रियासत (राजगढ़) के राजकुमार थे।
- **पिता** = सोबल सिंह
- **उपनाम**
  - मध्य प्रदेश के मंगल पांडे
  - मध्य प्रदेश के प्रथम शहीद
- **ब्रिटिश विरोध**
  - स्वतंत्रता की इष्ट अभिलाषा एवं ब्रिटिश कंपनी के हस्तक्षेप के चलते पोलिटिकल एजेंट मैडॉक की अवज्ञा की।
  - वस्तुतः मैडॉक ने चैनसिंह को आनंदराम बक्शी एवं रूपराम बोहरा की हत्या के मामले से बचाने के लिए दो शर्तें रखी
    - ➢ नरसिंहगढ़ ब्रिटिश आधिपत्य स्वीकारे।
    - ➢ नरसिंहगढ़ क्षेत्र में उत्पादित अफीम की बिक्री केवल ब्रिटिशर्स को ही हो।

नोट – आनंदराव बख्शी एवं रूपराम बोहरा चैनसिंह के दीवान एवं खजांची थे जो ब्रिटिशर्स के साथ मिल गए अतः चैनसिंह द्वारा इनकी हत्या कर दी गई थी।

  - चैनसिंह ने इन शर्तों की अवज्ञा की एवं अपने सहयोगी **हिम्मत खां एवं बहादुर खां** के साथ सीहोर आ गए एवं **मैडॉक** से इनका संघर्ष हुआ।

- **मैडाक व चैनसिंह का संघर्ष**
  - **24 जून 1824** को चैनसिंह व उनके सहयोगी **सीहोर के दशहरा मैदान** में शहीद हुए जहां आज भी चैनसिंह की छतरी बनी हुई है।

बख्तावर सिंह

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- **परिचय** = धार की अमझेरा रियासत के राजकुमार जो दिसंबर 1831 में 7 वर्ष की अल्पायु में राजा बने।
- **जन्म** = दिसंबर 1824
- **पिता** = महाराज अजीत सिंह
- **ब्रिटिश विरोध**
  - **कारण** = इनके दो विवाह हुए थे लेकिन इनकी कोई संतान नहीं थी। पुत्र ना होने के कारण डलहौजी ने हड़प नीति के तहत इनके राज्य का विलय कर लिया।
  - इन्होंने विलय से नाखुश होकर 1857 के विद्रोह में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह किया।
  - **3 जुलाई 1857** को अमझेरा के पास **भोपावर छावनी** पर आक्रमण कर **कैप्टन हचिंसन** को भगाया एवं अस्त्र शस्त्रों की लूट की।
  - **अगस्त 1857** में इंदौर के राजा तुकोजीराव होलकर की सहायता से **कैप्टन हचिंसन पुनः भोपावर** पहुंचा।
  - हचिंसन ने बख्तावर सिंह के **दीवान गुलाबराय, भवानीसिंह, मोहनलाल कामदार, चिमनलाल वकील** को गिरफ्तार कर लिया गया।
  - अपने सहयोगियों की गिरफ्तारी से नाखुश होकर **अक्टूबर 1857** को भोपावर छावनी पर पुनः कब्जा किया।
  - **अक्टूबर 1857** में ही इन्हें **मंडलेश्वर छावनी** पर हमला कर **जर्नल क्लार्क** को महू भागने पर विवश किया।
  - अंततः ब्रिटिशर्स से लगातार नाकाम कोशिशों के बाद धोखे से **बख्तावर सिंह** को गिरफ्तार कर लिया गया।
  - **फरवरी 1858** में इन्हें इंदौर के **एमवाय अस्पताल परिसर** में फांसी पर लटका दिया गया।

ठाकुर सरजू प्रसाद

- राजा प्रयागदास के पुत्र जो **1845 में विजयराघवगढ़** के शासक बने।
- 1857 की क्रांति में ब्रिटिशर्स के विरुद्ध भागीदारी की।
- **जनवरी 1858** में ब्रिटिशर्स ने विजयराघवगढ़ पर हमला किया लेकिन सरजू प्रसाद ने अपने सेनापति **शेख सैयद उर्फ बहादुर खां** की सहायता से ब्रिटिशर्स को खदेड़ दिया।
- बाद में ब्रिटिश शासन ने रीवा राज की सेना लेकर वियाराघवगढ़ पर हमला कर **सरजू प्रसाद** को गिरफ्तार किया एवं उन्हें काले पानी की सजा दी।

महादेवी तेली

- मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी
- गांधी जी के आह्वान पर बैतूल एवं होशंगाबाद में लोगों को आंदोलन से जोड़ने का कार्य किया।
- 12 अगस्त 1942 में बैतूल के पट्टन बाजार में पुलिस सैन्य सेवकों की वर्दी उतरवाकर उन्हें खादी पहनने हेतु विवश किया एवं इसी क्रम में हुई गोलीबारी में शहीद हुए।

सआदत खाँ

- **परिचय** = मालवा के पठान एवं होलकर सेना के मुख्य तोपची।
- **योगदान**= 1 जुलाई 1857 को मालवा अंचल में 1857 की क्रांति का बिगुल फूंका।
- **सहयोगी**
  - भागीरथ सिलावट
  - वंश गोपाल
  - मौलवी अब्दुल समद
  - वारिस मोहम्मद खां
- **1 जुलाई** का इन्होंने इंदौर रेसीड़ेंसी में विद्रोह कर ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या की।
- अंग्रेजों ने **1874 में बांसवाड़ा** से गिरफ्तार किया एवं फांसी दे दी।
- MPPSC के सामने इनकी कब्र है।

गुलाब सिंह

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- विंध्य सपूत के नाम से प्रसिद्ध रीवा के स्वतंत्रता सेनानी।
- **महाकौशल क्षेत्र में** 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी की।
- **14 अगस्त 1942** को जबलपुर में पुलिस गोलीबारी में शहीद हुए।

शुजात खां

- ये स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे।
- **1857** के विद्रोह के समय सीहोर के आसपास के क्षेत्रों में नेतृत्व किया एवं सरकारी खजाने की लूटपाट की।
- ब्रिटिशर्स द्वारा गिरफ्तार कर उम्र कैद की सजा दी गई।

आदिल मोहम्मद खान

- खिज्र खां के पुत्र एवं फाजिल मोहम्मद खान के भाई ।
- **योगदान** =1857 में ब्रिटिशर्स से संघर्ष
- बंहोरी की लड़ाई में भागीदारी की।
- ब्रिटिश द्वारा गिरफ्तार कर कालेपानी की सजा दी गई।

फाजिल मोहम्मद खान

- ये भोपाल के अंबापानी के जागीरदार थे।
- इनके भाई आदिल मोहम्मद खां थे।
- 1857 की क्रांति के समय भोपाल एवं आस–पास के क्षेत्रों में ब्रिटिशर्स शासन के विरुद्ध संघर्ष किया।
- ब्रिटिशर्स द्वारा गिरफ्तार कर कालापानी की सजा दे दी गई।

नारायण दास खरे

- ये मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानी थे।
- **क्षेत्र** = टीकमगढ़
- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी की।

चंद्रशेखर आजाद

- **परिचय** = मध्य प्रदेश के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी
- **जन्म** = 23 जुलाई 1906
- **जन्म स्थान** = भाबरा/चंद्रशेखर आजाद नगर (अलीराजपुर)
- **पिता** = सीताराम तिवारी
- **माता** = जगरानी देवी
- **उपनाम** = क्विकसिल्वर, पंडित जी, बलराम आजाद, शेर ए हिंदुस्तान।
- **योगदान**
  - असहयोग आंदोलन में भागीदारी की।
  - **9 अगस्त 1925** को **काकोरी ट्रेन डकैती** को अंजाम दिया।
  - हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की।
  - **हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन** के संस्थापक सदस्य रहे।
  - **धीमरपुरा (ओरछा)** में रहकर गुप्त रूप से क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन किया।
  - **सांडर्स की हत्या** की एवं लाला लाजपत राय की मौत का बदला लिया
- **शहीद** = **27 फरवरी 1931** को इलाहाबाद के **अल्फ्रेड पार्क** में पुलिस से मुठभेड़ हुई एवं अंतिम गोली को अपनी कनपटी पर मारकर स्वयं को आजादी की बलिवेदी पर न्यौछावर कर दिया।

उदय चंद्र जैन

- **मंडला क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानी**
- **15 अगस्त 1942 को निकाले जा रहे जुलूस पर पुलिस गोलीबारी में शहीद हो गये।**

लालश्याम शाह

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

- मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी।
- इन्होंने ठाकुर **रणमत सिंह** के साथ मिलकर चंदिया, इलाहाबाद, कटनी आदि क्षेत्रों में ब्रिटिशर्स से संघर्ष किया।

फरजंद अली

- मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी।
- इन्होंने **अजयगढ़ क्षेत्र (पन्ना)** में 1857 की क्रांति को नेतृत्व प्रदान किया।

भाई अब्दुल गनी

- सागर के खुरई में जन्मे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी।
- इन्होंने असहयोग आंदोलन, रतौना सत्याग्रह, झण्डा सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की।

दीपचंद्र गोठी

- ये महान देशभक्त, समाजसेवी, कुशल वक्ता एवं शिक्षा प्रेमी थे।
- इन्होंने 1930 में घोड़ाड़ोंगरी जंगल सत्याग्रह में भागीदारी की फलतः अंग्रेजों द्वारा इन्हें गिरफ्तार कर सजा दी गई।

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान

क्रमांक	महिला	योगदान
1.	रानी लक्ष्मीबाई	1857 की क्रांति के समय ग्वालियर एवं आस.पास के क्षेत्रों में ब्रिटिशर्स के विरूद्ध भागीदारी की।
2.	झलकारीबाई	रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर ब्रिटिशर्स के विरोध में भागीदारी की।
3.	रानी अवंती बाई	इन्होंने रामगढ़ क्षेत्र में 1857 की क्रांति को नेतृत्व प्रदान किया।
4.	गिरधारी बाई	रानी अवंतीबाई के साथ मिलकर ब्रिटिशर्स के विरोध में भागीदारी की।
5.	सुभद्रा कुमारी चौहान	इन्होंने असहयोग आंदोलन, झण्डा सत्याग्रह एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन में भागीदारी की।
6.	दुर्गाबाई जोशी	सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रूप से भागीदारी की।
7.	रानी फूलकुंवर सिंह	गोंड शासक राजा शंकरशाह की पत्नि जिन्होंने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के विरूद्ध भागीदारी की।
8.	श्रीमती काशीदेवी	इन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रूप से भागीदारी की।
9.	श्रीमती सुखरानी (सहोद्राबाई)	सागर में जन्मी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन एवं गोवा मुक्ति आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की
10.	श्रीमती दुर्गादेवी	सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी की। साथ ही 1931 में रतलाम में स्त्री सेवा दल की स्थापना में अहम भूमिका निभाई।
11.	श्रीमती इंदिरा तिवारी	1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जबलपुर क्षेत्र में भागीदारी की।
12.	कस्तूरीबाई उपाध्याय	माखनलाल चतुर्वेदी की बहन जिन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भागीदारी की।
13.	फातिमा बेग	1942 में इंदौर में भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी की।
14.	राधा बाई	1942 में में भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी की।
15.	रैना बाई, बैमाबाई, गुड्डो बाई	1930 के टुरिया जंगल सत्याग्रह में हुई पुलिस गोलीबारी में शहीद।

l Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428

समाचार पत्र समसामयिक समाज का दर्पण होता है एवं इन्हीं समाचार पत्रों ने गुलामी के खिलाफ जनमानस में स्वतंत्रता हेतु जान फूंकी। मध्यप्रदेश के प्रमुख समाचार पत्र निम्न है–

- **भोपाल** = साप्ताहिक आवाज, सुबह वतन
- **जबलपुर** = लोकमत, सरस्वती विलास
- **हरदा** = न्याय सुधा
- **इंदौर** = प्रजामंडल पत्रिका
- **खंडवा** = कर्मवीर, अंकुश, सुबोध सिंधु

VIDYA ICS

Add : 7 Sai Tower, Near Kalyan Hospital Laxmibai Colony, Padav Gwalior M.P. 474002
Contact No. 9425744877, 9425404428